राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

SM

स्वर्णिम मुंबई

अगस्त - 2024

मूल्य ₹ 50/-

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

कांवड़ यात्रा :
केसरिया रंगों में रंगी देवभूमि...

पेरिस ओलंपिक :
कीट डीम्ड विश्वविद्यालय के १२ खिलाड़ी क्वालीफाई...

जल है।
तो कल है।
पृथ्वी के सतह पर दो-तिहई
जल है, लेकिन 0.002% ही
ताजा जल है पृथ्वी पर।
ताजा जल
अपशिष्ट
ना करें।

Save Water !

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

• वर्ष : 9 • अंकः 05 • मुंबई • अगस्त -2024

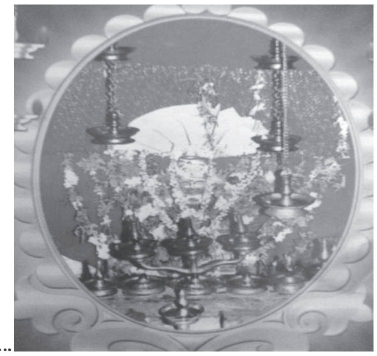

मुद्रक-प्रकाशक,संपादक

नटराजन बालसुब्रमणियम

कार्यकारी संपादक

मंगला नटराजन अय्यर

उप संपादक

भाग्यश्री कानडे, तोषिर शुक्ला,
संतोष मिश्रा, जेदवी आनंद

ब्यूरो चीफ

ओडिशाः अशोक पाण्डेय
उत्तर प्रदेशः विजय दूबे
पटनाः राय यशेन्द्र प्रसाद

टंकन व पृष्ठ सज्जा

ज्योति पुजारी, सोमेश

मार्केटिंग मैनेजमेंट

राजेश अय्यर,शैफाली,

संपादकीय कार्यालय

Add: Tirupati Ashish CHS., A-102, A-1 Wing , Near Shahad Station , Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
mangsom@rediffmail.com
Website: swarnimumbai.com

मालिक, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक : बी. नटराजन द्वारा तिरुपति को. ऑप, हॉसिंग सोसायटी, ए-१ विंग १०२, नियर शहाड स्टेशन, कल्याण (वेस्ट)-४२११०३, जिलाः ठाणे, महाराष्ट्र से प्रकाशित व *महेश प्रिन्टर्स, बिरला कॉलेज, कल्याण से मुद्रित।*

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

सभी विवादों का निपटारा मुंबई न्यायालय होगा।

इस अंक में...

महाराष्ट्र में बारिश ने बरपाया कहर...	05
बजट २०२४-२५	06
कांवड़ यात्राः देवभूमि केसरिया रंगों में रंगी...	12
देश-दुनिया	18
पकवान	20
राशिफल	24
नीलगिरी की पहाडि़यों में बसा कुन्नूर...	26
सिनेमा	29
पेरिस ओलंपिक : कीट डीम्ड विश्वविद्यालय के १२ खिलाड़ी क्वालीफाई...	30
ओडिशा हलचल	32
विविधा	34
स्मार्टफोन की लत में फंसे बच्चे...	37
ताई ..	40
परछाइयाँ	46
ककड़ी की खेती ...	56

सुविचारः

शांति की इच्छा हो तो,पहले इच्छा को शांत करो , क्योंकि इच्छा वो बला है, जो पूरी ना हो तो क्रोध बढ़ता है और अगर पूरी हो जाए तो लोभ बढ़ता है .....।।

आवारा कुत्तों की समस्या

तुर्की में आवारा कुत्तों की संख्या ४० लाख तक पहुंच गई है। मंगल वार को देश ने लाखों आवारा कुत्तों की समस्या को हल करने के उद्देश्य से एक विवादास्पद विधेयक पारित किया। विधेयक में कुत्तों को मारने का भी निर्देश दिया गया है। पिछले कुछ हफ्तों से, कानून के खिलाफ बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन हो रहे हैं। विरोध प्रदर्शन के दौरान देश भर की पुलिस प्रदर्शनकारियों पर नकेल कस रही है। लेकिन प्रदर्शनकारी अपने रुख पर अड़े हुए हैं। आप उन्हें मार नहीं सकते और वे कानून वापस लेने की मांग कर रहे हैं। पशु प्रेमियों और अधिवक्ताओं को डर है कि कई कुत्तों को मार दिया जाएगा या एकांत स्थानों पर ले जाया जाएगा। लेकिन इस कठोर कार्रवाई का कारण क्या है? क्या वास्तव में कुत्तों का वध किया जाएगा? वास्तव में यह मामला क्या है? हम इसके बारे में और जानेंगे। यह बिल तुर्की के राष्ट्रपति रेसेप तईप एर्दोगन की सत्तारूढ़ एके पार्टी द्वारा प्रस्तावित किया गया था। उन्होंने सांसदों से कहा, 'तुर्की में आवारा कुत्तों की समस्या है, भले ही कुछ लोग इसे अनदेखा कर रहे हैं। एसोसिएटेड प्रेस के अनुसार, तुर्की की ग्रैंड नेशनल असेंबली के प्रतिनिधियों ने रात भर चर्चा के बाद कानून को मंजूरी दे दी। सरकार ने जोर देकर कहा कि कानून गर्मियों की छुट्टियों से पहले पारित किया जाए। बिल के पक्ष में २७५ वोट पड़े जबकि विरोध में २२५ वोट पड़े। पूर्ण विधानसभा का अंतिम मतदान आगामी दिनों में होगा।

नए नियमों के अनुसार, नगर निगमों को आवारा कुत्तों को इकट्ठा करना होगा और उन्हें आश्रय स्थलों में रखना होगा। उन्हें पितृत्व देने से पहल नसबंदी और टीकाकरण भी कराना होगा। कानून के अनुसार, कुत्ते जो बीमार हैं, दर्द में हैं , इसमें उन कुत्तों को मारने का भी निर्देश दिया गया है जो मानव स्वास्थ्य को खतरे में डाल सकते हैं। रॉयटर्स के अनुसार, कानून के लिए सभी नगर पालिकाओं को पशु पुनर्वास सेवाओं और आश्रयों के निर्माण पर अपने वार्षिक बजट का कम से कम ०.३ प्रतिशत खर्च करने की आवश्यकता होती है। उन्हें इसका पालन करने के लिए २०२८ तक का समय दिया गया है।

यहां तक कि पालतू जानवरों को छोड़ने वालों पर भी लाखों रुपये का जुर्माना लगाया जाएगा विशेष रूप से, महापौर को आवारा कुत्तों को नियंत्रित करने के अपने कर्तव्यों का पालन करने में विफल रहने के लिए छह महीने से दो साल की जेल का सामना करना पड़ता है। पालतू जानवरों को छोड़ने वालों पर अब तक २,००० लीरा (५,०२३) का जुर्माना लगाया जाता था, जिसे अब बढ़ाकर ६०,००० लीरा (१,५०,६९६) कर दिया गया है। विपक्ष और पशु प्रेमियों ने जहां इस कानून का विरोध किया है, वहीं कई नेताओं ने इस कदम का स्वागत किया है। एर्दोगन की जस्टिस एंड डेवलपमेंट पार्टी (AKP) के अली ओज़काया ने बिल को 'राष्ट्र की मांग' के रूप में वर्णित किया। कृषि और ग्रामीण मामलों के मंत्री इब्राहिम युमाकली ने एक साक्षात्कार में हेबरतुर्क टेलीविजन को बताया, 'यह नरसंहार कानून नहीं है।

एर्दोगन सरकार का अनुमान है कि तुर्की की सड़कों और ग्रामीण इलाकों में क़रीब ४० लाख आवारा कुत्ते घूम रहे हैं. हालांकि इनमें से कई कुत्ते प्रकृति में शांत हैं, कई कुत्तों ने इस्तांबुल और अन्य जगहों पर कई लोगों पर हमला किया है। एर्दोगन ने कहा कि आवारा कुत्ते 'बच्चों, वयस्कों, बुजुर्गों और अन्य जानवरों पर हमला करते हैं। वे भेड़ और बकरियों के झुंड पर भी हमला करते हैं। वे दुर्घटनाओं का कारण बनते हैं। बिल के अनुसार, वर्तमान में देश में ३२२ पशु आश्रय हैं; इसमें १०५,००० कुत्तों को रखने की क्षमता है। हालांकि, आवारा कुत्तों की संख्या को देखते हुए, उन्हें आश्रयों में रखना संभव नहीं है। २०२२ के बाद से, कुत्ते के हमलों या कुत्ते से संबंधित दुर्घटनाओं से कम से कम ७५ लोग मारे गए हैं, उनमें से ४४ बच्चे हैं, मूरत पिनार के अनुसार, एक संगठन के नेता जो आवारा कुत्तों से जनता की रक्षा करते हैं। २०२२ में, उनकी नौ वर्षीय बेटी, महारा की दो आक्रामक कुत्तों से खुद को बचाते हुए मृत्यु हो गई, एपी ने बताया। एडम कोस्कुन ने कहा कि उनके पोते को एक आवारा कुत्ते ने काट लिया था और उन्होंने फैसले का स्वागत किया। रॉयटर्स के अनुसार, तुर्की शहरों और कस्बों के निवासी अक्सर सड़क जानवरों की देखभाल करते हैं, उन्हें अस्थायी आश्रय, भोजन और पानी प्रदान करते हैं। एक सर्वेक्षण में पाया गया कि देश की केवल तीन प्रतिशत आबादी ने फैसले का स्वागत किया।

कानून के विरोध में हजारों लोग हफ्तों से सड़कों पर उतर आए हैं। सरकार के फैसले के विरोध में इस्तांबुल के सिशाने स्क्वायर में सैकड़ों लोग जमा हुए। 'आपका नरसंहार कानून हमारे लिए सिर्फ कागज का एक टुकड़ा है। नफरत और शत्रुता नहीं, लेकिन जीवन और एकता की जीत होगी, 'अंकारा में पशु प्रेमियों ने कहा, जिन्होंने नगरपालिका कार्यालय के बाहर विरोध किया। उन्होंने कहा, 'हम सरकार को बार-बार इस कानून को वापस लेने की चेतावनी दे रहे हैं। इस देश के खिलाफ इस तरह का अपराध मत कीजिए। यूरोप भर के शहरों में भी कानून के खिलाफ विरोध प्रदर्शन हुए, चेतावनी दी गई कि कानून पर्यटकों को तुर्की जाने से हतोत्साहित कर सकता है।

विपक्षी सांसदों, पशु वकालत समूहों और अन्य लोगों ने बिल को नरसंहार कानून कहा है। पशु अधिकार कार्यकर्ता चिंतित हैं कि कुछ नगरपालिका कुत्तों को आश्रय देने के लिए संसाधनों को आवंटित करने के बजाय, वे

वे उन्हें मार देंगे क्योंकि वे बीमार हैं। 'तुर्की में कम आश्रय हैं क्योंकि आश्रयों में पर्याप्त जगह नहीं है। इससे उन्हें इन आवारा कुत्तों को मारने का मौका मिलेगा, 'पशु चिकित्सक तुर्कन सिलान ने कहा। सिलान ने कहा कि कुत्तों को अपने आश्रयों और उन्हें इकट्ठा करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले वाहनों के माध्यम से बीमारी फैलाने का खतरा है। उन्होंने कहा, 'आश्रय में प्रवेश करने वाला कोई भी जानवर स्वस्थ नहीं निकलता है। विपक्षी रिपब्लिकन पीपुल्स पार्टी ने कहा कि वह कानून के खिलाफ अदालत में याचिका दायर करेगी। पार्टी नेता ओजगुर ओजेल ने कहा, 'यह विधेयक स्पष्ट रूप से असंवैधानिक है और जीवन के अधिकार की रक्षा नहीं करता है। उन्होंने कहा, 'हम अधिक आश्रयों के निर्माण, टीकाकरण, स्टरलाइज़िंग और गोद लेने के मामले में आवश्यकता से अधिक करने जा रहे हैं। ह्यूमेन सोसाइटी इंटरनेशनल ने एक बयान में कहा कि कानून दीर्घकालिक समाधान प्रदान नहीं करेगा। इस तरह के अल्पकालिक समाधान में, अनगिनत जानवर अनावश्यक रूप से पीड़ित होंगे और अपना जीवन खो देंगे। ■

महाराष्ट्र में बारिश ने बरपाया कहर...

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण वित्तीय वर्ष २०२४-२५ का आम बजट पेश कर रही हैं। बजट को लेकर खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी कहा कि आम बजट अमृतकाल का महत्वपूर्ण बजट है। यह पांच साल के लिए हमारी दिशा तय करने के साथ ही २०४७ तक विकसित भारत की आधारशिला रखेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की सरकार ने अपना ११वां बजट पेश किया। इस दौरान वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कई बड़े एलान किए। उन्होंने देश के अन्नदाताओं को कई सौगातें दीं। मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल का पहला बजट २३ जुलाई को आ गया। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण का यह लगातार सातवां बजट था। आम चुनावों के बाद आए इस बजट में सरकार की घोषणाओं पर सबकी नजर ठिकी हुई थीं।

बजट 2024

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की सरकार ने अपना ११वां बजट पेश किया। इस दौरान वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कई बड़े एलान किए। उन्होंने देश के अन्नदाताओं को कई सौगातें दीं। मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल का पहला बजट २३ जुलाई को आ गया। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण का यह लगातार सातवां बजट था। आम चुनावों के बाद आए इस बजट में सरकार की घोषणाओं पर सबकी नजर ठिकी हुई थीं। ऐसे में किसानों को भी इस बजट से काफी उम्मीदें थीं और सरकार ने उनके लिए भी कई अहम एलान भी किए। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण वित्तीय वर्ष २०२४-२५ का आम बजट पेश कर रही हैं। बजट को लेकर खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी कहा कि आम बजट अमृतकाल का महत्वपूर्ण बजट है। यह पांच साल के लिए हमारी दिशा तय करने के साथ ही २०४७ तक विकसित भारत की आधारशिला रखेगा।

एक करोड़ युवाओं को अगले पांच साल में टॉप-५०० कंपनियों में इंटर्नशिप का मौका

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने अपने बजट भाषण में कहा कि 'सरकार एक करोड़ युवाओं को अगले पांच साल में टॉप-५०० कंपनियों में इंटर्नशिप का मौका देगी। यह इंटर्नशिप १२ महीने की होगी। इसमें युवाओं को कारोबार के वास्तविक माहौल को जानने और अलग-अलग पेशे की चुनौतियों से रूबरू होने का मौका मिलेगा। इसके तहत युवाओं को हर महीने पांच हजार रुपये का भत्ता भी दिया जाएगा। यही नहीं, उन्हें एकमुश्त मदद के रूप में छह हजार रुपये दिए जाएंगे। कंपनियों को अपने कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के तहत प्रशिक्षण का खर्च और इंटर्नशिप की १० फीसदी लागत को वहन करना होगा।'

Budget LIVE: आंध्र प्रदेश को बजट में क्या

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने आंध्र प्रदेश के लिए बजट में एलान करते हुए कहा कि 'सरकार का आंध्र प्रदेश पुनर्गठन अधिनियम की प्रतिबद्धताओं को पूरा करने के लिए समन्वित प्रयास किया। बहुपक्षीय विकास एजेंसियों के माध्यम से आंध्र प्रदेश को वित्तीय सहायता की सुविधा प्रदान करेंगे। चालू वित्त वर्ष में १५ हजार करोड़ और आगामी वर्षों में अतिरिक्त धनराशि की व्यवस्था की जाएगी। पोलावरम सिंचाई परियोजना को जल्दी पूरा कराने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध। इससे हमारे देश को खाद्य सुरक्षा में भी सहायता मिलेगी। विशाखापत्तनम-चेन्नई औद्योगिक गलियारे में कोप्पार्थी क्षेत्र में बुनियादी ढांचे पर जोर। आर्थिक विकास के लिए पूंजीगत निवेश के लिए एक वर्ष तक अतिरिक्त आवंटन। अधिनियम में रायल सीमा, प्रकाशम और उत्तर तटी आंध्र प्रदेश के पिछड़े क्षेत्रों के लिए अनुदान।'

Union Budget २०२४: पहली बार नौकरी पाने वालों को तोहफा

सरकार की नौ प्राथमिकताओं में से एक है रोजगार और कौशल विकास। इसके तहत पहली बार नौकरी करने वालों को बड़ी मदद मिलने जा रही है। फॉर्मल सेक्टर में पहली बार नौकरी की शुरुआत करने वाल ों को एक महीने का वेतन दिया जाएगा। यह वेतन डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर के जरिए तीन किस्तों में जारी होगा। इसकी अधिकतम राशि १५ हजार रुपये होगी। ईपीएफओ में पंजीकृत लोगों को यह मदद मिल ेगी। योग्यता सीमा एक लाख रुपये प्रति माह होगी। इससे २.१० करोड़ युवाओं को फायदा होगा। सरकार रोजगार में प्रवेश करने वाले ३० लाख युवाओं को भी फायदा देने जा रही है। यह फायदा भविष्य निधि यानी पीएफ में एक महीने के योगदान के रूप में होगा।

वित्त मंत्री ने कहा 'हमारी सरकार प्रधानमंत्री पैकेज के हिस्से के रूप में रोजगार से जुड़ी प्रोत्साहन योजनाओं के लिए तीन योजनाएं लागू करेगी। ये ईपीएफओ में नामांकन पर आधारित होंगी और पहल ी बार काम करने वाले कर्मचारियों की पहचान और कर्मचारियों और नियोक्ताओं को सहायता पर ध्यान केंद्रित करेंगी।'

Union Budget 2024: बिहार के लिए किए गए कई बड़े एलान

वित्त मंत्री ने बजट में बिहार की सड़क-संपर्क परियोजनाओं के लिए २६ हजार करोड़ रुपये देने का एलान। इससे पटना-पूर्णिया एक्सप्रेसवे, बक्सर-भागल पुर एक्सप्रेसवे का विकास होगा। बोधगया, राजगीर, वैशाली और दरभंगा सड़क संपर्क परियोजनाओं का भी विकास होगा। बक्सर में गंगा नदी पर दो लेना वाला एक अतिरिक्त पुल बनाने में भी मदद होगी। बिहार में २१ हजार ४०० करोड़ रुपये की लागत से विद्युत परियोजनाएं शुरू की जाएंगी। इसमें पिरपैंती में २४०० मेगावॉट के एक नए संयंत्र की स्थापना भी शामिल है। बिहार में नए एयरपोर्ट, मेडिकल कॉलेजों और खेलकूद की अवसंरचना का भी निर्माण होगा। पूंजीगत निवेशों में सहायता के लिए अतिरिक्त आवंटन उपलब्ध कराया जाएगा। बिहार सरकार के बहुपक्षीय विकास बैंकों से बाह्य सहायता के अनुरोध पर तेजी से कार्यवाही होगी।

Budget Live: शिक्षा, रोजगार और कौशल के लिए १.४८ लाख करोड़ रुपये का प्रावधान

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा, 'मुझे २ ल ाख करोड़ रुपये के केंद्रीय परिव्यय के साथ ५ वर्षों में ४.१ करोड़ युवाओं के लिए रोजगार, कौशल और अन्य अवसरों की सुविधा के लिए ५ योजनाओं और पहलों के प्रधानमंत्री पैकेज की घोषणा करते हुए खुशी हो रही है। इस वर्ष हमने शिक्षा, रोजगार और कौशल के लिए १.४८ लाख करोड़ रुपये का प्रावधान किया है।'

Union Budget: शिक्षा ऋण के लिए १० ल ाख रुपये तक का मिलेगा लोन

अंतरिम बजट में क्या एलान किए गए थे

१. अंतरिम बजट में वित्त मंत्री ने फसल कटाई के बाद की गतिविधियों में निजी और सार्वजनिक निवेश को बढ़ावा देने का एलान किया था।

२. इसके साथ ही सभी कृषि-जलवायु क्षेत्रों में नैनो-डीएपी के इस्तेमाल के विस्तार की बात कही गई थी।

३. तिलहनों के लिए आत्मनिर्भरता हासिल करने के लिए 'आत्मनिर्भर तिलहन अभियान' शुरू करने का एलान किया गया था।

४. डेयरी विकास के लिए व्यापक कार्यक्रम बनाने की बात भी वित्त मंत्री ने की थी।

५. जलीय कृषि उत्पादकता बढ़ाने, निर्यात दोगुना करने और अधिक रोजगार के अवसर पैदा करने के लिए प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना के कार्यान्वयन को आगे बढ़ाने की चर्चा की गई।

६. मत्स्य पालन के क्षेत्र के लिए पांच एकीकृत एक्वा पार्क स्थापित करने का भी एलान वित्त मंत्री ने किया था।

७. २०२३ के बजट में किसानों और ग्रामीणों के लिए क्या था?

८. सरकार ने पिछले बजट में किसान वर्ग के लिए एग्रीकल्चर एक्सीलेटर फंड बनाने का एलान किया था। जिसके ग्रामीण इलाकों में कृषि आधारित स्टार्टअप को बढ़ावा दिया जा रहा है।

९. भारत को श्री अन्न का ग्लोबल हब बनाने के लिए इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मिलेट रिसर्च, हैदराबाद में रिसर्च को बढ़ावा दिया जा रहा है।

१०. पशुपालन, डेयरी और मतस्य पालन के लिए २० लाख करोड़ रुपये के कृषि क्रेडिट का एलान किया गया था।

११. साथ ही पीएम मतस्य संपदा योजना के तहत छह हजार करोड़ रुपये के निवेश का लक्ष्य तय किया गया था। इसमें मछुआरों, मछली वेंडर्स और मछली पालन से जुड़े छोटे और मध्यम बिजनेस और सप्लाई चेन को बढ़ाने में मदद की जाएगी।

१२. पीएम किसान सम्मान निधि योजना के तहत

देश के ११.४ करोड़ किसानों के खातों में २.२ लाख करोड़ रुपये जमा किए गए थे।

१३. कृषि तकनीक आधारित और कृषि स्टार्ट अप को बढ़ावा देने और विकास के लिए डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर फॉर एग्रीकल्चर का गठन किया गया।

१४. देश में ६३ हजार प्राइमरी एग्रीकल्चरल क्रेडिट सोसाइटीज को २५१६ करोड़ रुपये से कंप्यूटराइज्ड किया जा रहा है।

१५. किसानों के लिए बड़े पैमाने पर विकेंद्रीकृत स्टोरेज क्षमता का निर्माण किया जा रहा है।

१६. गोबरधन योजना के तहत ५०० नए वेस्ट टु वेल्थ बायोगैस प्लांट बनाने का एलान किया गया था। इसके लिए १० हजार करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया था।

१७. मनरेगा योजना के तहत २५ हजार करोड़ रुपये के बजट का एलान किया गया। साथ ही सक्षम आंगनवाड़ी और पोषण, नेशनल हेल्थ प्रोग्राम और समग्र शिक्षा योजना और समर्थ योजना और स्वच्छ भारत मिशन के तहत ४५ हजार करोड़ रुपये का आवंटन किया गया था।

१८. एक करोड़ किसानों को अगले तीन सालों में जैविक खेती अपनाने के लिए १० हजार बायो इनपुट रिसोर्स सेंटर बनाने का एलान हुआ था।

१९. क्या किसानों को सालाना छह हजार रुपये की जगह मिलेंगे आठ हजार?

२०. बजट में केंद्र सरकार पीएम किसान सम्मान निधि योजना से जुड़ा एक बड़ा एलान कर सकती है। पीएम किसान सम्मान निधि योजना के अंतर्गत देश के गरीब किसानों को हर साल छह हजार रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है। उम्मीद है कि पीएम किसान सम्मान निधि योजना के अंतर्गत मिलने वाली सालाना छह हजार रुपये की आर्थिक सहायता को बढ़ाकर आठ हजार रुपये किया जा सकता है। आज के समय जिस तेजी से महंगाई की रफ़्तार बढ़ रही है। ऐसे में सरकार के इस कदम से देश के करोड़ों किसानों को बड़ी राहत मिल सकती है।

बजट 2024: में शिक्षा-रोजगार...

मोदी सरकार ३.० में वित्त मंत्री निर्मला ने केंद्र सरकार के तीसरे कार्यकाल का पहला बजट पेश किया। बजट पेश करने के दौरान वित्त मंत्री ने कहा कि जैसा कि सरकार ने अंतरिम बजट में अपने लक्ष्य निर्धारित किए थे, वह उन लक्ष्यों को हासिल करने के लिए प्रतिबद्ध है। भाषण में सीतारमण ने कहा कि सरकार का फोकस मुख्य रूप से गरीब, महिला, युवा और किसानों पर है। वित्त मंत्री ने कहा कि सरकार एम्पलॉइमेंट एंड स्किलिंग, इनोवेशन रिसर्च एवं डेवेलपमेंट पर विशेष ध्यान दे रही है।

प्रमुख रोजगार एवं कौशल योजनाएं

वित्त मंत्री ने एक बड़े पीएम पैकेज की घोषणा की जिसमें रोजगार और कौशल को बढ़ावा देने के उद्देश्य से पांच कार्यक्रम शामिल हैं, जिसमें कुल २ लाख करोड़ रुपये का आवंटन है। इनमें १.४८ लाख करोड़ रुपये विशेष रूप से शिक्षा, रोजगार और कौशल के लिए आवंटित किए गए हैं।

पांच साल में २० लाख युवाओं को कुशल बनाया जाएगा

कौशल विकास को बढ़ाने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डालते हुए, सीतारमण ने खुलासा किया कि नई पहल पांच साल की अवधि में २० लाख युवाओं को कौशल प्रदान करेगी। इस कदम से देश के कार्यबल में महत्वपूर्ण योगदान मिलने की उम्मीद है, जिससे युवाओं को विभिन्न उद्योगों में आगे बढ़ने के लिए आवश्यक कौशल मिलेगा।

१००० आईटीआई को हब और स्पोक मॉडल में किया जाएगा अपग्रेड

वित्त मंत्री ने अपने भाषण में कहा कि इस बार सरकार का मुख्य फोकस युवाओं को स्किल्ड करने और नवाचार और विकास पर है। लोकसभा में वित्त मंत्री ने कहा कि युवाओं में कौशल को विकसित करने के लिए १,००० आईटीआई को हब और स्पोक मॉडल में अपग्रेड किया जाएगा।

छात्रों को १० लाख तक की वित्तिय सहायता

वित्त मंत्री ने कहा कि ७.५ लाख रुपये तक के ऋण की सुविधा के लिए मॉडल स्किलिंग लोन स्कीम को संशोधित किया जाएगा। इसके साथ ही सरकार घरेलू संस्थानों में उच्च शिक्षा के लिए छात्रों को १० लाख रुपये तक के ऋण के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करेगी।

बजट 2024: में कृषि क्षेत्र ...

देश की वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने मंगल वार को संसद में केंद्रीय बजट २०२४ को पेश किया। इस साल के बजट में किसानों का खास ध्यान रखा है और किसानों की कमाई में इजाफा करने के लिए कई कदम उठाए गए। बजट में किसानों और कृषि क्षेत्र के १.५२ लाख करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। इस फंड से कृषि और इससे जुड़े क्षेत्रों के लिए योजनाएं बनाई जाएंगी। इस दौरान निर्मला सीतारमण के पिटारे से किसानों के लिए कई योजनाएं निकली हैं। बजट २०२४ में केंद्रीय सरकार का फोकस कृषि के बुनियादी ढांचे को मजबूत करने, कृषि में तकनीक को बढ़ावा देने और प्राकृतिक खेती की ओर किसानों का रूझान बढ़ाने पर रहा है। हालांकि, बजट में प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि की राशि में बढ़ोतरी और एमएसपी को लेकर कोई घोषणा नहीं की गई हैं।

किसानों के लिए खुला सरकार का पिटारा

डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना (डीपीआई)ः देश के ४०० जिलों में डीपीआई का उपयोग करते हुए खरीफ फसलों का डिजिटल सर्वेक्षण किया जाएगा

पांच राज्यों में जन समर्थ आधारित किसान क्रेडिट कार्ड जारी किए जाएंगे।

झींगा मछली ब्रूडस्टॉक के लिए केन्द्रीकृत प्रजनन केंद्रों का नेटवर्क स्थापित करने हेतु वित्तीय सहयोग उपलब्ध कराया जाएगा।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था की वृद्धि और रोजगार सृजन में तेजी लाने के उद्देश्य से राष्ट्रीय सहयोग नीति तैयार की जाएगी

किसानों के लिए ३२ कृषि और बागवानी में फसलों की १०९ उच्च-पैदावार और जलवायु-अनुकूल किस्में जारी की जाएंगी

देश भर में एक करोड़ किसानों को प्रमाणीकरण और ब्रांडिंग के माध्यम से प्राकृतिक खेती के लिए मजबूत समर्थन

क्रियान्वयन में सहायता के लिए १० हजार आवश्यकता आधारित जैव-इनपुट संसाधन केंद्र स्थापित किए जाएंगे

बजट की मुख्य बातें हैं-

कैंसर दवा, सोना-चांदी, प्लेटिनम, मोबाइल फोन, मोबाइल चार्जर, बिजली के तार, एक्सरे मशीन, सोलर सेट्स, लेदर और सीफूड्स। मोबाइल और चार्जर पर कस्टम ड्यूटी घटकर १५ प्रतिशत हुई। सोना और चांदी के गहनों पर कस्टम्स ड्यूटी घटकर ६ प्रतिशत हुई। सैलरीड के लिएः नई टैक्स रिजीम में ७.७५ लाख तक की इनकम टैक्स फ्री, १७.५ हजार का फायदा। फैमिली पेंशन पर टैक्स छूट १५ हजार से बढ़कर २५ हजार हुई। पहली नौकरी वालों के लिएः १ लाख रुपए से कम सैलरी होने पर, ईपीएफओ में पहली बार रजिस्टर करने वाले लोगों को १५ हजार रुपए की मदद तीन किश्तों में मिलेगी।

एजुकेशन लोन के लिएः जिन्हें सरकारी योजनाओं के तहत कोई फायदा नहीं मिल रहा है, उन्हें देशभर के संस्थानों में एडमिशन के लिए लोन मिलेगा। लोन का ३ परसेंट तक पैसा सरकार देगी। इसके लिए ई वाउचर्स लाए जाएंगे, जो हर साल एक लाख स्टूडेंट्स को मिलेंगे। बिहार और आंध्र प्रदेश के लिएः बिहार को ५८.९ हजार करोड़ रुपए और आंध्र प्रदेश को १५ हजार करोड़ की मदद। बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, ओडिशा और आंध्र प्रदेश के लिए इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट के लिए विशेष स्कीम। किसान के लिएः ६ करोड़ किसानों की जानकारी लैंड रजिस्ट्री पर लाई जाएगी। ५ राज्यों में नए किसान क्रेडिट कार्ड जारी किए जाएंगे। युवाओं के लिएः मुद्रा लोन की रकम १० लाख से बढ़ाकर २० लाख रुपए। ५०० टॉप कंपनियों में १ करोड़ युवाओं को इंटर्नशिप का वादा। महिलाओं और लड़कियों के लिएः महिलाओं और लड़कियों के लिए लाभ पहुंचाने वाली योजनाओं के लिए ३ लाख करोड़ रुपए का प्रावधान। सोलर एनर्जी को बढ़ावा देने के लिएः सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना के तहत १ करोड़ घरों को ३०० यूनिट तक हर महीने बिजली फ्री। सरकार ने नए टैक्स स्लैब में भी बदलाव किये हैं। अब ३ लाख तक की सैलरी पर कोई टैक्स नहीं देना होगा। बजट में केंद्रीय वित्त मंत्री ने किसानों पर विशेष फोकस किया है। वित्त मंत्री ने देश के ४०० जिलों में डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना (डीपीआई) का उपयोग करते हुए खरीफ फसलों का डिजिटल सर्वेक्षण करने का ऐलान किया है। उन्होंने कहा कि पांच राज्यों में जनसमर्थन आधारित किसान क्रेडिट कार्ड जारी किए जाएंगे। इसके साथ ही झींगा, मछली, ब्रूडस्टॉक के लिए केंद्रीयकृत प्रजनन केंद्रों का नेटवर्क स्थापित करने हेतु वित्तीय सहयोग उपलब्ध करने का भी ऐलान किया है। वहीं, ग्रामीण अर्थव्यवस्था की वृद्धि और रोजगार सृजन में तेजी लाने के उद्देश्य से राष्ट्रीय सहयोग नीति तैयार करने की घोषणा की। इनमें खेती में उत्पादकता, रोजगार और क्षमता विकास, समग्र मानव संसाधन विकास, सामाजिक न्याय, विनिर्माण और सेवाएं, शहरी विकास, ऊर्जा सुरक्षा, अधोसंरचना, नवाचार, शोध और विकास, अगली पीढ़ी के सुधार सहित अन्य कारकों को प्राथमिकता देने की बात कही गई है। बजट पेश करते हुए वित मंत्री ने कहा कि भारत की जनता ने प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व वाली सरकार में अपना विश्वास जताया है। उन्हें ऐतिहासिक तीसरे कार्यकाल के लिए चुना है।

चुनावी राज्यों के लिए बजट में क्या रहा?

इस साल के अंत में तीन राज्यों और एक केंद्र शासित प्रदेश में विधानसभा चुनाव होने हैं। ये राज्य हैं महाराष्ट्र, हरियाणा, झारखंड और जम्मू-कश्मीर। अभी महाराष्ट्र और हरियाणा में भाजपा नीत एनडीए की सरकार है जबकि झारखंड में महागठबंधन की सरकार है। वहीं जम्मू-कश्मीर में धारा ३७० के निष्प्रभावी होने के बाद से राष्ट्रपति शासन लागू है।

महाराष्ट्रः वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने मंगल वार को ८३ मिनट का बजट भाषण दिया। इस दौरान महाराष्ट्र का कोई उल्लेख नहीं हुआ। हालांकि, बजट दस्तावेज में राज्य के लिए घोषणाएं की गई हैं। विदर्भ और मराठवाड़ा जिलों और महाराष्ट्र के अन्य लंबे समय से सूखाग्रस्त क्षेत्रों में कृषि संकट को दूर करने के लिए सिंचाई परियोजनाओं के लिए विशेष पैकेज का एलान किया गया है। इन क्षेत्रों के लिए बजट में वित्त वर्ष २०२४-२०२५ के लिए कुल ६०० करोड़ रूपये आवंटित किए हैं।

केंद्र सरकार के पास राज्यों को वितरित करने के लिए केंद्रीय करों और शुल्कों के रूप में ₹१२४७ हजार करोड़ थे। बजट अनुमान २०२४-२५ के तहत केंद्रीय करों और शुल्कों की शुद्ध आय से महाराष्ट्र को कुल ₹७८.७८ हजार करोड़ प्राप्त हुआ है।

झारखंडः वित्त मंत्री ने कहा कि पूर्वोदय के तहत इन राज्यों में मानव संसाधन विकास, अधोसंरचना और आर्थिक विकास के अवसरों के सृजन पर काम किया जाएगा ताकि विकसित भारत में पूर्वी भारत के राज्य इंजन बन सकें। बजट २०२४-२५ में केंद्रीय करों और शुल्कों की शुद्ध आय से झारखंड के हिस्से कुल ₹४१.२४ हजार करोड़ आए हैं। बजट दस्तावेज में नक्सल प्रभावित क्षेत्रों के लिए सड़क विंग के तहत कार्य का उल्लेख किया गया है। यह प्रावधान राष्ट्रीय राजमार्गों के विकास पर व्यय के लिए है। इसमें एक्सप्रेसवे से संबंधित परियोजनाएं और स्वर्णिम चतुर्भुज के भीड़भाड़ वाले हिस्सों को ६ लेन का बनाना और राजमार्गों को २ लेन का बनाना, नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में सड़क संपर्क के विकास के लिए विशेष कार्यक्रम शामिल हैं। नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में झारखंड के भी कई हिस्से शामिल हैं।

हरियाणाः बजट २०२४-२५ में केंद्रीय करों और शुल्कों की शुद्ध आय से राज्य को कुल ₹१३.६३ हजार करोड़ मिले हैं। बजट दस्तावेज में हरियाणा स्थित ग्लोबल सेंटर फॉर न्यूक्लियर एनर्जी पार्टनरशिप (जीसीएनईपी) का जिक्र है। दरअसल, परमाणु ऊर्जा विभाग के सचिवालय के पास देशभर में फैली घटक इकाइयों, सार्वजनिक उपक्रमों और सहायता प्राप्त संस्थाओं के प्रशासन की जिम्मेदारी होती है। ये विभाग की विभिन्न गतिविधियों को अंजाम देती हैं।

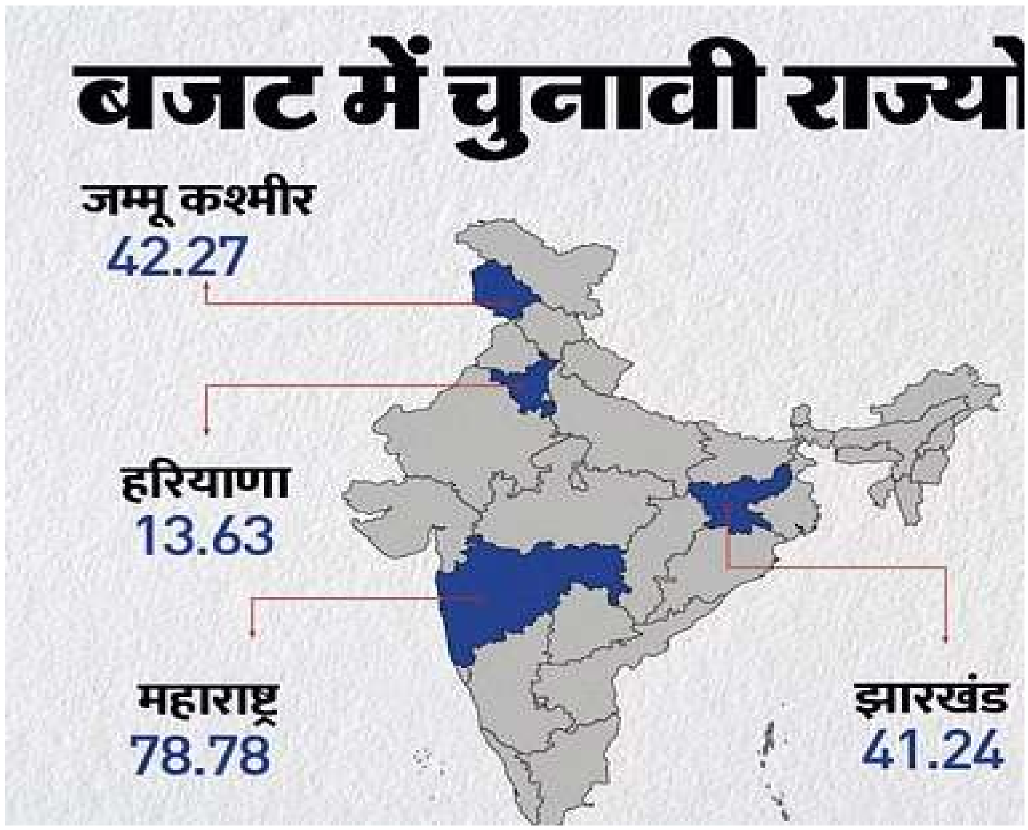

विभाग में छह अनुसंधान एवं विकास इकाइयां हैं, जिनमें हरियाणा का जीसीएनईपी भी शामिल हैं।

दस्तावेज में स्वायत्त संस्थाओं को सहायता का जिक्र है। इस परियोजना के तहत स्वायत्त संस्थाओं को सहायता प्रदान की जाती है जिसमें हरियाणा स्थित राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान भी शामिल है।

जम्मू-कश्मीरः विशेष श्रेणी के राज्यों जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड के लिए पैकेज का एलान किया गया है। यह पैकेज इन राज्यों के लिए औद्योगिक विकास योजनाओं के लिए है। जम्मू-कश्मीर केंद्र शासित प्रदेश के औद्योगिक विकास के लिए ३०० करोड़ के बजट की घोषणा की गई है। केंद्रीय गृह मंत्रालय के तहत जम्मू-कश्मीर को वित्त वर्ष २०२४-२५ के लिए ४२,२७७ करोड़ रुपये मिले हैं।

प्रधानमंत्री बालिका छात्रावास योजना के तहत जम्मू-कश्मीर में बालिका छात्रावासों का निर्माण किया जाएगा। यह योजना जम्मू-कश्मीर के लिए प्रधानमंत्री विकास पैकेज २०१५ में शिक्षा मंत्रालय का घटक है।

राज्य के लिए विशेष छात्रवृत्ति योजना की भी घोषणा की गई है। जम्मू-कश्मीर और हिमाचल प्रदेश में ११ करोड़ रुपये की केंद्रीय क्षेत्र की योजनाएं/परियोजनाएं घोषित की गई हैं। जम्मू-कश्मीर और हिमाचल प्रदेश के दूरदराज के क्षेत्रों में कनेक्टिविटी प्रदान करने के लिए दोनों राज्यों में सब्सिडी वाली हेलीकॉप्टर सेवाओं की घोषणा की गई हैं।

बजट 2024-25: में रक्षा बजट...

वित्तीय वर्ष २०२४-२५ का आम बजट पेश करते हुए वित्त मंत्री ने रक्षा बजट का कुल हिस्सा ६,२१,९४०.८५ करोड़ रुपये दिए जाने का प्रावधान किया है। यह धनराशि २०२४-२५ के कुल वित्त बजट का करीब १२.९० प्रतिशत है।

रक्षा बजट में आवंटित धनराशि को चार भागों में विभक्त किया जाता है। इसमें नागरिक, राजस्व, पूंजीगत खर्च और पेंशन निर्धारित है। नागरिक बजट के हिस्से में २५,९६३ करोड़ रुपये दिए गए हैं जिसमें बॉर्डर रोड आर्गेनाइजेशन, ट्रिब्यूनल सहित सड़क व अन्य विकास कार्य किए जाते हैं। रेवेन्यू बजट के लिए २,८२,७७२ करोड़ रुपये रखे गए हैं। रेवेन्यू बजट से तीनों सेनाओं का वेतन बांटा जाता है जो बजट का बड़ा हिस्सा होता है। इसके अलावा एक्स सर्विसमैन की हेल्थ स्कीम, मेंटिनेंस व रिपेयरिंग का खर्च भी इसी बजट से किया जाता है। इसलिए रेवेन्यू बजट का हिस्सा कुल रक्षा बजट का लगभग ४५ प्रतिशत है। यह पिछले साल के मुकाबले १२,६५२ करोड़ रुपये ज्यादा है।

रक्षा बजट में पूंजीगत व्यय के लिए १,७२,००० करोड़ रुपये अलग रखे हैं, जिनमें नये हथियार, विमान, युद्धपोत और अन्य साजो-सामान की खरीद शामिल है। इसमें पिछले साल के मुकाबले ५.७ प्रतिशत का इजाफा किया गया है। यह धनराशि कुल रक्षा बजट का २७.६ प्रतिशत है। इस धनराशि से एयरक्राफ्ट, एयरोइंजन उपकरण, भारी और मध्यम श्रेणी के सैन्य वाहन, नये आधुनिक हथियार तथा गोला-बारूद खरीदा जाएगा। यही नहीं, अन्य तकनीकी सैन्य उपकरणों की खरीद से सेनाओं को सुसज्जित किया जाएगा। इस साल सेना के लिए स्पेशल रेलवे वैगन खरीदे जाने की योजना है। वायु सेना के लिए आधुनिक लड़ाकू विमानों व नए अन्य उपकरणों के खरीदे जाने की संभावना है। इसी तरह नौसेना को मजबूती प्रदान करने के लिए नए नेवल डॉकयार्ड प्रोजेक्ट शुरू किए जाने की योजना है।

पेंशन के लिए बजट में १,४१,२०५ करोड़ रुपये रखे गए हैं। यह धनराशि कुल रक्षा बजट का २२.७ प्रतिशत है। इस मद में लगभग ३००० करोड़ रुपये की बढ़ोतरी की है। इस बजट में तीनों सेनाओं के सेवानिवृत्त सैनिकों की पेंशन व अन्य मिलने वाले लाभ शामिल होते हैं। इस समय तीनों सेनाओं के सेवानिवृत्त

सैनिकों की संख्या करीब २६ लाख है जिसमें सर्वाधिक जवान थलसेना के हैं। पिछले वर्ष की तुलना में भारत की रक्षा चुनौतियां काफी बढ़ गई हैं। पूर्वी लद्दाख से लेकर अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम में सीमाओं पर चीनी सैन्य अतिक्रमण और रोबोट सेना की तैनाती के प्रयास इसके प्रमुख उदाहरण हैं। लद्दाख में चीन की चुनौती को देखते हुए करीब ५०,००० सैनिकों की तैनाती की गयी है। इसके अलावा वहां टैंकों, विमानों एवं मिसाइलों की तैनाती कर दी गई, जिससे किसी भी युद्ध की स्थिति से निपटा जा सके। ऐसे में और अधिक रक्षा बजट की जरूरत थी।

दूसरी तरफ, पाकिस्तान की तरफ से अघोषित युद्ध जारी है। समुद्र की तरफ से भी भारत को चुनौतियां मिल रही हैं। चीन की समुद्री क्षेत्र में बढ़ती आक्रामकता को देखते हुए भारतीय नौसेना के सामने हिन्द महासागर से लेकर अरब सागर तक चुनौतियां बढ़ी हैं। जिससे निपटने के लिए नौसेना युद्ध समूहों के गठन और नौसेना की एयर विंग को मजबूत करना आवश्यक है। हिन्द महासागर में खतरे देखते हुए तथा पाक व चीन सीमा पर उत्पन्न चुनौतियों के मद्देनजर तीनों सेनाओं के लिए आवंटित धनराशि कम ही कही जाएगी।

सीमा पर तनाव को देखते हुए सैन्य साजो-सामान की विशेष आवश्यकता थी। चीन सीमा के नजदीक आवागमन सुलभ बनाने हेतु सड़कों के विकास के लिए सीमा सड़क संगठन को ६५०० करोड़ रुपये आवंटित किए हैं। इसके अलावा स्टार्टअप, नवाचार और छोटी इकाइयों को तकनीकी मदद के लिए आईडेक्स योजना के तहत ५१८ करोड़ रुपये का आवंटन किया गया है जिससे विकास कार्यों में मदद मिलेगी। रक्षा क्षेत्र में तकनीकी विकास के लिए भी अधिक धन की जरूरत थी। नवीनतम हथियारों से सेनाओं को लैस करना, सैन्य आधुनिकीकरण व नवीनतम युद्ध कला से सेनाओं को सुसज्जित करना हमारी प्राथमिकता हो चुकी है। वहीं साइबर, हाईटेक युद्ध पद्धति एवं नेटवर्क केन्द्रित युद्ध पर अधिक ध्यान देने की जरूरत है।

हमें नये परिवेश को ध्यान में रख परम्परागत लड़ाई के साथ-साथ साइबर युद्धों की भी तैयारियां कर लेनी चाहिए। जो देश इसमें पीछे रह गए वे नुकसान भी उठा सकते हैं क्योंकि हम जिन हथियारों की तैयारी में लगे हैं भविष्य में शायद उनकी जरूरत कम ही पड़े और मिलिट्री ऑपरेशन का रुख नवीन युद्ध प्रणालियों की तरफ बढ़ जाए। रक्षा बजट में इन तैयारियों के लिए बजट तय करना चाहिए था।

कांवड़ यात्रा विवाद व बहस...

पूरी देवभूमि केसरिया रंगों में रंगी

कावंड या कांवड़ यात्रा, २०२४ भगवान शिव के भक्तों की वार्षिक तीर्थ यात्रा है, जो गोमुख या गंगोत्री से शुरू होती है, जहां से भक्त गंगा के पवित्र जल को छोटे बर्तनों में लाते हैं और इसे नीलकंठ तक ले जाते हैं। वहां इसे भगवान शिव को चढ़ाया जाता है। यह यात्रा श्रावण (सावन) के महीने में होती है जो हिंदू कैलेंडर में जुलाई-अगस्त में आती है। यह पवित्र यात्रा शुरुआती दिनों में संतों और पवित्र ऋषियों द्वारा निकाली गई थी, जिसमें बाद में बुजुर्ग लोग भी शामिल हो गए, जो हर साल तीर्थ यात्रा करते थे, लेकिन अब दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, पंजाब, बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश से सैकड़ों और हजारों लोग, जिनमें युवा से लेकर बूढ़े तक, जिनमें महिलाएं और कभी-कभी बच्चे भी शामिल हैं, यात्रा और कांवड़ मेले में भाग लेना शुरू कर दिया है। रास्ते में कांवड़िये एक साथ 'बोल बम, बम बम', 'बम बम भोले या हर हर महादेव' के नारे लगाते हैं।

सावन के माह में शिवभक्तों की कांवड़ यात्रा का लंबा पौराणिक इतिहास रहा है। आस्था के साथ इसका सांप्रदायिक सौहार्द का पक्ष भी सबल रहा है। लेकिन उत्तर प्रदेश सरकार के एक हालिया आदेश से एक अनावश्यक विवाद को बल मिला है। दरअसल, प्रदेश सरकार ने आदेश दिया है कि कांवड़ मार्गों पर सभी खाद्य व पेय पदार्थों की दुकानों तथा होटलों के संचालकों व मालिकों को अपना नाम व पहचान प्रदर्शित करनी होगी। दलील दी गई है कि कांवड़धारियों की आस्था की पवित्रता को बनाये रखने तथा कांवड़ियों की शांतिपूर्ण आवाजाही सुनिश्चित करने के लिये आधिकारिक तौर पर यह कदम उठाया गया है। इसके अलावा मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हलाल-प्रमाणित उत्पाद बेचने वाले विक्रेताओं के खिलाफ कार्रवाई की चेतावनी दी है। इस घटनाक्रम पर प्रतिक्रिया देते हुए विपक्षी दलों के नेताओं व अन्य संप्रदायों के लोगों ने आदेश को अल्पसंख्यकों को अलग-थलग करने की कोशिश बताया है।

दरअसल, एक पखवाड़े से अधिक समय तक चलने वाली कांवड़ यात्रा के दौरान कांवड़ियों और दुकानदारों के बीच अक्सर हिंसा देखने में आती रही है। जिसकी मुख्य वजह यह रही है कि कांवड़ियों और दुकानदारों के बीच मांसाहारी भोजन को लेकर बहस व विवाद होता रहा है। यही वजह है कि अगस्त, २०१८ में पश्चिमी उत्तर प्रदेश और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में कांवड़ यात्रा के दौरान भड़की हिंसा व टकराव में निजी व सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाने की घटनाओं को सुप्रीम कोर्ट ने गंभीरता से लिया था। इतना ही नहीं, वर्ष २०२२ में हरिद्वार में हरियाणा के कांवड़ियों के साथ हुए विवाद में सेना के एक जवान की कथित तौर पर हत्या कर दी गई थी।

निस्संदेह, कांवड़ यात्रा के दौरान विभिन्न प्रकार के टकरावों से बचने के लिये राज्य सरकारों का दायित्व बनता है कि यात्रा मार्ग पर पर्याप्त संख्या पर पुलिसकर्मियों को तैनात करे। ताकि किसी भी प्रकार की हिंसा व गड़बड़ी को टाला जा सके। लेकिन एक बात तय है कि अल्पसंख्यकों द्वारा संचालित दुकानों को चिन्हित करने से न केवल सांप्रदायिक अलगाव को बढ़ावा मिलेगा, इस बात की भी कोई गारंटी नहीं है कि इससे कांवड़ियों व राहगीरों के बीच कोई टकराव नहीं होगा। दूसरी ओर केंद्र में सत्तारूढ़ राजग सरकार में शामिल भाजपा के दो सहयोगियों जनता दल यूनाइटेड तथा लोक जनशक्ति पार्टी ने भी यूपी सरकार के इस आदेश की आलोचना की है। वहीं बसपा सुप्रीमो मायावती ने इस आदेश को असंवैधानिक बताया है।

यह साफ है कि उत्तर प्रदेश में हाल के लोकसभा चुनावों में ध्रुवीकरण की रणनीति भाजपा के लिये लाभदायक साबित नहीं हुई थी। लेकिन पार्टी राज्य में होने वाले विधानसभा उपचुनाव से पहले इसे फिर आजमाने के प्रलोभन से बच नहीं पायी है। दरअसल, चुनावी उलटफेर के बाद अपेक्षित चुनाव परिणाम हासिल न कर पाने वाली भाजपा अपने निराश बहुसंख्यक मतदाताओं को फिर अपने पाले में करने के लिये लालायित नजर आ रही है। लेकिन राजनीतिक पंडित कयास लगा रहे हैं कि यह चाल भाजपा के लिए उलटी भी पड़ सकती है।

यूपी में कांवड यात्रा के दौरान दुकानदारों को नेमप्लेट लगाने के योगी सरकार के फैसले पर सुप्रीम कोर्ट ने रोक लगा दी थी। इस बीच अब एक बार फिर ये मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंचा है। हालांकि, अब कोर्ट में इसके समर्थन में याचिका डाली गई है। बीते दिनों सुप्रीम कोर्ट ने यूपी के साथ उत्तराखंड और मध्यप्रदेश सरकार को भी ऐसे ही आदेश पर नोटिस जारी किया। कोर्ट ने सभी आदेशों पर अंतरिम रोक भी लगा दी थी।

दरअसल, मुजफ्फरनगर के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक द्वारा जारी निर्देश का समर्थन करते हुए एक याचिकाकर्ता ने कहा कि इस मामले को जबरन साम्प्रदायिक रंग देने की मांग की जा रही है। उन्होंने कहा कि मुझे इस मामले में पक्षकार भी बनाया जाए। याचिकाकर्ता सुरजीत सिंह यादव (Nameplate case in SC) ने कहा कि ये आदेश शिवभक्तों की सहूलियत, आस्था और कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए दिया गया था। उन्होंने कहा कि इसे बेवजह साम्प्रदायिक रंग दिया गया है। बता दें कि वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने कांवड यात्रा के दौरान दुकान मालिकों को दुकानों के बाहर अपने नाम प्रदर्शित

करने के लिए कहा था।

उल्लेखनीय है कि सोमवार को सुप्रीम कोर्ट ने तीन राज्य सरकारों के अधिकारियों द्वारा जारी निर्देशों पर अंतरिम रोक लगा दी थी कि कांवड़ यात्रा मार्ग पर स्थित भोजनालयों को ऐसी दुकानों के बाहर मालिकों के नाम प्रदर्शित करने चाहिए। कथित तौर पर यह निर्देश उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड के कई जिलों में लागू किया गया था और मध्य प्रदेश के उज्जैन में भी इसी तरह के निर्देश जारी किए गए थे।

कावड़ यात्रा का इतिहास

कांवर यात्रा का इतिहास बहुत पुराना है। इसी मान्यता है कि जब समुद्र मंथन के दौरान विष पीने के बाद भगवान शिव का कंठ नीला पड़ गया था। इस भयंकर समस्या को हल करने के लिए भगवान शिव ने जलाभिषेक किया, जिससे उनको राहत मिली। इसीलिए उन्हें कांवर यात्रा के दौरान भगवान शिव का जलाभिषेक किया जाता है ताकि उनकी कृपा प्राप्त हो। मान्यताओं के अनुसार, भगवान परशुराम ने सबसे पहले कांवड़ यात्रा की शुरुआत की थी। परशुराम गढ़मुक्तेश्वर धाम से गंगाजल लेकर आए थे और यूपी के बागपत के पास स्थित 'पुरा महादेव' का गंगाजल से अभिषेक किया था। उस समय सावन मास ही चल रहा था, इसी के बाद से Kanwar Yatra की शुरुआत हुई। आज भी इस परंपरा का पालन किया जा रहा है।

कैसे बनती है कांवड़

हरिद्वार में कई स्थानों पर कांवड़ तैयार किया जाता है। कांवड़ बनाने के लिए बांस, फेविकोल, कपड़े, डमरू, फूल-माला, घुंघरू, मंदिर, लोहे का बारीक तार, और मजबूत धागे का उपयोग किया जाता है। कांवड़ तैयार होने के बाद उसे फूल-माला, घंटी, और घुंघरू से सजाया जाता है। इसके बाद, गंगाजल का भार पिटारियों में भरकर, धूप और दीप जलाकर, भोले के जयकारों और भजनों के साथ, कांवड़ यात्री जल भरने आते हैं और भगवान शिव को प्रसन्न करते हैं।

चार प्रकार से की जाती है कांवड़ यात्रा

सामान्य कांवड़ : यह यात्री विशेष स्थानों पर ठहरकर आराम कर सकते हैं, लेकिन यह ध्यान देने लायक है कि वे जमीन से संपर्क में न रहें। इसके दौरान, कांवड़ स्टैंड पर रखा जाता है।

डाक कांवड़ : इसमें यात्री शिव के जलाभिषेक तक बिना रुके लगातार चलते रहते हैं। यहाँ तक कि शरीर से उत्सर्जन की क्रियाएं भी वर्जित होती हैं।

खड़ी कांवड़ : इसमें भक्त खड़ी कांवड़ लेकर चलते हैं और उनके साथ कोई सहायक भी होता है।

दांडी कांवड़ : इसमें भक्त नदी के किनारे से शिवधाम तक यात्रा करते हैं, इसका पूरा क्रमशः दांड देते हुए। यह यात्रा बहुत ही कठिन होती है, जिसमें कई दिन या अक्सर एक महीने तक का समय लग सकता है।

कावड़ यात्रा किसने शुरू की थी?

ऐसा माना जाता है कि पहली कांवर यात्रा परशुराम द्वारा की गई थी। वर्तमान उत्तर प्रदेश में पुरा नामक स्थान से गुजरते समय उनके मन में वहां एक शिव मंदिर की नींव रखने की इच्छा जागृत हुई। १९९० के दशक के बाद नीलकंठ की कांवड यात्रा वास्तव में प्रसिद्ध हो गई और बड़ी संख्या में भक्त इसमें भाग लेने लगे। कांवर मेले को श्रावण मेले के नाम से भी जाना जाता है और यह उत्तर भारत की सबसे बड़ी धार्मिक सभाओं में से एक है। कांवर यात्रा में सिर्फ पुरुष ही नहीं बल्कि महिलाएं भी शामिल होती हैं .

सावन में कांवर क्यों लगाते हैं?

कांवड़ शिव की आराधना का ही एक रूप है. इस यात्रा के जरिए जो शिव की आराधना कर लेता है, वह धन्य हो जाता है. कांवड़ का अर्थ है परात्पर शिव के साथ विहार. अर्थात ब्रह्म यानी परात्पर शिव, जो उनमें रमन करे वह कांवरिया कहलाता है. कांवड़ का अर्थ है परात्पर शिव के साथ विहार। अर्थात ब्रह्म यानी परात्पर शिव, जो उनमें रमन करे वह कांवरिया। च्कस्य आवरः कावरः 'अर्थात परमात्मा का सर्वश्रेष्ठ वरदान। एक अन्य मीमांसा के अनुसार 'क' का अर्थ जीव और 'अ' का अर्थ विष्णु है, वर अर्थात जीव और सगुण परमात्मा का उत्तम धाम।

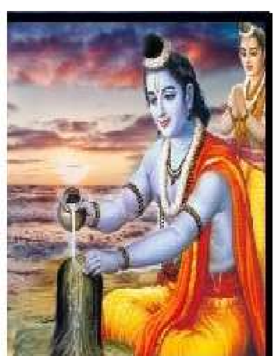

कांवड़ यात्रा के नियम...

सावन के महीने में की जाने वाली कांवड़ के नियम बहुत सख्त हैं। जो कांवड़िया पवित्रता, श्रद्धापूर्वक और नियमबद्ध होकर यात्रा संपन्न करते हैं, केवल उनकी ही कांवड़ यात्रा सफल मानी जाती है। कहते हैं, कांवड़ यात्रा के नियमों के टूटने या उल्लंघन करने से भगवान जितनी जल्दी प्रसन्न होते हैं, उतनी ही जल्द क्रोधित भी हो जाते हैं। इसलिए जो शिव भक्त और श्रद्धालु पहली बार कांवड़ यात्रा पर जा रहे हैं, उनको कांवड़ के महत्वपूर्ण नियम जान लेने चाहिए।

१. कांवड़ यात्रा के दौरान पवित्रता और शुचिता का सबसे अधिक ध्यान रखा जाता है। पूरे कांवड़ यात्रा के दौरान कांवड़ को भूल से भी धरती पर रखना मना है। इसे किसी स्टैंड या पेड़ की डालियों पर ल टका कर रखा जाता है।

२. पूरी यात्रा के दौरान तामसिक भोजन करने की मनाही है। प्याज, लहसुन, मांस, मछली, अंडा, शराब और अन्य नशे का इस्तेमाल वर्जित है।

३. पूरी यात्रा के दौरान नंगे पांव चलना अनिवार्य है। चप्पल, जूते, सैंडिल आदि पहनने की मनाही है।

४. कांवड़ यात्रा के दौरान मल-मूत्र त्याग से पहल े कांवड़ को स्टैंड पर लटकाने के बाद काफी दूर, जहां से कांवड़ न दिखे, मल-मूत्र त्याग किया जाता है। इसके बाद स्नान कर फिर से कांवड़ उठाया जाता है।

५. सुबह और शाम कांवड़ की विधिवत पूजा करनी अनिवार्य है, बिल्कुल वैसे ही जैसे कि भगवान शिव की पूजा करते हैं।

६. सोकर उठने के बाद या भोजन करने के बाद स्नान कर के ही कांवड़ उठाया जाता है।

७. कांवड़ यात्रा के दौरान हर समय बोल बम या हर हर महादेव का जयघोष करना जरूरी है। बहुत से लोग शिव मंत्र ॐ नमः शिवाय का जाप भी करते हैं।

८. कांवड़ यात्रा के दौरान किसी भलाबुरा कहना, गाली देना या झगड़ा करना बिल्कुल मना है। किसी का अपमान या अनादर करने से कांवड़ यात्रा का फल प्राप्त नहीं होता है।

९. कांवड़ यात्रा के समय भूल से भी जल से भरे कलश या कांवड़ का स्पर्श खुद या किसी और के पांव से नहीं होना चाहिए, इससे जल अशुद्ध हो जाता है, जिसे भगवान शिव को नहीं चढ़ाना चाहिए।

१०. कांवड़ यात्रा से ढोकर लाए जल से भगवान शिव का जलाभिषेक करना अनिवार्य है और सबसे पहले भगवान शिव को अर्पित करने के बाद मां पार्वती और अन्य देवी-देवताओं को अर्घ्य देना चाहिए।

कांवड़ यात्रा समारोह का एक अनूठा अर्थ है। पवित्र हाइमन का पाठ करके, कांवर अपने मन को शांत करने और इस प्रकार की भक्ति के माध्यम से आध्यात्मिक विराम लेने का प्रयास करते हैं। इसे मार्ग के साथ प्रेरित विचार प्रदान करने की क्षमता के साथ कठिन और अप्रिय परिस्थितियों से व्याकुलता के रूप में देखा जाता है। यह एक सर्वविदित सत्य है कि रचनात्मकता केवल शांत मन में ही हो सकती है। गंगा नदी से पवित्र जल इकट्ठा करना अधूरे काम को पूरा करने के लिए कार्यस्थल पर वापस लाने के लि ए प्रेरक और कल्पनाशील विचारों को इकट्ठा करने का प्रतिनिधित्व करता है। यह भी कहा जाता है कि कांवड़ यात्रा समाप्त करके, भगवान शिव कांवड़ियों पर अपना स्वर्गीय आशीर्वाद प्रदान करते हैं, जिससे उनकी सभी इच्छाएं पूरी होती हैं। यह भी माना जाता है कि कांवड़ियों की सेवा करना शुभ है।

धार्मिक जुलूस बड़े पैमाने पर अनुसरण करता है, लेकिन इसके बड़े पैमाने पर भीड़ ने ऐतिहासिक रूप से कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियां पेश की हैं। अपर्याप्त प्रशासनिक योजना के कारण बर्बरता, हिंसा, यातायात अराजकता और यहां तक कि हत्या के पिछले उदाहरण भी हुए हैं। वर्ष २०२२ में हरिद्वार में एक दुखद घटना में हरियाणा के तीर्थयात्रियों के एक समूह द्वारा सेना के एक जवान की हत्या कर दी गई, जिसमें बेहतर प्रबंधन और सुरक्षा उपायों की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया।

कांवड़ भक्तों द्वारा पालन किए जाने वाले आहार प्रतिबंध, जो मांसाहारी भोजन को बाहर करते हैं, छोटे विक्रेताओं की आजीविका पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। मार्गों से मांसाहारी स्टालों पर प्रतिबंध ल गाने से इन विक्रेताओं को काफी वित्तीय नुकसान होता है। अधिकारियों को इन छोटे व्यवसायों पर वित्तीय प्रभाव को कम करने के लिए स्थानांतरण सहायता या वैकल्पिक समाधान प्रदान करके इन नुकसानों को स्वीकार करना और संबोधित करना चाहिए।

हालांकि यात्रा पारंपरिक ब्राह्मणवादी मान्यताओं को दर्शाती है, लेकिन अधिकांश भक्त दलित और अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) हैं। (कुमार, २०१८ए, २०१८बी; पंवार, २०१९) नीचे से संस्कृतीकरण और ऊपर से आत्मसात करने की प्रक्रियाओं के राजनीतिक निहितार्थ हैं। हालांकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि कांवड़ियों की बढ़ती संख्या के पीछे एक प्रमुख कारण बेरोजगारी है।

यात्रियों की बढ़ती संख्या में सामाजिक-आथक कारकों का भी योगदान है। यात्रा समाज के दलित और ऐतिहासिक रूप से उपेक्षित वर्गों से संबंधित होने की भावना प्रदान करती है। इससे निचली जातियों को ब्राह्मणवादी व्यवस्था में आत्मसात और एकीकृत किया जाता है। एक अस्तित्वहीन पहचान को स्वयं को प्रभुओं के प्रति समर्पित करने के एक उच्च उद्देश्य से बदल दिया जाता है, और अंत में, जो उन्हें एक पहचान प्रदान करता है। इस मामले में, एक राजनीतिक दल।

अनुयायियों को आकर्षित करने और प्रासंगिकता बनाए रखने के लिए, धर्मों का विकास होना महत्वपूर्ण है। सख्त और अनन्य प्रकृति वाले धर्म कभी-कभी अपने नियमों और मानदंडों को अनुकूलित और बदल ते हैं। यह प्रासंगिक बने रहने और प्रतिशोध को कम करने के लिए किया जाता है। उदाहरण के लिए, एक उच्च जाति ब्राह्मण व्यक्ति धार्मिक तीर्थयात्रा में भाग लेने के लिए अपने करियर और परिवार को छोड़ने की संभावना नहीं है, जबकि एक बेरोजगार और अशिक्षित व्यक्ति ऐसा करने में संकोच नहीं कर सकता है। इसके विपरीत, ओबीसी और दलित समूहों के व्यक्ति स्वीकृति और संघ के लिए बड़ी धार्मिक परंपराओं को अपनाने और भाग लेने के लिए अधिक इच्छुक हैं।

राजनीतिक दल अक्सर विश्वासियों से वोट आकर्षित करने के लिए धार्मिक भावनाओं का उपयोग करते हैं। दोनों के लिए एक पारस्परिक लाभ निकाल ा जाता है। राजनीतिक दल अपने वोट सुनिश्चित करते हैं और धर्म को राष्ट्रवादी दर्जा प्राप्त होता है। यह अज्ञात नहीं है कि कांवड़ यात्रा को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) का प्रशासनिक समर्थन मिलता है. पार्टी नेताओं ने कई बयान दिए हैं यात्रा का समर्थन। उनके सार्वजनिक भाषणों में आश्रय और पुलिस सुरक्षा के वादे भी शामिल थे। पुष्पा समारोह जिसमें हेलीकॉप्टरों के माध्यम से यात्रियों पर फूल बरसाए गए, आराम के लिए टेंट लगाना आदि संकेत देते हैं कि स्थानीय व्यापारियों और धनी व्यापारियों से वित्तीय सहायता मिलती है। आदित्यनाथ ने इस साल भी यही सुविधाएं देने का दावा किया है।

सरकार द्वारा इन भक्तों को दी गई मान्यता और समर्थन सतही है और यह बिना किसी उद्देश्य के नहीं आता है। यात्रा धार्मिक विश्वासों में अति राष्ट्रवाद की भावनाओं को प्रदर्शित करती रही है। ये पारस्परिक लाभ हिंदू राष्ट्र के एजेंडे और किसी धर्म की वैधता की निरंतरता दोनों की सेवा करते हैं। भगवा झंडे लि ए और 'डीजे बाजवा दिए योगी ने, रंग जमा दिए मोदी ने' जैसे नारे लगाना राजनीतिक लामबंदी और छिपे हुए एजेंडे को दर्शाता है.

यात्रा पर चंद्रशेखर आजाद की ताजा टिप्पणी ने उत्तर प्रदेश में राजनीतिक विवाद खड़ा कर दिया। आजाद के अनुसार, भारत को न केवल हिंदू धर्म बल्कि सभी धर्मों की धार्मिक प्रथाओं का सम्मान करना चाहिए। उन्होंने यात्रा की तुलना सार्वजनिक रूप से नमाज अदा करने वाले मुसलमानों से की। जवाब में आदित्यनाथ ने कहा, 'कांवड़ यात्रा सिर्फ एक तीर्थ यात्रा नहीं है; यह भगवान शिव के प्रति हमारी आस्था और भक्ति का प्रतीक है। राज्य सरकार यह सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है कि कांवड़ियों की सुरक्षा और सुविधा के लिए सभी व्यवस्थाएं की जाएं। आदित्यनाथ का यह बयान प्रतिभागियों की सुरक्षा और सुविधा सुनिश्चित करने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डालता है क्योंकि धार्मिक संघर्ष के पीछे राजनीतिक एजेंडा बरकरार है। कांग्रेस नेता मनीष तिवारी के अनुसार, यह यात्रा भाजपा-आरएसएस का धर्म के तत्वों को राष्ट्रवादी प्रयास में मिलाने का एक प्रयास है।

राज्य युवा कांवड़ियों को आत्मविश्वास और कर्तव्य और पात्रता की भावना प्रदान करता है। राष्ट्र के गौरव को बचाने के लिए, जो उनके अनुसार सीधे तौर पर उनके धर्म को बचाने से जुड़ा हुआ है, जिसके परिणामस्वरूप शहरों में हिंसक सांप्रदायिक व्यवधान पैदा होते हैं। इन अति-धार्मिक और राष्ट्रवादी भावनाओं का परिणाम अल्पसंख्यकों पर हमले के रूप में भी निकलता है। २०१८ में, ७० मुस्लिम परिवारों को पुलिस द्वारा जारी किए गए 'लाल कार्ड' के कारण लखनऊ में अपने घर खाली करने पड़े थे। राज्य की भागीदारी और संरक्षण के कारण अल्पसंख्यकों में भय की भावना उत्पन्न होती है।

एक धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक राष्ट्र में, सभी धर्मों को अपने विश्वासों का पालन करने की स्वतंत्रता प्राप्त है, जबकि सरकार को एक तटस्थ और निष्पक्ष रुख बनाए रखना चाहिए, धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांतों को बनाए रखना चाहिए और सभी धर्मों के लिए समान उपचार सुनिश्चित करना चाहिए। जब धर्मनिरपेक्ष और पवित्र के बीच का यह अंतर धुंधला हो जाता है, तो भारत जैसे विविध देश को समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अल्पसंख्यकों के बीच असुरक्षा पैदा होती है और वे इसके बारे में बहुत कम कर सकते हैं। पारंपरिक मान्यताएं अक्सर अपने स्वयं के व्यक्तित्व को पसंद करने की क्षमता में बाधा डाल ती हैं, खासकर ऐसे समाज में जहां पहचान जीवन के लगभग सभी पहलुओं को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उत्कीर्ण स्थिति किसी के लिए निर्धारित कर सकते हैं जीवन की गुणवत्ता और यदि वे एक एकीकृत जीवन जीने का जोखिम उठा सकते हैं या यदि उन्हें बाहरी इलाके में रहने की आवश्यकता है। इन सामाजिक-धार्मिक परिस्थितियों में, यह समझ में आता है कि हाशिए के समुदाय व्यापक, अधिक प्रमुख परंपराओं में शामिल होने की आकांक्षा रखते हैं, स्वीकृति और अपनेपन की भावना चाहते हैं।

यार्ता केवल भक्ति या धर्म के बारे में नहीं है, यह एक ऐसी प्रणाली में पहचान बनाने की उनकी इच्छा के बारे में है जहां वे वोट बैंक के रूप में भी काम करते हैं। सरकार कांवड़ियों को कर्तव्य और उद्देश्य की भावना प्रदान करके भागीदारी को प्रोत्साहित करती है। सम्मान समाहरोस या उपहार देने वाले समारोहों का उपयोग उसी के लिए सहायक उपकरण के रूप में किया जाता है।

U-Tropicana-Beach-Resort-in-Alibaug

One of the most beautiful resorts near Mumbai for family is the U Tropicana at Alibaug

Kedarnath से गायब हुआ २२८ किलो सोना? शंकराचार्य के चौंकाने वाले दावे

नई दिल्ली में एक और केदारनाथ मंदिर के शिलान्यास को लेकर विवाद खड़ा हो गया है। ज्योतिर्मठ के शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद ने राष्ट्रीय राजधानी में केदारनाथ मंदिर के निर्माण पर कड़ी आपत्ति जताई और कहा कि वहां प्रतीकात्मक केदारनाथ नहीं हो सकता। स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद ने सवाल उठाते हुए कहा कि शिवपुराण में नाम और स्थान सहित १२ ज्योतिर्लिंगों का उल्लेख किया गया है। जब केदारनाथ का पता हिमालय में है तो वह दिल्ली में कैसे हो सकता है? उन्होंने राजनीतिक कारण गिनाते हुए कहा कि राजनीतिक लोग हमारे धार्मिक स्थलों में प्रवेश कर रहे हैं। शंकराचार्य ने केदारनाथ मंदिर के गर्भगृह में सोना चढ़ाने के काम में घोटाले का भी आरोप लगाया है।

दिल्ली में बनने वाले केदारनाथ मंदिर पर ज्योतिर्मठ के शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद ने आरोप लगाते हुए कहा कि केदारनाथ में सोने का घोटाला हुआ है, उस मुद्दे को क्यों नहीं उठाया जाता? वहां घोटाला करने के बाद अब दिल्ली में केदारनाथ का निर्माण होगा और फिर एक और घोटाला होगा। केदारनाथ से २२८ किलो सोना गायब है। कोई जांच शुरू नहीं हुई। इसका जिम्मेदार कौन है? अब वे कह रहे हैं कि वे दिल्ली में केदारनाथ बनाएंगे, ऐसा नहीं हो सकता। पिछले साल केदारनाथ मंदिर के एक वरिष्ठ पुजारी ने केदारनाथ मंदिर में सोने की परत चढ़ाने के काम में ₹१२५ करोड़ तक के घोटाले का आरोप लगाया था और दावा किया था कि सोने की परत सोने की बजाय पीतल की बनाई गई थी, लेकिन मंदिर समिति ने इस आरोप से इनकार किया है।

उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने बुधवार को उत्तर पश्चिमी दिल्ली में बुराड़ी के पास हिरंकी इलाके में नए केदारनाथ मंदिर की आधारशिला रखते हुए भूमि पूजन (प्रतिष्ठा समारोह) में भाग लिया। रुद्रप्रयाग जिले में केदारनाथ मंदिर के पुजारियों ने मंदिर के सामने विरोध प्रदर्शन किया। वे विभिन्न अन्य संगठनों के साथ केदार सभा के बैनर तले एकत्र हुए और उत्तराखंड राज्य सरकार और मुख्यमंत्री के खिलाफ नारे लगाए। केदार सभा के प्रवक्ता पंकज शुक्ला ने अपना रुख स्पष्ट करते हुए कहा, ''हम किसी मंदिर के निर्माण के खिलाफ नहीं हैं, लेकिन दिल्ली में एक धार्मिक ट्रस्ट द्वारा केदारनाथ मंदिर के निर्माण का विरोध कर रहे हैं।

Telangana में भी भोजनालय के मालिकों के नाम प्रदर्शित किए जाएं : भाजपा विधायक राजा सिंह

हैदराबाद । उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा कांवड़ यात्रा मार्ग पर भोजनालयों के मालिक के नाम प्रदर्शित करने संबंधी आदेश से पैदा हुए विवाद के बीच, अक्सर विवादों में रहने वाले तेलंगाना से भाजपा विधायक राजा सिंह ने कहा है कि उनके राज्य में भी यह लागू किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि हिंदुओं को खाने-पीने की चीजें केवल हिंदू दुकानदारों से ही खरीदनी चाहिए। इस बीच, उच्चतम न्यायालय ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) शासित उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड सरकारों द्वारा जारी उन निर्देशों पर सोमवार को अंतरिम रोक लगा दी, जिनमें कांवड़ यात्रा मार्गों पर स्थित भोजनालयों को अपने मालिकों, उनमें काम करने वालों के नाम और अन्य विवरण प्रदर्शित करने के लिए कहा गया है।

राजा सिंह ने सोमवार को अपने भाषण का एक वीडियो जारी कर कांवड़ यात्रा के मार्ग पर खाने-पीने की चीजों की दुकानों पर उनके मालिक का नाम प्रदर्शित करने का आदेश देने के लिए उत्तर प्रदेश के

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की प्रशंसा की। अपने विभाजनकारी भाषणों के लिए चर्चा में रहने वाल ` राजा सिंह ने कहा, ''पिछली बार हमने देखा था कि कांवड़ियों को भोजन उसमें थूककर परोसा गया था।'' उत्तर प्रदेश सरकार के आदेश का संदर्भ देते हुए उन्होंने उसके फैसले की प्रशंसा करते हुए कहा कि हिंदू अब जान पाएंगे कि वे किसके भोजनालय में खाना खा रहे हैं।

हैदराबाद की गोशामहल विधानसभा सीट से विधायक सिंह ने कहा, ''ऐसी चीज तेंलगाना में भी होनी चाहिए जहां कांवड़ यात्रा होती है। तेलंगाना ही नहीं, बल्कि मध्य प्रदेश, असम और उन राज्यों में भी अनुकरण किया जाना चाहिए जहां भाजपा की सरकारें हैं।'' विवादित टिप्पणी करते हुए सिंह ने कहा कि हिंदुओं को खाने-पीने की चीजें केवल हिंदू कारोबारियों की दुकानों से ही खरीदनी चाहिए। उन्होंने दावा किया कि गैर-हिंदू कथित तौर पर जो भोजन और पानी देते हैं उसपर पहले थूका गया होता है। भाजपा विधायक ने लोगों से सवाल किया, ''क्यों हमें अपवित्र भोजन करना चाहिए।'' सिंह ने कहा, ''इसलिए, हमें जागरूकता लानी चाहिए। अगर हम एक रुपये का सामान खरीदते हैं तो इसे किसी हिंदू से ही खरीदें। अगर हम किसी होटल में खाते हैं तो हम हिंदू के होटल में खाएं। हमें यह आज से ही करना होगा।

राजा सिंह ने सोमवार को अपने भाषण का एक वीडियो जारी कर कांवड़ यात्रा के मार्ग पर खाने-पीने की चीजों की दुकानों पर उनके मालिक का नाम प्रदर्शित करने का आदेश देने के लिए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की प्रशंसा की। अपने विभाजनकारी भाषणों के लिए चर्चा में रहने वाल ` राजा सिंह ने कहा, ''पिछली बार हमने देखा था कि कांवड़ियों को भोजन उसमें थूककर परोसा गया था।''

क्या अब IT कंपनियों में १४-१४ घंटे तक करना होगा काम, नारायण मूर्ति के सुझाव पर सरकार करने वाली है अमल?

कर्नाटक में आईटी कंपनियों ने राज्य सरकार को एक प्रस्ताव सौंपकर कर्मचारियों के काम के घंटे को १४ घंटे तक बढ़ाने की मांग की है। इस कदम को कर्मचारियों के गंभीर विरोध का सामना करना पड़ रहा है। सूत्रों के मुताबिक, राज्य सरकार कर्नाटक दुकानें और वाणिज्यिक प्रतिष्ठान अधिनियम, १९६१ में संशोधन करने पर विचार कर रही है। आईटी कंपनियां चाहती हैं कि उनके प्रस्ताव को संशोधन में शामिल किया जाए, जो कानूनी तौर पर काम के घंटों को १४ घंटे (१२ घंटे ＋ २ घंटे ओवरटाइम) तक बढ़ा देगा। वर्तमान श्रम कानूनों के अनुसार, ९ घंटे काम करने की अनुमति है, जबकि एक अतिरिक्त घंटे को ओवरटाइम के रूप में अनुमति दी जाती है।

आईटी क्षेत्र के नए प्रस्ताव में कहा गया है कि आईटी/आईटीईएस/बीपीओ क्षेत्र के कर्मचारियों को प्रतिदिन १२ घंटे से अधिक और लगातार तीन महीनों में १२५ घंटे से अधिक काम करने की आवश्यकता या अनुमति दी जा सकती है।सरकार ने इस मामले

पर शुरुआती बैठक की है और जल्द ही आगे के फैसले लिए जाएंगे। इस प्रस्ताव पर कैबिनेट में चर्चा होने की संभावना है। श्रम मंत्री संतोष लाड, श्रम विभाग तथा सूचना प्रौद्योगिकी और जैव प्रौद्योगिकी (आईटी-बीटी) मंत्रालय के अधिकारी बैठक में शामिल हुए, जिसमें संघ के प्रतिनिधियों ने भी हिस्सा लिया। श्रम मंत्री ने कोई भी निर्णय लेने से पहले एक और दौर की चर्चा करने पर सहमति जताई। संघ ने कहा कि प्रस्तावित नया विधेयक कर्नाटक दुकान और वाणिज्यिक प्रतिष्ठान (संशोधन) विधेयक २०२४ १४ घंटे के कार्य दिवस को सामान्य बनाने का प्रयास करता है, जबकि मौजूदा अधिनियम केवल अधिकतम १० घंटे प्रति दिन काम की अनुमति देता है, जिसमें ओवरटाइम भी शामिल है।

संघ ने दावा किया कि इस संशोधन से कंपनियों को वर्तमान में प्रचलित तीन शिफ्ट प्रणाली के स्थान पर दो शिफ्ट प्रणाली अपनाने की अनुमति मिल जाएगी तथा एक तिहाई कार्यबल को नौकरी से निकाल दिया जाएगा। बैठक के दौरान केआईटीयू ने आईटी कर्मचारियों पर बढ़े हुए कार्य घंटों के स्वास्थ्य पर प्रभाव से संबंधित अध्ययनों की ओर ध्यान दिलाया और कहा, कर्नाटक सरकार अपने कॉरपोरेट मालिकों को खुश करने की भूख में किसी भी व्यक्ति के सबसे मौलिक अधिकार जीवन जीने के अधिकार की पूरी तरह उपेक्षा कर रही है।

राज्य में बांधों में जल भंडारण में ६७६ टीएमसी की वृद्धि हुई, पिछले पांच दिनों में १४८ टीएमसी की वृद्धि हुई

पुणेः पिछले पांच दिनों में, राज्य में बांधों का जल भंडारण १०.३८ प्रतिशत या १४८.७१ टीएमसी बढ़ गया है। नतीजतन, राज्य में बांध परियोजनाओं में जल भंडारण ४७.३० प्रतिशत तक पहुंच गया है। गुरुवार (२५ जुलाई) सुबह ६ बजे तक, राज्य के सभी बांधों में पानी का भंडारण ६७६.६६ टीएमसी था। इस साल चिलचिलाती गर्मी के कारण राज्य के बांध निचले स्तर पर पहुंच गए थे। इसके अलावा, मानसून की बारिश में देरी के साथ, यह देखा जाना बाकी है कि बांध कब भरे जाएंगे। राज्य में बांधों की कुल जल भंडारण क्षमता १४३०.६३ टीएमसी है। हालांकि, बांधों में जल भंडारण बढ़ रहा है क्योंकि राज्य में व्यापक वर्षा जारी है।

जल संसाधन विभाग के सेवानिवृत्त इंजीनियर हरिश्चंद्र चाकोर के अनुसार, राज्य के सभी बांधों में गुरुवार सुबह छह बजे तक ६७६.६६ टीएमसी पानी था। कोंकण क्षेत्र में बांधों की कुल जल भंडारण क्षमता १३०.८४ टीएमसी है। इन जलाशयों में अब १००.७३ टीएमसी (७६.९७ प्रतिशत) जल संग्रहण है। पुणे डिवीजन में बांधों की कुल जल भंडारण क्षमता ५३७.२८ टीएमसी है। अब बारिश के साथ, बांधों में पानी का भंडारण २९७.८१ टीएमसी (५५.४४ प्रतिशत) तक पहुंच गया है। नासिक डिवीजन में बांधों की कुल जल भंडारण क्षमता २०९.६१ टीएमसी है। जलाशय में ७७.१७ टीएमसी (३७.०६ड) का भंडारण है। मराठवाड़ा क्षेत्र में बांधों की कुल जल भंडारण क्षमता २५६.४५ टीएमसी है। जलाशय में ३४.०५ टीएमसी (१३.२७ प्रतिशत) का भंडारण है। अमरावती डिवीजन में बांधों की कुल जल भंडारण क्षमता १३६.७५ टीएमसी है। जलाशय में ६४.६६ टीएमसी (४८.४१ प्रतिशत) का भंडारण है। नागपुर संभाग में बांधों की कुल संख्या

राजगिरा पराठा

सामग्रीः
१ कप - राजगिरा आटा
१ कप - कसा हुआ गाजर
३/४ छोटा चम्मच - जीरा पाउडर
१/२ छोटा चम्मच - काली मिर्च पाउडर
१ बड़ा चम्मच - कटा हुआ धनिया पत्ता
१/२ बड़ा चम्मच - तेल
स्वादानुसार - सेंधा नमक
आवश्यकतानुसार - पानी
पकाने के लिए - तेल/घी

विधिः

गाजर छीलकर कद्दूकस कर लें, एक बड़े प्याले या प्लेट में राजगिरा आटा, कद्दूकस की हुई गाजर, जीरा पाउडर, काली मिर्च पाउडर सेंधा नमक, धनिया पत्ता, तेल डालकर हाथ से अच्छी तरह मिला लें। अब थोड़ा-थोड़ा पानी डालकर आटा गूंथ लें, पानी का ध्यान रखें, कम डालें। आटे को बराबर भागों में बांट लें, हाथ पर तेल लगाकर चिकना कर लें और आटे के एक भाग को गोल करके चपटा कर लें, अब इस पर राजगिरा आटा लगाकर धीरे से पराठा बेल लें, यह रोटी से मोटा होगा और ऐसा धीरे से करें अन्यथा पराठा टूटने से बच जाएगा, आवश्यकतानुसार सूखा आटा मिलाते रहें। तवा गरम करें और उस पर रोल किया हुआ पराठा रखें, मध्यम आँच पर एक मिनट या हल्के भूरे रंग के धब्बे दिखाई देने तक पकाएँ। पराठे को पलटें और उस पर तेल या घी लगाएँ। गरमागरम दही , आलू की सब्जी, चटनी के साथ परोसें।

ओट्स टिक्की

सामग्रीः
१ कप - ओट्स
२ मध्यम - आलू
१ मध्यम - गाजर
२ - हरी मिर्च
२ टेबल स्पून - कटी हुई हरा धनिया पत्ती
१/२ छोटा चम्मच - हल्दी पाउडर
१ चम्मच - लाल मिर्च पाउडर
१/२ छोटा चम्मच - भुना जीरा पाउडर
१ छोटा चम्मच - गरम मसाला
१ छोटा चम्मच - चाट मसाला
१ बड़ा चम्मच - नींबू का रस
स्वादानुसार - नमक
फ्राई करने के लिए - तेल
कोटिंग के लिए
२ टेबल स्पून - मैदा
१/४ कप - पानी

विधिः

प्रेशर कुकर में आलू को ३-४ सीटी आने तक उबालें, प्रेशर रिलीज होने पर आलू को छीलकर मैश या कद्दूकस कर लें। बिना किसी गांठ के आलू कद्दूकस करना अच्छा है।

ओट्स को हल्का ब्राउन होने तक भूनें, १/२ कप ओट्स को अलग रख दें। गाजर को छीलकर कद्दूकस कर लें, हरी मिर्च, धनिया पत्ती को बारीक काट लें।

एक बड़े कटोरे में मैश किए हुए आलू, गाजर, हरी मिर्च, धनिया पत्ती, हल्दी पाउडर, लाल मिर्च पाउडर, जीरा पाउडर, नमक, चाट मसाला, गरम मसाला, नींबू का रस लें और चिकना आटा बनाने के लिए सब कुछ अच्छी तरह से मिलाएं, आटे को गोल या १/२ इंच मोटाई के साथ किसी भी आकार में आकार दें। एक छोटे कटोरे में मैदा, पानी को बिना किसी गांठ के पेस्ट करने के लिए मिलाएं और दूसरी प्लेट में बचा ओट्स फैलाएं।

मैदे के मिश्रण में टिक्की को जल्दी से कवर करें और फिर उन्हें ओट्स स्प्रेड में रोल करें। एक पैन या तवा गरम करें और उसमें १ से २ टेबलस्पून तेल डालें और ४ से ६ टिक्की रखें और धीमी से मध्यम आंच में सुनहरा भूरा होने तक पकाएं, कटलेट को दूसरी तरफ पलटें फिर से १ से २ टेबल स्पून तेल डालें और फिर से सुनहरा भूरा होने तक पकाएं, सॉस या हरी चटनी, मीठी चटनी के साथ गरमागरम परोसें।

चुकंदर कटलेट

सामग्रीः
२ मध्यम - चुकंदर
२ मध्यम - आलू
१ बड़ा - प्याज
४ - हरी मिर्च
१/२ छोटा चम्मच - हल्दी पाउडर
१ चम्मच - लाल मिर्च पाउडर
१ चम्मच - भुना जीरा पाउडर
१ छोटा चम्मच - अमचूर पाउडर
१/२ छोटा चम्मच - काला नमक
२ टेबल स्पून - कटी हुई हरा धनिया पत्ती
१/२ कप - ब्रेड क्रम्ब्स
२ से ३ टेबल स्पून - तेल
१ बड़ा चम्मच - मैदा या कॉर्न फ्लोर
२ से ३ टेबल स्पून - पानी

विधिः

आलू को ३ सीटी के लिए प्रेशर कुक करें, इस बीच चुकंदर को छीलकर धो लें और कद्दूकस कर लें, प्याज, हरी मिर्च, धनिया पत्ती को बारीक काट लें। प्रेशर रिलीज होने के बाद आलू को छीलकर मैश कर लें। एक बड़े कटोरे में कद्दूकस किया हुआ चुकंदर, मसला हुआ आलू, प्याज, हरी मिर्च, धनिया पत्ती, लाल मिर्च पाउडर, हल्दी पाउडर, जीरा पाउडर, अमचूर पाउडर, काला नमक और टेबल सॉल्ट लें। ब्रेड क्रम्ब्स डालें और आटे को बराबर भागों में विभाजित करें। दोनों हाथों के बीच रोल करें, थोड़ा चपटा करने के लिए दबाएं। आप कटलेट को फ्रिज में ढककर ३० मिनट से एक घंटे तक रख सकते हैं।

एक छोटी प्लेट या कटोरे में मैदा या मकई के आटे को बिना किसी गांठ के २ से ३ टेबल-स्पून पानी के साथ मिलाएं और बहुत गाढ़ा न हो, दूसरी छोटी प्लेट में ब्रेड क्रम्ब्स लें। कटलेट को मैदे के मिश्रण में डुबोकर सभी तरफ से कोट करें फिर ब्रेड क्रम्ब्स के साथ अच्छी तरह से कोट करें। एक पैन या तवा गरम करें, १ बड़ा चम्मच तेल डालें, कटलेट के ४-५ टुकड़े रखें और धीमी से मध्यम आंच में हल्का भूरा होने तक पकाएं, दूसरी तरफ पलट दें और हल्का भूरा होने तक फिर से पकाएं, बाकी टुकड़ों के लिए भी ऐसा ही दोहराएं।

ब्रोकोली गाजर पैरियल

सामग्रीः
ब्रोकली - १
गाजर - २
हरी मिर्च - २
तेल - २ छोटी चम्मच
हींग - एक चुटकी
जीरा - १/२ छोटी चम्मच
सरसों के बीज - १/२ छोटी चम्मच
सूखी लाल मिर्च - १
करी पत्ता - १ टहनी
हल्दी पाउडर - १/४ छोटी चम्मच
लाल मिर्च पाउडर - १/२ छोटी चम्मच
कद्दूकस किया हुआ नारियल - ३ बड़े चम्मच
नमक - स्वादानुसार

विधिः ब्रोकली को धोकर बारीक काट लें। गाजर, हरी मिर्च को धोकर छील कर बारीक काट लें। एक पैन या कड़ाही में तेल गरम करें, उसमें हींग, जीरा और सरसों डालें और चटकने दें। करी पत्ता और सूखी लाल मिर्च डालें और २५-३५ सेकंड के लिए भूनें, गाजर डालें और एक मिनट के लिए भूनें। ब्रोकली डालें और अच्छी तरह से हिलाएं, इसे एक मिनट के लिए भी भूनने दें। अब इसमें हल्दी, मिर्च पाउडर, नमक डालकर अच्छी तरह मिला लें, पैन को ढक दें और मध्यम आंच पर ३-४ मिनट तक पकाएं। कद्दूकस किया हुआ नारियल डालें और अच्छी तरह मिलाएँ, एक मिनट के लिए या जब तक सब कुछ पक न जाए लेकिन फिर भी कुरकुरे हों। इसे पकाने में मुश्किल से ५ मिनट का समय लगता है क्योंकि ब्रोकली और गाजर बारीक कटी हुई होती हैं। इसे चावल या रोटी के साथ खाया जा सकता है।

SOFAS

Comfortable seating
you can share!

FROM ₹9,500

Wholesale Furniture Market
Ulhasnagar,Mumbai

सस्ते फर्नीचर के 5 थोक बाजार
फर्नीचर खरीदिए आधे दामों पर
एक से बढ़कर एक एंटीक आइटम

Contact: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in

मेष :

मेष राशि के जातकों के लिए अगस्त का महीना जीवन में तरक्की के मार्ग खोलने एवं मनचाही सफलता देने वाला साबित होगा। इस माह आपके कई अटके कार्य पूरे हो सकते हैं। करियर-कारोबार में आने वाली अड़चनें दूर होंगी। मेष राशि वाले इस महीने अपने करियर-कारोबार पर पूरी तरह से फोकस करते हुए नजर आएंगे। खास बात यह कि इस दिशा में की मेहनत और प्रयास दोनों ही सफल होंगे। आपकी महत्वाकांक्षा इस महीने बढ़ी हुई नजर आएगी और आप येन-केन-प्रकारेण अपनी योजना को सफल बनाने के लिए प्रयासरत रहेंगे। जीवन से जुड़े कुछेक बड़े उद्देश्यों को पूरा करने के संदर्भ में आपको माह के मध्य में अचानक से लंबी दूरी की यात्रा पर निकलना पड़ सकता है। अगस्त महीने के पूर्वार्ध के मुकाबले उत्तरार्ध आपके लिए ज्यादा शुभता एवं सफलता लिए रहने वाला है। इस दौरान आपकी सेहत सामान्य रहेगी और कार्य समय से सफल होते हुए नजर आएंगे।

वृषभः

वृष राशि के जातकों के लिए अगस्त का महीना बड़ा उलटफेर करने वाला रहने वाला है। इस माह आप आप अपने करियर-कारोबार और जीवन से जुड़े कुछ निर्णय अचानक से ले सकते हैं। अगस्त महीने की शुरुआत थोड़ी खर्चीली रहने वाली है। इस दौरान आपको कुछ चीजों पर बड़ी धनराशि खर्च करनी पड़ सकती है। यदि आप चाहते हैं कि आपको माह के अंत में शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक परेशानियां न झेलनी पड़े तो आपको शुरु से ही अपनी ऊर्जा, समय और धन आदि का प्रबंधन करके चलना होगा। माह के पहले हफ्ते में अपनी सेहत का विशेष ख्याल रखें। इस दौरान आपका कारोबार थोड़ा मंदा रहेगा और आय के मुकाबले खर्च की अधिकता रहेगी। घरेलू समस्याओं के कारण आपका कामकाज प्रभावित हो सकता है। विशेष रूप से कामकाजी महिलाओं को घर और कार्यक्षेत्र के बीच तालमेल बिठाने में मुश्किलें आ सकती हैं।

मिथुनः

मिथुन राशि के जातकों के लिए अगस्त का महीना शुभता और सौभाग्य को लिए है। इस माह आपके किसी मित्र आथवा प्रभावी व्यक्ति की मदद से करियर और कारोबार में प्रगति करने के अवसर प्राप्त होंगे। आपके सोचे हुए कार्य समय पर पूरे होंगे, जिससे आपके भीतर एक अलग ही उत्साह और आत्मविश्वास देखने को मिलेगा। अगस्त महीने के पूर्वार्ध में आप जिस भी दिशा में भी पूरे मनोयोग के साथ कार्य करेंगे, उसमें आपको मनचाही सफलता मिलेगी। अगस्त महीने के दूसरे सप्ताह में आपका मन धार्मिक-आध्यात्मिक कार्यों में खूब रमेगा। इस दौरान किसी तीर्थ स्थान की यात्रा के योग बनेंगे। इस माह आप अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाने के लिए भरसक प्रयास करेंगे। माह के मध्य में किसी योजना में अटका हुआ पैसा आपको मिल सकता है।

कर्कः

कर्क राशि के जातकों के लिए अगस्त का महीना मिलाजुला रहने वाला हैं। इस माह कर्क राशि के जातकों को अति उत्साह और अति आत्मविश्वास से बचने की आवश्यकता रहेगी, अन्यथा आपको बेवजह की परेशानियां झेलनी पड़ सकती हैं। अगस्त महीने की शुरुआत थोड़ी भागदौड़ भरी रहने वाली है। इस दौरान आपको करियर और कारोबार के सिलसिले में जरा ज्यादा ही भागदौड़ करनी पड़ सकती है। इस दौरान आपको छोटे-छोटे कार्यों को पूरा करने के लिए अधिक परिश्रम और प्रयास करने पड़ेंगे तथा आपको उन लोगों से बहुत ज्यादा सावधान रहने की आवश्यकता रहेगी जो आपके काम में अड़ंगे डालने की साजिश रचते रहते हैं। यदि आप व्यवसाय से जुड़े हैं तो आपको अगस्त महीने की शुरुआत में लेनदेन में खूब सावधानी बरतने की आवश्कता रहेगी।

सिंह :

सिंह राशि के जातकों को अगस्त महीने के दूसरे सप्ताह कुछ कदम न चाहते हुए उठाने पड़ सकते हैं। यदि आप अपनी नौकरी में बदलाव अथवा कारोबार से जुड़ा कोई बड़ा निर्णय लेने की सोच रहे हैं तो इसके लिए अगस्त महीने के उत्तरार्ध का समय उचित रहेगा। ऐसे में भावनाओं में बहकर इससे पूर्व कोई अहम फैसला करने की भूल न करें। माह के उत्तरार्ध में कारोबार के सिलसिले में की गई यात्रा सुखद, लाभप्रद और प्रगतिदायक साबित होगी। इस दौरान आपको कारोबार में उम्मीद से कहीं ज्यादा लाभ होगा। जिसके चलते आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। यह समय प्रापर्टी और कमीशन से जुड़े काम करने वालों के लिए भी अत्यंत ही शुभ रहने वाला है।

कन्याः

अगस्त महीने के पहले सप्ताह में उम्मीद के मुताबिक कार्यों में सफलता न मिल ने पर आपका मन थोड़ा खिन्न रह सकता है। इसका असर न सिर्फ आपके कामकाज में बल्कि निजी जीवन में देखने को मिल सकता है। इस दौरान आप स्वजनों के साथ छोटी-मोटी बात पर अपना आपा खो सकते हैं। इस दौरान स्वजनों एवं शुभचिंतकों के सहयोग में भी कमी देखने को मिलेगी। कन्या राशि के जातकों को अगस्त महीने के पूर्वार्ध में आवेश में आकर अथवा भावनाओं में बहकर

कोई बड़ा निर्णय लेने से बचना चाहिए अन्यथा बाद में उन्हें पछताना पड़ सकता है। यदि आप व्यवसाय से जुड़े हैं तो आपको इस दौरान नये काम में हाथ डालने से बचना चाहिए और यदि नौकरीपेशा व्यक्ति हैं तो आपको कार्यक्षेत्र में उतनी ही जिम्मेदारी हाथ में लेनी चाहिए जितने का आप अच्छी तरह से निर्वहन कर सकें।

तुला :

तुला राशि के जातकों के लिए अगस्त का महीना उम्मीद से कहीं ज्यादा सुखदायी और फल दायी रहने वाला है। इस माह आपके बड़े सपने साकार होते हुए नजर आएंगे। लंबे समय से अटके हुए कार्यों में गति आएगी। जो लोग लंबे समय से रोजी-रोजगार के लिए भटक रहे थे, उन्हें मनचाहा कार्य मिल जाएगा। वहीं पहले से कार्यरत या कारोबार कर रहे लोगों को धन एवं पद आदि का लाभ होगा। तुला राशि के जातकों के लिए अगस्त महीने का पूर्वार्ध अत्यंत ही शुभ रहने वाला है। इस दौरान आपकी आर्थिक स्थिति पहले से कहीं ज्यादा मजबूत हो जाएगी। आय के नए स्रोत बनेंगे और संचित धन में वृद्धि होगी। इस दौरान आपको उच्च पद की प्राप्ति अथवा विशेष सम्मान की प्राप्ति संभव है। आपकी ख्याति बढ़ेगी।

वृश्चिकः

वृश्चिक राशि के जातकों के लिए अगस्त का महीना मिलाजुला रहने वाला है। वृश्चिक राशि वालों को इस पूरे माह सावधानी हटी दुर्घटना घटी का स्लोगन याद रखना होगा। इस पूरे माह भूलकर भी नियमों का उल्लंघन या फिर कहें किसी चीज में शार्टकट लेने की गलती न करें, अन्यथा बेवजह की परेशानियां झेलनी पड़ सकती है। माह के मध्य का समय मध्यम रहने वाला है। इस दौरान कारोबार में धन की आवक और खर्च लगभग बराबर ही बना रहेगा। हालांकि आपका मन इस दौरान किसी आशंका से ग्रसित रहेगा। नौकरीपेशा लोगों की रोजी-रोजगार पर संकट के बादल मंडरा सकते हैं। यह समय टारगेट ओरिएंटेड काम करने वाले लोगों के लिए थोड़ा चुनौती भरा रह सकता है। इस दौरान आप परिश्रम और प्रयास के मुकाबले मिलने कम फल को लेकर चिंतित रह सकते हैं।

धनुः

धनु राशि के जातकों के लिए यह महीना अत्यंत ही शुभ और लाभप्रद रहने वाला है। यदि आप इस माह आलस्य और अभिमान छोड़कर अपने कार्यों को पूरे मनोयोग और व्यवस्थित ढंग से करते हैं तो आपको अप्रत्याशित सफलता और आर्थिक लाभ मिल सकता है। अगस्त महीने की शुरुआत किसी शुभ समाचार से होगी। यदि आप लंबे समय से रोजी-रोजगार की तलाश में भटक रहे थे तो आपकी यह मनोकामना अगस्त महीने के पूर्वार्ध में पूरी हो सकती है। इस दौरान आपके शुभचिंतक एवं इष्टमित्र काफी मददगार साबित होंगे हर निर्णय में आपके साथ तन-मन-धन के साथ खड़े रहेंगे। धनु राशि के जातकों के लिए अगस्त महीने के पूर्वार्ध में लंबी दूरी की यात्रा करनी पड़ सकती है। इस दौरान विदेश यात्रा के भी योग बन सकते हैं। यदि आप विदेश से जुड़े काम करते हैं तो आपको अच्छा लाभ होगा।

मकरः

मकर राशि के जातकों को अगस्त महीने के पूर्वार्ध में छोटे-मोटे विषय को लेकर तिल का ताड़ बचाने से बचना चाहिए। इस दोरान भूमि-भवन से जुड़े विवाद को कोर्ट-कचहरी ले जाने की बजाय आपसी सहमति से हल निकालने का प्रयास करें। अगस्त महीने के मध्य में आपको अपनी सेहत के साथ अपने संबंधों को बेहतर बनाए रखने की दिशा में विशेष प्रयास करने होंगे। इस दौरान लोग आपकी बातों का गलत मतलब निकाल सकते हैं। ऐसे में विवाद की बजाय लोगों के साथ संवाद स्थापित करने की दिशा में काम करें। व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए अगस्त का महीना मिलाजुला साबित होगा। इस माह आपको कारोबार में बड़े उतार-चढ़ाव देखने को मिल सकते हैं। हालांकि यह कारोबार का हिस्सा है और यह स्थिति लंबे समय तक नहीं रहेगी।

कुंभः

कुंभ राशि के जातकों को अगस्त के महीने में किस्मत का पूरा साथ मिलेगा। इस माह आपकी बहुप्रतीक्षित मनोकामना पूरी हो सकती है। अगस्त महीने में आपको जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ते समय शुभचिंतकों का साथ मिलेगा। इस माह आपको गृह, वाहन, पैतृक संपत्ति आदि का सुख मिलने की संभावना बन रही है। यदि आपने किसी संस्था में किसी पद पर दावा पेश किया है या फिर आप किसी बड़े कांट्रैक्ट या जिम्मेदारी को अपने हाथों में लेना चाहते हैं तो आपके द्वारा किया गया प्रयास सफल साबित होगा। किसी प्रभावी व्यक्ति की मदद से आपको कार्य विशेष से संबंधित बड़ी सफलता हासिल होगी। अगस्त महीने के दूसरा सप्ताह आपके लिए थोड़ा खर्चीला साबित हो सकता है। इस दौरान आप अपनी सुख-सुविधा से जुड़ी चीजों पर बड़ी धनराशि खर्च कर सकते हैं। खर्च की अधिकता और आय में कमी के कारण आपका बजट थोड़ा गड़बड़ा सकता है। नौकरीपेशा लोगों के लिए यह समय थोड़ा प्रतिकूल रह सकता है। इस दौरान उनके सिर पर अचानक से बड़ी जिम्मेदारी आ सकती है, जिसे निभाने के लिए उन्हें अतिरिक्त परिश्रम और प्रयास करना पड़ सकता है। अधिक दबाव के चलते इस दौरान आपसे गलतियां होने की आशंका बनी रहेगी।

मीनः

मीन राशि के जातकों के लिए अगस्त का महीना मिलाजुला रहने वाला है। इस महीने आपको बहुत सधे हुए कदमों के साथ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने की आवश्यकता रहेगी। विशेष तौर पर तब जब आपको गैर तो गैर स्वजनों का भी साथ न मिल पा रहा हो। अगस्त महीने की शुरुआत में आपको करियर-कारोबार के सिलसिले में अधिक भागदौड़ करनी पड़ सकती है। इस दौरान आपको भले ही कार्यों में मनचाही सफलता न मिले लेकिन आपके संपर्क मे इजाफा होगा। आपके प्रभावी लोगों के साथ संबंध स्थपित होंगे, जिनकी मदद से भविष्य में लाभप्रद योजनाओं से जुड़ने का अवसर प्राप्त होगा। अगस्त माह के दूसरे सप्ताह में आपको कारोबार में बड़ा उतार-चढ़ाव देखने को मिल सकता है। इस दौरान आय के मुकाबले खर्च की अधिकता रहेगी। अगस्त महीने के मध्य का समय राजनीति एवं समाज सेवा से जुड़े लोगों के लिए अत्यंत ही शुभ साबित होगा। आपको उच्च पद अथवा बड़े सम्मान की प्राप्ति संभव है। इस दौरान भागीदारी पर व्यवसाय करने वालों को विशेष लाभ होगा। इष्ट-मित्रों का सहयोग मिलेगा। आय के नये स्रोत बनेंगे और संचित धन में वृद्धि होगी। माह के उत्तरार्ध में स्वयं के साथ जीवनसाथी की खराब सेहत भी चिंता का कारण बनेगी। रिश्ते-नाते की दृष्टि से मीन राशि के जातकों के लिए अगस्त का महीना आपके लिए मिलाजुला साबित होगा। इस माह आपको प्रेम संबंध में बहुत सावधानी के साथ कदम आगे बढ़ाना होगा क्योंकि छोटी-मोटी बातों पर लव पर पार्टनर से तकरार हो सकती है।

घूमने की बेहतरीन जगहें...

नीलगिरी की पहाड़ियों में बसा कुन्नूर

कूनूर एक प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर छोटा शहर है जो तमिल नाडु राज्य, भारत में स्थित है। यह शहर नीलगिरी पहाड़ियों के हृदय में स्थित है और एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है। कूनूर, ऊटी के पास स्थित है और इसकी शांति, हरा-भरा वातावरण और मालया पहाड़ियों के लिए प्रसिद्ध है। वर्तमान समय में ये दक्षिण का एक जाना माना पिकनिक स्पॉट बन चुका है। यहां आपको कई फॉल्स भी देखने को मिल जाएंगे, जो असल में आप देखना पसंद करते हैं। घने जंगलों में घिरा हुआ यह स्थान किसी स्वर्ग से कम नहीं है, जहां शांति और सुकून के साथ समय बिताने का मौका मिलेगा।

तमिलनाडु में स्थित कुन्नूर ऊटी के पास में तो है ही, इसके साथ ही ये कोयम्बटूर से भी मात्र ७० किमी. की दूरी पर स्थित है, जो अपनी हरी-भरी वादियों से लोगों को आकर्षित करती है। वर्तमान समय में ये दक्षिण का एक जाना माना पिकनिक स्पॉट बन चुका है। यहां आपको कई फॉल्स भी देखने को मिल जाएंगे, जो असल में आप देखना पसंद करते हैं। घने जंगलों में घिरा हुआ यह स्थान किसी स्वर्ग से कम नहीं है, जहां शांति और सुकून के साथ समय बिताने का मौका मिलेगा। यहां आसपास में भी कई ऐसे घूमने वाले स्थान है, जहां घूमने के लिए जाया जा सकता है।

यदि आप पूरे कुन्नूर का मनोरम दृश्य प्राप्त करना चाहते हैं और सूर्योदय और सूर्यास्त का आनंद लेना चाहते हैं, तो लैंब रॉक पर जाना यकीनन काफी अच्छा रहेगा। सर्दियों के मौसम में यात्रा करते समय यह धुंध से भर जाता है। इसलिए, यह जरूरी है कि आपको लैंब रॉक पर जाने से पहले तापमान के स्तर पर ध्यान देना चाहिए। हिडल वैली कुन्नूर में घूमने की बेहतरीन जगहों में से एक है। कुन्नूर के बाहरी इलाके में हरियाली पर बसे, यह जगह एडवेंचर्स पसंद लोगों के लिए एक बेहतरीन जगह है। पर्वतारोहण, रॉक क्लाइम्बिंग और ट्रेकिंग, हिडन वैली के अन्य आकर्षण हैं। वेलिंगटन गोल्फ कोर्स के बाहर और सिम के फॉल्स के पास, घाटी परिवारों के लिए एक आदर्श पिकनिक स्थल और जोड़ों के लिए एक रोमांटिक स्थान है। फूलों की बहुत सारी विदेशी प्रजातियां हैं, जो पूरे देश के पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। वैसे तो इस पार्क की खूबसूरती देखते ही बनती है, लेकिन मई के माह में यहां जाना सर्वाधिक उपयुक्त माना जाता है, क्योंकि कुन्नूर सिम के पार्क में मई में फ्लावर शो आयोजित किया जाता है। यह कुन्नूर में सबसे अधिक देखे जाने वाले पर्यटन स्थल ों में से एक है। आज के समय में यह एक प्रसिद्ध वनस्पति उद्यान है। कैथरीन फॉ

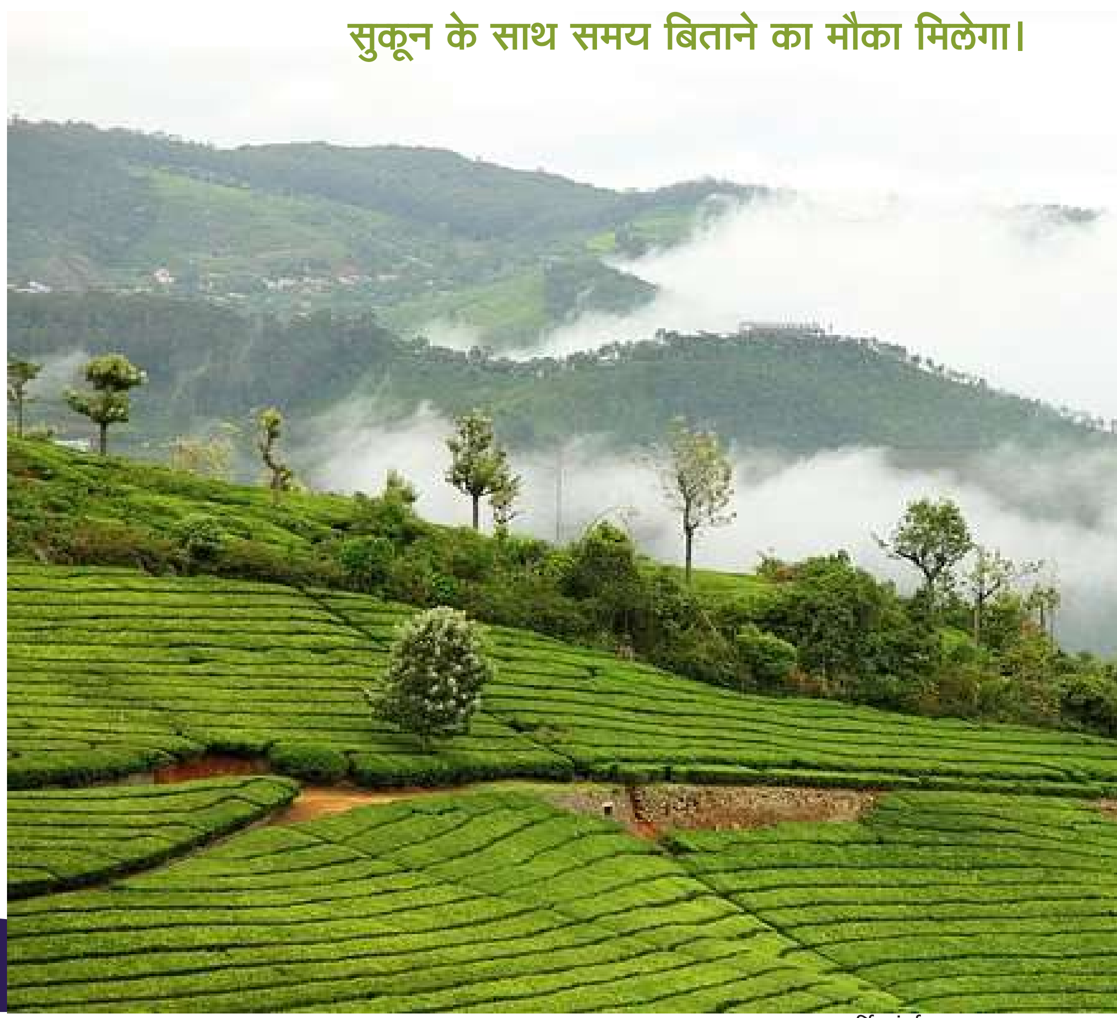

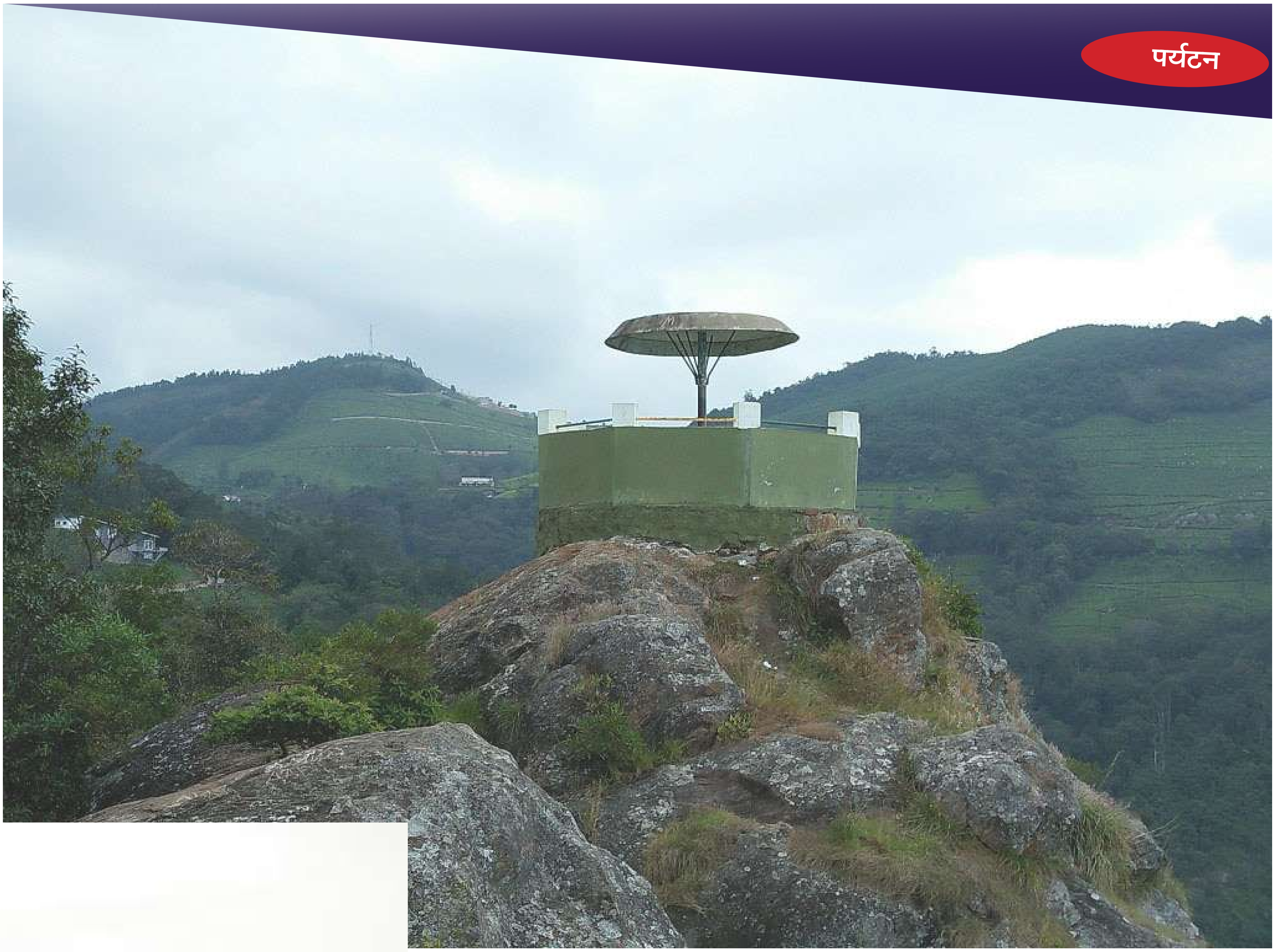

ल्स सबसे अच्छे कुन्नूर आकर्षणों में से एक है, जिसे हर पर्यटक को देखना चाहिए। यह ट्रेकिंग के लिए अद्भुत ट्रेल्स प्रदान करता है।

कूनूर के पर्यटन स्थलों और गतिविधियों के बारे में कुछ महत्वपूर्ण जानकारी ...

सिम्स पार्कः यह एक प्रसिद्ध पार्क है जहाँ विभिन्न प्रकार के पौधे और फूलों को देखा जा सकता है। पार्क के बीच में एक खूबसूरत झील है जहाँ लोग घूम सकते हैं।

लैम्ब्स रॉकः लैम्ब्स रॉक एक उदान खुला स्थल है जहाँ से आप कूनूर के सुंदर दृश्यों को देख सकते हैं। यहाँ से ऊटी शहर की ओर भी सुंदर दृश्य होते हैं।

डॉल्फिन'स नोज़ः इस स्थल से आप नीलगिरी पहाड़ियों के हरित वातावरण को देख सकते हैं। यहाँ से आप डॉल्फिन'स नोज़ के एक सुंदर पत्थर की ओर भी जा सकते हैं।

नीलगिरी माउंटन रेलवेः यदि आप किसी अद्भुत रेल यात्रा का आनंद लेना चाहते हैं, तो नीलगिरी माउंटन रेलवे आपके लिए महत्वपूर्ण है। यह यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया है।

हाईफील्ड चाय फैक्टरीः कूनूर के आस-पास चाय की खेती प्राचीन तरीके से होती है। हाईफील्ड चाय फैक्टरी आपको चाय उत्पादन की प्रक्रिया और इतिहास के बारे में जानकारी प्रदान करता है।

ट्रेकिंगः कूनूर में पर्यटक ट्रेकिंग का आनंद ल ` सकते हैं, जहाँ उन्हें प्राकृतिक सौन्दर्य से ज्यादा गहरा संपर्क बनाने का अवसर मिलता है।

नीलगिरी बायोस्फियर रिजर्व : कूनूर नीलगिरी बायोस्फियर रिजर्व का हिस्सा है, जिसे यूनेस्को ने बायोस्फियर रिजर्व के रूप में मान्यता प्रदान की है। यहाँ के वन और प्राकृतिक सौन्दर्य को देखने का अद्भुत सीन है।

कूनूर के बारे में और रोचक जानकारीः

जलवायुः कूनूर नीलगिरी पहाड़ियों में स्थित है, और यहाँ का जलवायु शांत और मिलनसर होता है। साल के अलग-अलग मौसमों का आनंद लेने के लि ए यहाँ पर्यटक आते हैं।

भूगोलिक स्थितिः कूनूर स्थानिक रूप से ऊटी और कोयम्बटूर से संबंधित है, और यह दोनों शहरों से सड़क और रेल मार्गों से जुड़ा हुआ है।

उन्नत शिक्षाः कूनूर के पास कई शिक्षा संस्थान हैं, जिनमें विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में विकसित करने का अवसर मिलता है।

स्थानीय खाद्यः कूनूर के पास स्थानीय खाद्य विकल्प मौजूद हैं, और यहाँ आप स्वादिष्ट दक्षिण भारतीय खाने का आनंद ले सकते हैं, जैसे कि दोसा, इडली, और उपमा।

शांति और विश्रामः कूनूर एक ऐसा स्थल है जहाँ आप शांति और विश्राम का आनंद ले सकते हैं। यहाँ के हरियाली से घिरे पश्चिमी घाट और प्राकृतिक सौंदर्य के साथ अपने आत्मा को शांति मिलती है।

फिर खूंखार विलेन बनते दिखेंगे बॉबी!

बॉबी देओल की झोली में दनादन बड़ी फिल्में गिरती जा रही हैं। हाल ही में कंगुवा से उनका जबरदस्त लुक सामने आया था। उनके पास एक साउथ फिल्म एनबीके१०९ भी है। खबरें हैं कि जूनियर एनटीआर की ड्रामा फिल्म 'देवरा' में बॉबी देओल अहम रोल में नजर आ सकते हैं। एक रिपोर्ट में दावा किया गया है कि देवरा के लिए बॉबी देओल को एक अहम रोल के लिए अप्रोच किया गया है। बॉबी इस फिल्म में एक विलेन की भूमिका निभा सकते हैं। सैफ अली खान देवारा पार्ट १ में मेन विलेन होंगे और बॉबी इसके अंत एंट्री लेते दिखेंगे। देवारा पार्ट २ में, सैफ और बॉबी दोनों ही खूंखार रोल में होंगे जो फिल्म में एक महत्तवपूर्ण भूमिका होगी।'

हालांकि मेकर्स की तरफ से फिलहाल इसको लेकर कोई भी ऑफिशियल जानकारी नहीं आई है। बता दें, देवरा में जूनियर एनटीआर, सैफ अली खान के साथ जान्हवी कपूर बतौर लीड एक्ट्रेस नजर आएंगी। फिल्म का निर्देशन तेलुगु डायरेक्टर कोरताला सिवा कर रहे हैं। इस वक्त फिल्म की शूटिंग चल रही है। ये फिल्म इस साल १० नवंबर को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

शेखर कपूर भारतीय अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव के निदेशक नियुक्त

'मिस्टर इंडिया', 'बैंडिट क्वीन' और 'एलिजाबेथ' जैसी फिल्मों के लिए मशहूर अनुभवी फिल्म निर्माता शेखर कपूर को भारतीय अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव (इफ्फी) के लिए महोत्सव निदेशक नियुक्त किया गया है। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने एक अधिसूचना में कहा कि कपूर गोवा में हर साल आयोजित किए जाने वाले अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव के ५५वें और ५६वें संस्करण का नेतृत्व करेंगे। कपूर ने कहा कि उन्हें भारतीय अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव का निदेशक नियुक्त किया जाना उनके लिए सम्मान की बात है। उन्होंने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर मंत्रालय को टैग करते हुए एक पोस्ट में कहा, 'यह सम्मान की बात है। यह प्रतिबद्धता है। यह जिम्मेदारी है। मुझे अपने भरोसे के लायक समझने के लिए आपका धन्यवाद।'

भारतीय सिनेमा में ७८ वर्षीय कपूर एक प्रभ-ावशाली व्यक्ति हैं। वह फिल्म 'एलिजाबेथ' और इसके दूसरे संस्करण 'एलिजाबेथः द गोल्डन एज' के साथ हॉलीवुड में ख्याति हासिल करने वाले शुरुआती निर्देशकों में से एक हैं। कपूर ने हिंदी सिनेमा की 'मासूम', 'मिस्टर इंडिया' और 'बैंडिट क्वीन' जैसी फिल्मों का निर्देशन किया है।

पेरिस ओलंपिक : कीट डीम्ड विश्वविद्यालय के १२ खिलाड़ी क्वालीफाई...

कीट -कीस के संस्थापक ने प्रत्येक एथलीट को ७-७ लाख रुपये देने की घोषणा की

मीडिया को जानकारी देते हुए डॉ. सामंत ने कहा कि कीट -कीस भारत का पहला ऐसा संगठन है जिसने, सबसे अधिक खिलाड़ियों को ओलंपिक में भेजा है। उन्होंने यह भी बताया कि कीट -कीस ने २० ओलंपियन और २ पैरालिंपियन पहले ही तैयार किए हैं, जिन्होंने २०१६ रियो ओलंपिक, २०२० टोक्यो ओलंपिक में भारत का प्रतिनिधित्व किया और २०२४ पेरिस ओलंपिक में देश का प्रतिनिधित्व करेंगे।

भुवनेश्वर, १८ जुलाईः कीट डीम्ड विश्वविद्यालय (KIIT-DU), भुवनेश्वर के लिए एक बड़ी उपलब्धि यह है कि इसके १२ प्रतिभावान खिलाड़ी २६ जुलाई से शुरू होने वाले पेरिस ओलंपिक २०२४ के लिए सफलतापूर्वक क्वालीफाई कर लिये हैं, जिससे कीट संस्थान को गर्व और खुशी हुई है। कीट देश का पहला ऐसा विश्वविद्यालय है जो भारत के सभी विश्वविद्यालयों में एथलीटों का सबसे बड़ा दल भेज रहा है। कीट -कीस के संस्थापक डॉ. अच्युत सामंत ने प्रत्येक एथलीट को ७-७ लाख रुपये देने की घोषणा की है, जिससे उन्हें इस क्षेत्र में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने और देश का नाम रोशन करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके।

जिन एथलीटों ने अपना स्थान अर्जित किया है, वे हैं - पुरुष हॉकी में अमित रोहिदास, भाला फेंक में किशोर कुमार जेना; ३००० मीटर स्टीपलचेज़ और ५००० मीटर में पारुल चौधरी, २० किमी रेस वॉक और मैराथन रेस वॉक मिक्स्ड रिले में प्रियंका; जेवलिन थ्रो में अन्नू रानी; १०० मीटर बाधा दौड़ में ज्योति याराजी; शॉटपुट में तजिंदरपाल सिंह तूर; शॉटपुट में आभा खटुआ; ४×४०० मीटर रिले रेस में प्राची; ५००० मीटर में अंकिता; २० किमी रेस वॉक में परमजीत सिंह बिष्ट और मैराथन रेस वॉक मिक्स्ड रिले टीम में सूरज पंवार।

कीट -कीस के संस्थापक डॉ. अच्युत सामंत ने भुवनेश्वर में एक विशेष कार्यक्रम में गौरवान्वित दल को बधाई देते हुए कहा, 'आपकी कड़ी मेहनत और समर्पण ने आपको इस प्रतिष्ठित मंच पर पहुंचाया है।' उन्होंने प्रत्येक खिलाड़ी को ७ -७ लाख रुपये की नकद सहायता की घोषणा की। सभी १२ खिलाड़ी जो वर्तमान में यूरोप के विभिन्न देशों में विभिन्न शिविरों में हैं, कार्यक्रम में वर्चुअली शामिल हुए।

मीडिया को जानकारी देते हुए डॉ. सामंत ने कहा कि कीट -कीस भारत का पहला ऐसा संगठन है जिसने सबसे अधिक खिलाड़ियों को ओलंपिक में भेजा है। उन्होंने यह भी बताया कि कीट -कीस ने २० ओलंपियन और २ पैरालिंपियन पहले ही तैयार किए हैं, जिन्होंने २०१६ रियो ओलंपिक, २०२० टोक्यो ओलंपिक में भारत का प्रतिनिधित्व किया और २०२४ पेरिस ओलंपिक में देश का प्रतिनिधित्व करेंगे।

उन्होंने कहा कि कीट -कीस को ७ अर्जुन पुरस्कार विजेताओं पर गर्व है। 'हमें खुशी है कि कीट के १२ प्रतिभावान खिलाड़ी पेरिस ओलंपिक २०२४ में भाग ले रहे हैं, जिससे हमें और देश को गर्व होगा। अपना सर्वश्रेष्ठ दें और अपनी उपलब्धियों से चमकें। पूरा कीट -कीस परिवार आपके पीछे खड़ा है और आपका उत्साहवर्धन कर रहा है' ।

उन्होंने कहा, इन प्रतिभाशाली एथलीटों ने असाधारण कौशल और समर्पण का प्रदर्शन किया है प्रोफेसर सरनजीत सिंह, कुलपति, कीट डीम्ड विश्वविद्यालय प्रोफेसर ज्ञान रंजन मोहंती, कुल सचिव, कीट डीम्ड विश्वविद्यालय, संजय कुमार गार्नाईक, मुख्य एथलेटिक कोच और डॉ. गगनेंदु दाश, महानिदेशक, खेल एवं योग, कीट डीम्ड विश्वविद्यालय भी अवसर पर उपस्थित थे।

जापान के प्रख्यात कोयासन विश्वविद्यालय द्वारा डॉ.अच्युत सामंत को मिली मानद डॉक्टरेट की डिग्री

अपने स्वीकृति भाषण में डॉ. सामंत ने कहा, 'यह एक ऐसा प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय है जिसका इतिहास लगभग १०० साल से अधिक पुराना है। उन्होंने मेरी शिक्षा और सामाजिक सेवा कार्यों के सम्मान में मुझे यह पुरस्कार प्रदान किया है।' इस मोह -माया के संसार में अपना कोई नहीं है। इस स्वार्थी जीवन में सभी को पैसा चाहिए। तमाम भौतिक सुख चाहिए। अच्छी नौकरी चाहिए। सामाजिक मान- मर्यादा चाहिए। इस जीवन में कोई किसी को कुछ देना नहीं चाहता है, सिर्फ दूसरों से लेना चाहता है। ज़रा सोचिए कि प्रत्येक व्यक्ति केवल लेना चाहेगा, देना नहीं चाहेगा तो हमारे परिवार, समाज और देश का विकास कैसे होगा? समुद्र की बड़ी मछलियां छोटी मछलियों को खाती हैं। जमींदार गरीब का शोषण करता है। पूंजीपति सर्वहारा का शोषण करता है और हमारे राजनेता देश की निरीह जनता का शोषण करते हैं। ऐसे में, आपका नैतिक दायित्व क्या है? आज आप जरा सोचें!

जापान के प्रतिष्ठित एवं प्रख्यात कोयासन विश्वविद्यालय ने २४ जुलाई को अपने परिसर में अपने बहुप्रतीक्षित दौरे के दौरान कीट -कीस के संस्थापक डॉ. अच्युत सामंत को औपचारिक रूप से मानद डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की। डॉ. सामंत १०० साल से अधिक पुराने कोयासन विश्वविद्यालय से यह प्रतिष्ठित डॉक्टरेट की मानद डॉक्टरेट प्राप्त करने वाले दूसरे भारतीय हैं। उनसे पहले महाराष्ट्र के तत्कालीन मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस को यह प्रतिष्ठित डॉक्टरेट की उपाधि मिली थी। यह डॉ. सामंत की ५८वीं मानद डॉक्टरेट की उपाधि है।

कोयासन विश्वविद्यालय के अध्यक्ष सोएदा रयुशो ने ओसाका-कोबे में भारत के महावाणिज्यदूत श्री निखिलेश गिरि और विश्वविद्यालय के अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में यह उपाधि प्रदान की।

अपने भाषण में सोएदा रयुशो ने कहा कि मानवता के प्रति उनके निस्वार्थ और अथक योगदान के सम्मान और आभार में कोयासन विश्वविद्यालय ने सर्वसम्मति से डॉ. सामंत को यह मानद डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान करने का निर्णय लिया है। अपने स्वीकृति भाषण में डॉ. सामंत ने कहा, 'यह एक ऐसा प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय है जिसका इतिहास लगभग १०० साल से अधिक पुराना है। उन्होंने मेरी शिक्षा और सामाजिक सेवा कार्यों के सम्मान में मुझे यह पुरस्कार प्रदान किया है।'

इस मोह -माया के संसार में अपना कोई नहीं है। इस स्वार्थी जीवन में सभी को पैसा चाहिए। तमाम भौतिक सुख चाहिए। अच्छी नौकरी चाहिए। सामाजिक मान- मर्यादा चाहिए। इस जीवन में कोई किसी को कुछ देना नहीं चाहता है, सिर्फ दूसरों से लेना चाहता है। ज़रा सोचिए कि प्रत्येक व्यक्ति केवल लेना चाहेगा, देना नहीं चाहेगा तो हमारे परिवार, समाज और देश का विकास कैसे होगा? समुद्र की बड़ी मछलियां छोटी मछलियों को खाती हैं। जमींदार गरीब का शोषण करता है। पूंजीपति सर्वहारा का शोषण करता है और हमारे राजनेता देश की निरीह जनता का शोषण करते हैं। ऐसे में, आपका नैतिक दायित्व क्या है? आज आप जरा सोचें!

ओडिशा हलचल

कीट डीम्ड विश्वविद्यालय को मिला प्रतिष्ठित UN ECOSOC विशेष परामर्शदात्री का दर्जा

अमेरिकी विदेश विभाग और कई अन्य भागीदारों के दृढ़ समर्थन के साथ, अमेरिका और दुनिया भर के १२९ देशों और क्षेत्रों में ८,९०० से अधिक मार्गदर्शक हमारे जीवन-परिवर्तनकारी विनिमय कार्यक्रमों में शामिल हुए हैं। अपनी खुशी जाहिर करते हुए कीट और कीस के संस्थापक डॉ.अच्युत सामंत ने कहा , 'यह गर्व की बात है कि कीट भारत का एकमात्र व्यावसायिक/तकनीकी विश्वविद्यालय है, जिसने UN ECOSOC विशेष सलाहकार का दर्जा हासिल किया है। साथ ही, भारत में, कीट और ओडिशा में कीस दोनों को यह प्रतिष्ठित पुरस्कार मिलने पर हमें ख़ुशी है।' उन्होंने यह भी बताया कि कीस को पहले ही २०१५ में UN ECOSOC विशेष सलाहकार का दर्जा दिया जा चुका है और आज तक इस दर्जे पर अपना स्थान बनाए हुए है।

कीट डीम्ड विश्वविद्यालय को संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक परिषद (UN ECOSOC) द्वारा प्रतिष्ठित विशेष परामर्शदात्री का दर्जा प्रदान किया गया है। संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक परिषद् सतत विकास लक्ष्यों (SDG) में विश्वविद्यालय के महत्त्वपूर्ण योगदान को मान्यता देता है। दुनिया भर से ४७६ आवेदनों में से, कीट डीम्ड विश्वविद्यालय सहित केवल १९ संगठनों को इस प्रतिष्ठित सम्मान के लिए चुना गया। २३ जुलाई, २०२४ को न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में आयोजित UN ECOSOC प्रबंधन खंड की बैठक के दौरान इस दर्जे हेतु कीट डीम्ड विश्वविद्यालय को नवाजा गया।

यह मान्यता संयुक्त राष्ट्र के एजेंडा २०३० और एउ३ के प्रति कीट की अटूट प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है। विशेष परामर्शदात्री दर्जा प्राप्त करना एक महत्त्वपूर्ण कीर्तिमान है। यह दर्जा वैश्विक स्तर पर उन चुनिंदा विश्वविद्यालयों के समूह में स्थान देता है जिन्होंने यह प्रतिष्ठित सम्मान अर्जित किया है।

इसी के साथ एक अन्य विकास में कीट ने UN वालंटियर्स (UNV) के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया है। यह भागीदारी कीट डीम्ड विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए विभिन्न UN एजेंसियों के साथ जुड़कर 'राष्ट्रीय विश्वविद्यालय UN स्वयं-सेवक' के रूप में काम करने का एक उल्लेखनीय अवसर प्रदान करती है, जिन्हें UN एजेंसियों के भीतर विभिन्न विकास पहलों के लिए तैनात किया जाएगा।

ये अवसर कीट छात्रों को अंतर्राष्ट्रीय विकास में मूल्यवान पेशेवर का अनुभव करने का मौका देगा , जिससे वे उचित वेतन के साथ अपने भविष्य के कैरियर पथ को सही आकार दे सकेंगे। यह पहल पूरे दक्षिण एशिया में किसी भी निजी विश्वविद्यालय के लिए पहली पहल है। इसी तरह, अमेरिकन काउंसिल ऑफ यंग पॉलिटिकल लीडर्स (ACYPL) ने कलिंगा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज (कीस) और कीट के साथ अपने ऐतिहासिक सहयोग की घोषणा की है।

वैश्विक अधिनायक अमेरिकन काउंसिल ऑफ यंग पॉलिटिकल लीडर्स (ACYPL), जो अंतर्राष्ट्रीय समझ और कूटनीति को बढ़ावा देने में एक अहम् भूमिका निभाता है। कीस कीट की सहयोगी संस्था है। अमेरिकी विदेश विभाग और कई अन्य भागीदारों के दृढ़ समर्थन के साथ, अमेरिका और दुनिया भर के १२९ देशों और क्षेत्रों में ८,९०० से अधिक मार्गदर्शक हमारे जीवन-परिवर्तनकारी विनिमय कार्यक्रमों में शामिल हुए हैं।

अपनी खुशी जाहिर करते हुए कीट और कीस के संस्थापक डॉ.अच्युत सामंत ने कहा , 'यह गर्व की बात है कि कीट भारत का एकमात्र व्यावसायिक/तकनीकी विश्वविद्यालय है, जिसने UN ECOSOC विशेष सलाहकार का दर्जा हासिल किया है। साथ ही, भारत में, कीट और ओडिशा में कीस दोनों को यह प्रतिष्ठित पुरस्कार मिलने पर हमें ख़ुशी है।' उन्होंने यह भी बताया कि कीस को पहले ही २०१५ में UN ECOSOC विशेष सलाहकार का दर्जा दिया जा चुका है और आज तक इस दर्जे पर अपना स्थान बनाए हुए है।

उन्होंने यह भी बताया कि कीट दक्षिण एशिया का एकमात्र ऐसा विश्वविद्यालय है, जिसे इंटर्नशिप के लिए छात्रों को जोड़ने के लिए UNV का दर्जा मिला है। उन्होंने कहा कि, ACYPL KIIT के लिए एक बहुत ही प्रतिष्ठित उपलब्धि है, जिससे दुनिया भर से राजनीतिक राजनयिकों और नेताओं को कीट और कीस आने के लिए प्रेरित किया जा सके।

भगवान जगन्नाथ का सोना वेश उनकी ऐश्वर्य लीला का जीवंत प्रमाण है...

जगत के नाथ भगवान जगन्नाथ नर रुप में नारायण हैं। वे कलियुग के एकमात्र पूर्ण दारुब्रह्म हैं जो साल के ३६५ दिन तक अपनी दो मुख्य लौकिक-अलौकिक लीलाओं के माध्यम से भक्तों की आस्था और विश्वास के इष्टदेव अनादि काल से बने हुए हैं। वे ओड़िशा प्रदेश के आध्यात्मिक राजराजेश्वर हैं। राजाओं के राजा हैं। वे आज भी साल में एकबार रथारुढ़ होकर सोना वेश धारण कर अपनी वास्विक ओड़िया अस्मिता को स्पष्ट करते हैं। एक तरफ उनकी पहण्डी विजय उनकी अपनी सेवायतों के प्रति उनके सखाभाव को स्पष्ट करती है ठीक उसी प्रकार सोना वेश के दिन तीनों रथों (ताल ध्वज, देवदलन तथा नंदिघोष रथ पर) पर श्रीमंदिर के सिंहारी, पालिया, खुंटिया, भंडार मेकप, चांगड़ा मेकप सेवकों के द्वारा सोना वेश धारण कर वे वास्तविक और यथार्थ़ रुप में अपनी ओड़िया अस्मिता (ओड़िशा के आध्यात्मिक राजाधिराज) को स्पष्ट करते हैं।

रथारुढ़ होकर सोना वेश धारण करना उनकी उनकी ऐश्वर्य लीला है जिसे १७ जुलाई को देखा। श्रीमंदिर के रत्नभण्डार में रखे कुल बारह हजार तो-ले के सोने के अनेक आभूषण, हीरे-जवाहरात आदि से उनको सुशोभित किया जाएगा। चतुर्धा देवविग्रह रथारुढ़ उस दिन नख से मस्तक तक स्वर्णाभूषणों से श्रीमंदिर प्रशासन पुरी के पूरे विधि-विधान के साथ सुशोभित किये जाएंगे। सच तो यह भी है कि दारुब्रह्म और ब्रह्मदारु भगवान जगन्नाथ के रुप में अपनी इस ऐश्वर्य लीला के माध्यम से यह भी संदेश देना चाहते हैं कि वे आज भी ओड़िशा के आध्यत्मिक राजाधिराज हैं। दारुब्रह्म का अभिप्राय ऋग्वेद तथा स्कंद पुराण में स्पष्ट है।

जीव और ब्रह्म के निरुपाधिक धरातल पर एकत्व का द्योतक है- दारुब्रब्म शब्द और ब्रह्म और जीव के निरुपाधिक धरातल पर एकत्व का द्योतक है- ब्रह्मदारु शब्द। श्रीमद्भागवत में अष्टविध प्रतिमा में दारुमयी प्रतिमा का उल्लेख मिलता है। इसीलिए नील मेघमण्डल के समान श्रीजगन्नाथ जी हैं। शंख तथा चन्द्रमा के समान श्री बलभद्रजी हैं। कुमकुम के समान अरुणा सुभद्राजी हैं तथा लाल वर्ण के सुदर्शनजी हैं।भगवान रुद्र ही कृष्ण जी की वंशी हैं।

श्रीमंदिर में भगवान जगन्नाथ के सोने वेश में सु-शोभित किये जाने की परम्परा सुदीर्घ है। उनको साल

में सिर्फ एक बार जगन्नाथ मंदिर के बाहर रथ के ऊपर सोना वेश में सजाया जाता है। इसके अलावा पांच बार श्रीमंदिर के रत्नसिंहासन पर चतुर्धा विग्रहों को सोना वेश में सजाया जाता है।वे पवित्र अवसर हैःकार्तिक पूर्णिमा, पौष पूर्णिमा, डोल पूर्णिमा अथवा दशहरा तथाकुमारपूर्णिमा के दिन।

भगवान जगन्नाथ के सोना वेश की परम्परा

ओड़िशा के सूर्यवंशी शासकों ने भगवान जगन्नाथ के लिए कीमती आभूषण और सोना दान किया है।- जगन्नाथ मंदिर की दीवार पर एक शिलालेख में लिखा है कि गजपति कपिलेंद्र देव ने १४६६ ईस्वी में भगवान जगन्नाथ को बड़ी मात्रा में सोने और रत्नों के आभूषण और बर्तन दान किए थे। हलफनामे के अनुसार, भी-तरी कक्ष में ५० किलो ६०० ग्राम सोना और १३४ किलो ५० ग्राम चांदी है। बाहरी कक्ष में ९५ किलो ३२० ग्राम सोना और १९ किलो ४८० ग्राम चांदी है।

श्रीमंदिर प्रशासन पुरी से प्राप्त जानकारी के अनु-सार आगामी १७ जुलाई को श्रीमंदिर में मंगल आरती, मइलम, तड़प लागी, अवकाश, वेश संपन्न, गोपाल बल्लभ भोग, सकाल धूप, महास्नान तथा सर्वांग वेश आदि नीति संपन्न होने के बाद चतुर्धा विग्रहों को सोने के वेश में उन्हें रथारुढ़ ही सजाया। सिंहारी, पालिया, खुंटिया, भण्डार मेकप, चांगड़ा मेकप सेवायत उन्हें अनेक प्रकार के स्वर्णाभूषणों से सजाया।

सोना वेष के प्रमुख आभूषण

महाप्रभु जगन्नाथ को श्रीभुज, श्रीपयर, किरीट, चन्द्र, सूर्य, आइकानी, घागड़माली, कदम्बमाली, तिलक, चन्द्रिका, अलका, झोबा कंठी, स्वर्ण चक्र तथा चांदी के शंख, हरिड़ा, कदम्ब माली, बाहाड़ा माली, ताबिज माली, सेवती माली, त्रिखंडिका, त्रिख-ंडिका कमरपट्टी आदि आभूषणों से सजाया जाएगा। इसीप्रकार बलभद्र जी को श्रीपयर, श्रीभुज, कुंडल, चन्द्र, सूर्य, आइकानी, घागड़ा माली, कदम्ब माली, तिलक, चन्द्रिका, अलका, झोबा कंठी, हल, एवं मुसल, बाहाड़ा माली, बाघनख, सेवती माली, त्रिखंडिका कमरपट्टी आदि आभूषण से सजाया।

देवी सुभद्रा के विशेष आभूषणों में शामिल है- कि-रीट, कान, चन्द्र सूर्य, घागड़ा माली, कदम्ब माली, दो तगड़ी, सेवती माली आदि। इसप्रकार महाप्रभु जगन्नाथ अपनी माधुर्य लीला (साल के १२ महीनों में कुल १३ उत्सव का मनाया जाना, प्रतिदिन उनका विभिन्न वेश धारण करना, उनका ५६ प्रकार का भोग ग्रहण करना, प्रतिदिन हीतगोविंद सुनना आदि शामिल हैं) तथा सोना वेश में अपनी ऐश्वर्य लीलाकर न केवल अपने लीलाश्रेत्र पुरी धाम को आनंदित करते हैं अपितु रथारुढ़ होकर वे सोना वेश धारणकर अपने राज-राजेश्वर रुप को स्पष्ट करते हैं, अपने आपको ओड़िशा का आध्यात्मिक सम्राट बताते हैं।

अशोक पाण्डेय

इंजीनियर के पास अकूत संपत्ति

८५ प्लॉट, गोल्ड बिस्किट, लाखों का कैश...

सतर्कता विभाग ने ओडिशा पुलिस हाउसिंग एंड वेलफेयर कॉरपोरेशन (ओपीएचडब्ल्यूसी) के उप प्रबंधक प्रताप कुमार सामल के स्वामित्व वाले भुवनेश्वर और भद्रक के १० अलग-अलग स्थानों पर आय के ज्ञात स्रोतों से अधिक संपत्ति रखने के लिए कई संपत्तियों पर छापा मारा. अधिकारियों ने कहा कि जब सतर्कता अधिकारी सामल के आवास पर पहुंचे, तो घबराए हुए अधिकारी ने नकद २० लाख रुपए छिपाने की कोशिश की.

अब तक सामल और उसकी पत्नी के नाम से कुल ३८.१२ लाख रुपए नकद और २५ अचल संपत्तियां जब्त की गई हैं. उनके पास भद्रक जिले के बासुदेवपुर में पांच जमीन और एक इमारत, भुवनेश्वर में १७ जमीन और खुर्दा में दो इमारतें थीं. सतर्कता विभाग के अनुसार, संपत्तियां भुवनेश्वर के प्रमुख स्थानों में हैं और वहां पांच मंजिला इमारत की लागत ३.८९ करोड़ रुपए है.

(सांकेतिक तस्वीर)

देश के सरकारी अफसर हर दिन भ्रष्टाचार के नए कीर्तिमान बनाते रहते हैं. नोएडा अथॉरिटी के अरबपति चीफ इंजीनियर यादव सिंह को कौन भूल सकता है. उसके पास इतनी प्रॉपर्टी निकली की उसका रिकॉर्ड बनाने वाले भी भौंचक्के रह गए थे. अब ओडिशा में भी ऐसे ही एक हाई रैंक वाले करोड़पति इंजीनियर का पता चला है. विजिलेंस डिपार्टमेंट की जांच में इंजीनियर के पास एक या दो नहीं, बल्कि ८५ प्लॉट होने का पता चला है. आरोपी इंजीनियर का काला साम्राज्य ओडिशा से लेकर पश्चिम बंगाल तक फैला हुआ पाया गया. विजिलेंस टीम फिलहाल आय से अधिक संपत्ति के मामले में घिरे उच्च पदस्थ इंजीनियर के बैंक खाते और अन्य फाइनेंशियल रिकॉर्ड को खंगाल ने में जुटी है.

ओडिशा की विजिलेंस टीम ने शुक्रवार को एक उच्च पदस्थ इंजीनियर की करोड़ों रुपये की संपत्ति का खुलासा किया है. इसमें ८५ प्लॉट, एक सोने का बिस्किट और अन्य कीमती सामान शामिल हैं. इंजीनियन की पहचान प्रवास कुमार प्रधान के तौर पर की गई है. वह आनंदपुर बैराज डिवीजन में तैनात हैं. हाई-प्रोफाइल अधिकारियों से जुड़ा यह तीसरा मामला है, जिसमें सीनियर अफसर के पास व्यापक पैमाने पर प्रॉपर्टी होने का पता चला है. पिछले सप्ताह में एंटी करप्शन विंग ने एक्साइज डिपार्टमेंट के एक अधिकारी के स्वामित्व वाले ५२ प्लॉट और एक अन्य वरिष्ठ इंजीनियर और उसके परिवार के स्वामित्व वाले ३४ भूखंडों का पता लगाया था.

विजिलेंस डिपार्टमेंट ने बताया कि उनके अधिकारियों ने एक मार्केट कॉम्प्लेक्स, एक पांच मंजिला इमारत और ८५ भूखंडों का पता लगाया है. इनमें से एक प्रॉपर्टी पश्चिम बंगाल में भी है. साथ ही २१८ ग्राम सोना, एक सोने के बिस्किट और ११ लाख रुपये कैश का भी पता चला है. जानकारी के अनुसार, क्योंझर के सलापड़ा में आनंदपुर बैराज डिवीजन के चीफ कंस्ट्रक्शन इंजीनियर प्रवास कुमार प्रधान के कब्जे में ११.७ लाख रुपये भी मिले हैं. बयान में कहा गया है, 'प्लॉट प्रधान द्वारा अलग-अलग वर्षों में अपने नाम के साथ-साथ अपने परिवार के सदस्यों के नाम पर खरीदे गए थे. इनका कुल मूल्य २ करोड़ रुपये से अधिक है. हालांकि, वास्तविक मूल्य अधिक होने की संभावना है. फिलहाल इसकी पुष्टि की जा रही है.'

अधिकारियों ने बताया कि बैंक खाते, डाक, बीमा और अन्य जमा खातों का भी पता लगाया जा रहा है और तलाशी जारी है. इस सप्ताह की शुरुआत में एक्साइज डिपार्टमेंट के ज्वाइंट सीपी रामचंद्र मिश्रा को आय के ज्ञात स्रोत से अधिक संपत्ति अर्जित करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था. उनके पास छह बहुमंजिला इमारतों और दो अपार्टमेंट के अलावा ५२ प्लॉट का कब्ज़ा पाया गया. एक अन्य घटना में विजिलेंस डिपार्टमेंट ने उत्तर प्रदेश के मथुरा में एक और बोलांगीर के लोअर सुकटेल प्रोजेक्ट के मुख्य निर्माण अभियंता सुनील कुमार राउत के कब्जे में आठ एकड़ में फैले एक फार्महाउस सहित ३४ भूमि भूखंडों का पता लगाया था.

जानिए सावन और शिव के जलाभिषेक की कथा ...

आज से लगभग २० हजार वर्ष पूर्व वाराह काल में यह धरती हिमयुग की चपेट में थी।उन दिनों भगवान शिव ने धरती के केन्द्र कैलास (कैलाश नहीं) को शिवलोक बनाया और वहीं पर वे तप में लीन हो गए। तभी सप्तर्षि भगवान शिव को अपना गुरु बनाने के लिए उनकी तपस्या में लीन हो गए। ऐसा उल्लेख मिलता है कि सप्तर्षियों की करीब ८४ वर्षों की घोर तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने आषाढ़ मास की पूर्णिमा के दिन उन्हें अपना शिष्य बना लिया और तभी से गुरु पूर्णिमा मनाने की सनातनी परम्परा का आरंभ हुआ। सावन माह को शिव का माह माना जाता है। इस माह में भगवान शिव की पूजा विग्रह रुप में की जाती है। भगवान शिव प्रकृति के आदि देव हैं जो मात्र जलाभिषेक से ही प्रसन्न हो जाते हैं।शिव महापुराण के अनुसारः जलाभिषेक से वर्षा, गन्ने के रस से अभिषेक करने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। मधु और घी से अभिषेक करने से धन की प्राप्ति होती है। दूधाभिषेक से संतान की प्राप्ति होती है। बेलपत्र संग जलाभिषेक से मन की शांति मिलती है। सरसों और तिल चढ़ाने से शत्रु का नाश तथा रोगों से मुक्ति मिलती है।सच कहा जाए तो शिव लिंग वातावरण के साथ अनंत ब्रह्माण्ड की धुरी है शिव लिंग। इसलिए समस्त शिव भक्तों सावन जिसकी शुरुआत आज से अर्थात् २२ जुलाई से हो चुकी है,आप भी भगवान शिव को जलाभिषेक अवश्य करें!

-अशोक पाण्डेय

झूठ बोलने के आधुनिक शौक से बचें और देश के शक्ति बोध और सौंदर्य बोध को विकसित करें

जी हां, झूठ बोलने का आधुनिक शौक अब भारत समेत यूरोपीय देशों में भी बड़ी तेजी से फल -फूल रहा है जिसको सबसे अधिक बढ़ावा दे रहा है भारत का अत्यधिक कारोबारी तथा व्यापारी वर्ग, श्रमिक वर्ग और विभिन्न मिस्री वर्ग,हजाम,मोची, धोबी,ड्राइवर और प्लंबर वर्ग, डाक्टर, नर्स,शिक्षक, विभिन्न कौशलों के प्रशिक्षित वर्ग, अधिकारी वर्ग, कर्मचारी वर्ग, राजनेता और उनके शागिर्द वर्ग, डेली ठेला लगानेवाले, दूध बेचने वाले, राशन बेचने वाले और सरकार व गैर सरकारी वर्ग के तृतीय और चतुर्थ वर्गीय कर्मचारी वर्ग आदि। एक युग वह था जब उसे सत्ययुग कहा जाता था। आप तो जानते हैं कि सत्य की रक्षा के लिए सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र ने सपने में अपना राजपाट तक दान में दे दिया था। यहां तक कि अपनी पत्नी और पुत्र को भी सत्य की रक्षा के लिए बेच दिया था। लेकिन आज के आधुनिक युग में झूठ बोलने का शौक बड़ी तेजी से फल -फूल रहा है।

एक बार स्वामी रामतीर्थ जी जापान की यात्रा पर थे। उन दिनों वे सिर्फ फलाहार पर थे। वहां के एक स्टेशन पर उनको कहीं भी फल नजर नहीं आया। वे स्वतः सोचे और उनकी जुबान से बस इतना ही निकला कि लगता है कि जापान में ताजे फल नहीं मिलते। उनकी आवाज एक जापानी युवक ने सुनी जो अपनी नई -नवेली पत्नी को उस स्टेशन पर छोड़ने के लिए आया था,वह अपने पत्नी मोह से अपने आपको कुछ देर के लिए अलग किया और स्टेशन से बाहर जाकर ताजे फलों की एक टोकरी लाकर स्वामी जी को भेंट कर दिया। स्वामी जी ने जब फलों की कीमत पूछी तो युवक ने जवाब दिया कि आप स्वदेश जाकर यह न कहेंगे कि जापान में ताजे फल नहीं मिलते हैं। इसलिए मेरे मित्रों, झूठ बोलने के आधुनिक शौक से बचें और भारत के सौंदर्य और शक्ति बोध को भी समझें। भारतवर्ष आपके इस सहयोग से निश्चित रूप से विकसित हो जाएगा।

-अशोक पाण्डेय

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

प्रतियोगिता नंबर-८६

सभी के लिए सुनहरा अवसर!

दीजिए आसान से सवालों का जवाब और

जीतिये 1,000/- का नकद इनाम!

प्रश्न १ : भारतीय संविधान में कितनी भाषाएं है?

प्रश्न २ : भारत के किस राज्य की आबादी सबसे ज्यादा है?

प्रश्न ३ : मिल्खा सिंह को क्या कहा जाता है?

प्रश्न ४ : भारत का सबसे बड़ा राज्य कौन सा है?

प्रश्न ५ : भारत में कितने राज्य और कितनी यून्यन टेरिटॉरी है?

प्रश्न ६ : भारत के 14th प्रधानमंत्री कौन है?

प्रश्न ७ : गुप्त काल में कौन सी गुफाएँ निर्मित की गयी थी?

प्रश्न ८ : ७ अजूबों में से कौन सा अजूबा आगरा में स्थित है?

प्रश्न ९ : सह्याद्रि को और किस नाम से जाना जाता है?

प्रश्न १० : भारत की सबसे पुरानी पर्वत श्रृंखला कौन सी है?

प्रश्न ११ : ट्विन सिटीज कौन से दो शहरों को कहा जाता है?

प्रश्न १२ : भारत के राष्ट्र पिता कौन है?

प्रश्न १३ : हमारा राष्ट्रगान किसने लिखा था?

प्रश्न १४ : फादर ऑफ द इंदीयन कॉन्स्टिट्यूशन किसे कहा जाता है?

प्रश्न १५ : भारत का गणतंत्र दिवस कब मनाया जाता है?

आपके द्वारा सही जवाब की पहेली इस माह की २५ तारीख तक डाक द्वारा हमारे कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए। भरी गयी पहेली का रिजल्ट लॉटरी सिस्टम द्वारा निकाला जाएगा। विजेता के नाम और सही हल अगले माह के अंक में प्रकाशित किये जाएंगे। परिजन विजेता बच्चे का फोटो व उसका पहचान पत्र लेकर हमारे कार्यालय में आएं और मुंबई के बाहर रहने वाले विजेता अपने पहचान पत्र की सत्यापित प्रति डाक या मेल से निम्न पते पर भेजें।

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. ,
Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
mangsom@rediffmail.com
Website: swarnimumbai.com

नामः...

पूरा पताः ....

....

....

....

फोन नं.: ....

स्मार्टफोन की लत में फंसे बच्चे...

स्मार्टफोन की लत को नोमोफोबिया कहा जाता है। नोमोफोबिया के शिकार व्यक्ति फोन से दूर रहते ही बेचैन हो जाता है। वो बार-बार फोन चेक करता रहता है। दुनियाभर में हुए एक सर्वे के अनुसार ८४% उपभोक्ताओं ने स्वीकार किया कि वे बिना फोन के थोड़ी देर भी नहीं रह सकते।स्मार्टफोन की लत यानी नोमोफोबिया हमारे शरीर के साथ-साथ दिमागी सेहत को भी प्रभावित करता है। बच्चों और किशोरों के लिए ये स्थिति ज्यादा खतरनाक है। २० से ३० साल के लगभग ६०% युवा नोमोफोबिया के शिकार हैं। कई स्टडी से ये साबित हुआ है कि स्मार्टफोन पर लगातार आने वाले नोटिफिकेशन हमारे दिमाग को उसी तरह अलर्ट रखते हैं जिस तरह से किसी आपात परिस्थिति में होता है। यानी इस दौरान मस्तिष्क लगातार असामान्य ढंग से सक्रिय रहता है।

दुष्परिणाम : कंप्यूटर विजन सिंड्रोम- अमेरिकी विजन काउंसिल के अनुसार ७०% लोग मोबाइल देखते समय आंखें सिकोड़ते हैं। इससे विजन सिंड्रोम हो सकता है।

रीढ़ की हड्डी पर असर- लगातार फोन का उपयोग करने पर कंधे और गर्दन झुके रहते हैं। झुकी गर्दन की वजह से रीढ़ की हड्डी प्रभावित होने लगती है।

फेफड़ों की क्षमता पर पड़ता है दुष्प्रभाव- झुकी गर्दन की वजह से गहरी सांस लेने में समस्या होती है। इसका सीधा असर फेफड़ों पर पड़ता है।

टेक्स्ट नेक- मोबाइल स्क्रीन पर नजरें गड़ाए रखनेवाले लोगों को गर्दन के दर्द की शिकायत आम हो चली है। इसे 'टेक्स्ट नेक' कहा जाता है। यह समस्या लगातार टेक्स्ट मैसेज भेजने वालों और वेब ब्राउजिंग करने वालों में ज्यादा पाई जाती है।

नींद की कमी- २ घंटे तक चेहरे पर मोबाइल की रोशनी पड़ने से २२% तक मेलाटोनिन कम हो जाता है। इसकी कमी से नींद आने में मुश्किल होती है।

सर्वे में १२% लोगों ने कहा कि स्मार्टफोन के ज्यादा उपयोग से उनके निजी संबंधों पर भी असर पड़ा है।

एक सर्वे में ३७ फीसदी एडलट्स और ६० फीसदी टीनएजर्स ने माना कि उन्हें अपने स्मार्टफोन की लत है। ५० फीसदी स्मार्टफोन यूजर्स फिल्म देखने के दौरान फेसबुक चेक करते हैं। २० फीसदी लोगों ने माना कि वे हर १० मिनट में अपना फोन देखते हैं।

टिकटॉक पर वीडियो शूट करते समय चली गई जान

विज्ञान नगर के खुशाल (१२) की मौत जून २०१९ में टिकटॉक पर वीडियो बनाते समय हुई थी। खुशाल ने घर के बाथरूम में खुद को बंद कर लिया और गेट के कुंदे से लोहे की बेड़ियां अपने गले में लपेट लीं। बेड़ियों को ५-६ बार गले में लपेटा, जिससे उसकी मौत हो गई। मासूम ने एप पर ऐसा ही वीडियो देखा था।

गेम खेलने से रोका तो गुस्से में किशोर ने दे दी जान

कैथूनीपोल थाना क्षेत्र में नवंबर २०१९ में पंकज (१६) नामक बालक ने गेम के चक्कर में जान दी थी। वो दिनभर गेम खेलता था और इसी वजह से उसने पढ़ाई तक छोड़ दी थी। वो मप्र का मूल निवासी था, जो कोटा अपने रिश्तेदार के यहां रहता था। रिश्तेदार ने उसे गेम खेलने से टोका तो उसे गुस्सा आया और उसने फांसी लगाकर जान दे दी।

रात ३ बजे तक पबजी खेलने के बाद किया सुसाइड

महात्मा गांधी कॉलोनी के आरएस असवन्त (१४) ने ५ जून २०२० को रात ३ बजे तक मोबाइल पर गेम खेला। अगली सुबह ५.३० बजे मां उठी तो वो फांसी पर लटका मिला। क्लास ८ के १३ वर्षीय बच्चे को भी गेम की लत थी। टीचर ने टोका तो गुस्से में वो बेहोश हो गया। उसकी काउंसलिंग करानी पड़ी।

Ram Creations
Jewelry & Gifts
28974 Orchard Lake Rd, Farmington Hills | ramcreations.com | (248) 851-1400

WORLD PLAYER
WORLD PLAYER MENSWEAR
MEGABUY
₹149-499
SAVE ₹ 100
MENS 100% CORDUROY 16 WALE WASHED SHIRTS MRP ₹ 599
MEGABUY ₹ 499
SAVE ₹ 100
MENS 100% COTTON SEMI FORMAL SHIRTS MRP ₹ 599
MEGABUY ₹ 499
SAVE ₹ 100
MENS FORMAL TROUSERS MRP ₹ 699
MEGABUY ₹ 599

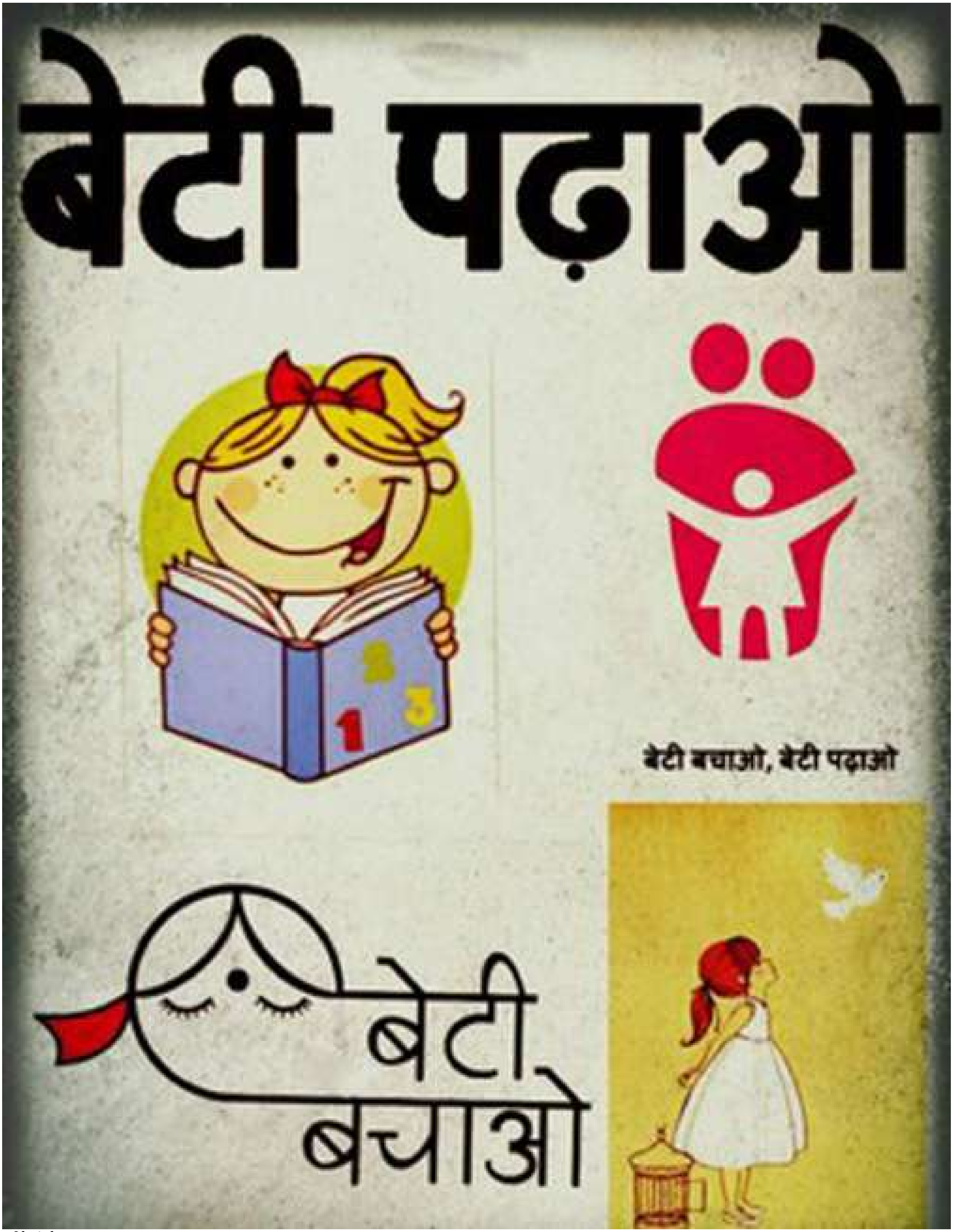
बेटी पढ़ाओ
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ
बेटी
बचाओ

नाम संतान से नहीं चलता। नाम अपनी सुकृति से चलता है। तुलसीदास को देश का बच्चा-बच्चा जानता है। सूरदास को मरे कितने दिन हो चुके। इसी प्रकार जितने महात्मा हो गए हैं, उन सबका नाम क्या उनकी संतान की बदौलत चल रहा है? सच पूछो, तो संतान से जितनी नाम चलने की आशा रहती हैं, उतनी ही नाम डूब जाने की संभावना रहती है। परंतु सुकृति एक ऐसी वस्तु है, जिसमें नाम बढ़ने के सिवा घटने की आशंका रहती ही नहीं। हमारे शहर में राय गिरधारीलाल कितने नामी थे। उनके संतान कहाँ है। पर उनकी धर्मशाला और अनाथालय से उनका नाम अब तक चला आ रहा है, अभी न जाने कितने दिनों तक चला जाएगा।

ताई

'ताऊजी, हमें लेलगाड़ी (रेलगाड़ी) ला दोगे?' कहता हुआ एक पंचवर्षीय बालक बाबू रामजीदास की ओर दौड़ा। बाबू साहब ने दोंनो बाँहें फैलाकर कहा-'हाँ बेटा, ला देंगे।' उनके इतना कहते-कहते बालक उनके निकट आ गया। उन्होंने बालक को गोद में उठा लिया और उसका मुख चूमकर बोले-'क्या करेगा रेलगाड़ी?'

बालक बोला-'उसमें बैठकर बली दूल जाएँगे। हम बी जाएँगे, चुन्नी को बी ले जाएँगे। बाबूजी को नहीं ले जाएँगे। हमें लेलगाड़ी नहीं ला देते। ताऊजी तुम ला दोगे, तो तुम्हें ले जाएँगे।'

बाबू-'और किसे ले जाएगा?'

बालक दम भर सोचकर बोला-'बछ औल किछी को नहीं ले जाएँगे।'

पास ही बाबू रामजीदास की अर्द्धांगिनी बैठी थीं। बाबू साहब ने उनकी ओर इशारा करके कहा-'और अपनी ताई को नहीं ले जाएगा?'

बालक कुछ देर तक अपनी ताई की और देखता रहा। ताईजी उस समय कुछ चिढ़ी हुई सी बैठी थीं। बालक को उनके मुख का वह भाव अच्छा न लगा। अतएव वह बोला-'ताई को नहीं ले जाएँगे।'

ताईजी सुपारी काटती हुई बोलीं-'अपने ताऊजी ही को ले जा, मेरे ऊपर दया रख।'

ताई ने यह बात बड़ी रूखाई के साथ कही। बालक ताई के शुष्क व्यवहार को तुरंत ताड़ गया। बाबू साहब ने फिर पूछा-'ताई को क्यों नहीं ले जाएगा?'

बालक-'ताई हमें प्याल (प्यार), नहीं कलतीं।'

बाबू-'जो प्यार करें तो ले जाएगा?'

बालक को इसमें कुछ संदेह था। ताई के भाव देखकर उसे यह आशा नहीं थी कि वह प्यार करेंगी। इससे बालक मौन रहा।

बाबू साहब ने फिर पूछा-'क्यों रे बोलता नहीं? ताई प्यार करें तो रेल पर बिठाकर ले जाएगा?'

बालक ने ताऊजी को प्रसन्न करने के लिए केवल सिर हिलाकर स्वीकार कर लिया, परंतु मुख से कुछ नहीं कहा। बाबू साहब उसे अपनी अर्द्धांगिनी के पास ले जाकर उनसे बोले-'लो, इसे प्यार कर लो तो तुम्हें ले जाएगा।' परंतु बच्चे की ताई श्रीमती रामेश्वरी को पति की यह चुग़लबाज़ी अच्छी न लगी। वह तुनककर बोलीं-'तुम्हीं रेल पर बैठकर जाओ, मुझे नहीं जाना है।'

बाबू साहब ने रामेश्वरी की बात पर ध्यान नहीं दिया। बच्चे को उनकी गोद में बैठाने की चेष्टा करते हुए बोले-'प्यार नहीं करोगी, तो फिर रेल में नहीं बिठावेगा।-क्यों रे मनोहर?'

मनोहर ने ताऊ की बात का उत्तर नहीं दिया। उधर ताई ने मनोहर को अपनी गोद से ढकेल दिया। मनोहर नीचे गिर पड़ा। शरीर में तो चोट नहीं लगी, पर हृदय में चोट लगी। बालक रो पड़ा।

बाबू साहब ने बालक को गोद में उठा लिया। चुमकार-पुचकारकर चुप किया और तत्पश्चात उसे कुछ पैसा तथा रेलगाड़ी ला देने का वचन देकर छोड़ दिया। बालक मनोहर भयपूर्ण दृष्टि से अपनी ताई की ओर ताकता हुआ उस स्थान से चला गया।

मनोहर के चले जाने पर बाबू रामजीदास रामेश्वरी से बोले-'तुम्हारा यह कैसा व्यवहार है? बच्चे को ढकेल दिया। जो उसे चोट लग जाती तो?'

रामेश्वरी मुँह मटकाकर बोलीं-'लग जाती तो अच्छा होता। क्यों मेरी खोपड़ी पर लादे देते थे? आप ही मेरे ऊपर डालते थे और आप ही अब ऐसी बातें करते हैं।'

बाबू साहब कुढ़कर बोले-'इसी को खोपड़ी पर लादना कहते हैं?'

रामेश्वरी-'और किसे कहते हैं? तुम्हें तो अपने

आगे और किसी का दुःख-सुख सूझता ही नहीं। न जाने कब किसका जी कैसा होता है। तुम्हें उन बातों की कोई परवाह ही नहीं, अपनी चुहल से काम है।'

बाबू–'बच्चों की प्यारी-प्यारी बातें सुनकर तो चाहे जैसा जी हो, प्रसन्न हो जाता है। मगर तुम्हारा हृदय न जाने किस धातु का बना हुआ है?'

रामेश्वरी–'तुम्हारा हो जाता होगा। और होने को होता है, मगर वैसा बच्चा भी तो हो। पराए धन से भी कहीं घर भरता है?'

बाबू साहब कुछ देर चुप रहकर बोले–'यदि अपना सगा भतीजा भी पराया धन कहा जा सकता है, तो फिर मैं नहीं समझता कि अपना धन किसे कहेंगे?'

रामेश्वरी कुछ उत्तेजित होकर बोलीं–'बातें बनाना बहुत आसान है। तुम्हारा भतीजा है, तुम चाहे जो समझो, पर मुझे यह बातें अच्छी नहीं लगतीं। हमारे भाग ही फूटे हैं, नहीं तो यह दिन काहे को देखने पड़ते। तुम्हारा चलन तो दुनिया से निराला है। आदमी संतान के लिए न जाने क्या-क्या करते हैं–पूजा-पाठ करते हैं, व्रत रखते हैं, पर तुम्हें इन बातों से क्या काम? रात-दिन भाई-भतीजों में मगन रहते हो।'

बाबू साहब के मुख पर घृणा का भाव झलक आया। उन्होंने कहा–'पूजा-पाठ, व्रत सब ढकोसला है। जो वस्तु भाग्य में नहीं, वह पूजा-पाठ से कभी प्राप्त नहीं हो सकती। मेरा तो यह अटल विश्वास है।'

श्रीमतीजी कुछ-कुछ रुआँसे स्वर में बोलीं–'इसी विश्वास ने सब चौपट कर रखा है। ऐसे ही विश्वास पर सब बैठ जाएँ तो काम कैसे चले? सब विश्वास पर ही न बैठे रहें, आदमी काहे को किसी बात के लिए चेष्टा करे।'

बाबू साहब ने सोचा कि मूर्ख स्त्री के मुँह लगना ठीक नहीं। अतएव वह स्त्री की बात का कुछ उत्तर न देकर वहाँ से टल गए।

बाबू रामजीदास धनी आदमी हैं। कपड़े की आढ़त का काम करते हैं। लेन-देन भी है। इनसे एक छोटा भाई है, उसका नाम है कृष्णदास। दोनों भाइयों का परिवार एक में ही है। बाबू रामदास जी की आयु ३५ के लगभग है और छोटे भाई कृष्णदास की आयु २१ के लगभग। रामजीदास निस्संतान हैं। कृष्णदास के दो संतानें हैं। एक पुत्र-वही पुत्र, जिससे पाठक परिचित हो चुके हैं–और एक कन्या है। कन्या की वय दो वर्ष के लगभग है।

रामजीदास अपने छोटे भाई और उनकी संतान पर बड़ा स्नेह रखते हैं–ऐसा स्नेह कि उसके प्रभाव से उन्हें अपनी संतानहीनता कभी खटकती ही नहीं। छोटे भाई की संतान को अपनी संतान समझते हैं। दोनों बच्चे भी रामदास से इतने हिले हैं कि उन्हें अपने पिता से भी अधिक समझते हैं।

परंतु रामजीदास की पत्नी रामेश्वरी को अपनी संतानहीनता का बड़ा दुःख है। वह दिन-रात संतान ही के सोच में घुली रहती हैं। छोटे भाई की संतान पर पति का प्रेम उनकी आँखो में काँटे की तरह खटकता है।

रात के भोजन इत्यादि से निवृत्त होकर रामजीदास शैया पर लेटे शीतल और मंद वायु का आनंद ले रहे हैं। पास ही दूसरी शैया पर रामेश्वरी, हथेली पर सिर रखे, किसी चिंता में डूबी हुई थीं। दोनों बच्चे अभी बाबू साहब के पास से उठकर अपनी माँ के पास गए थे। बाबू साहब ने अपनी स्त्री की ओर करवट लेकर कहा–'आज तुमने मनोहर को बुरी तरह ढकेला था कि मुझे अब तक उसका दुःख है। कभी-कभी तो तुम्हारा व्यवहार अमानुषिक हो उठता है।'

रामेश्वरी बोलीं–'तुम्हीं ने मुझे ऐसा बना रक्खा है। उस दिन उस पंडित ने कहा कि हम दोनों के जन्म-पत्र में संतान का जोग है और उपाय करने से संतान हो सकती है। उसने उपाय भी बताए थे, पर तुमने उनमें से एक भी उपाय करके न देखा। बस, तुम तो इन्हीं दोनों में मगन हो। तुम्हारी इस बात से रात-दिन मेरा कलेजा सुलगता रहता है। आदमी उपाय तो करके देखता है। फिर होना न होना भगवान के अधीन है।'

बाबू साहब हँसकर बोले–'तुम्हारी जैसी सीधी स्त्री भी क्या कहूँ? तुम इन ज्योतिषियों की बातों पर विश्वास करती हो, जो दुनिया भर के झूठे और धूर्त हैं। झूठ बोलने ही की रोटियाँ खाते हैं।'

रामेश्वरी तुनककर बोलीं–'तुम्हें तो सारा संसार झूठा ही दिखाई पड़ता है। ये पोथी-पुराण भी सब झूठे हैं? पंडित कुछ अपनी तरफ़ से बनाकर तो कहते नहीं हैं। शास्त्र में जो लिखा है, वही वे भी कहते हैं, वह झूठा है तो वे भी झूठे हैं। अँग्रेज़ी क्या पढ़ी, अपने आगे किसी को गिनते ही नहीं। जो बातें बाप-दादे के ज़माने से चली आई हैं, उन्हें भी झूठा बताते हैं।'

बाबू साहब–'तुम बात तो समझती नहीं, अपनी ही ओटे जाती हो। मैं यह नहीं कह सकता कि ज्योतिषशास्त्र झूठा है। संभव है, वह सच्चा हो, परंतु ज्योतिषियों में अधिकांश झूठे होते हैं। उन्हें ज्योतिष का पूर्ण ज्ञान तो होता नहीं, दो-एक छोटी-मोटी पुस्तकें पढ़कर ज्योतिषी बन बैठते हैं और लोगों को ठगते फिरते हैं। ऐसी दशा में उनकी बातों पर कैसे विश्वास किया जा सकता है?'

रात के भोजन इत्यादि से निवृत्त होकर रामजीदास शैया पर लेटे शीतल और मंद वायु का आनंद ले रहे हैं। पास ही दूसरी शैया पर रामेश्वरी, हथेली पर सिर रखे, किसी चिंता में डूबी हुई थीं। दोनों बच्चे अभी बाबू साहब के पास से उठकर अपनी माँ के पास गए थे। बाबू साहब ने अपनी स्त्री की ओर करवट लेकर कहा–'आज तुमने मनोहर को बुरी तरह ढकेला था कि मुझे अब तक उसका दुःख है। कभी-कभी तो तुम्हारा व्यवहार अमानुषिक हो उठता है।'

रामेश्वरी बोलीं–'तुम्हीं ने मुझे ऐसा बना रक्खा है। उस दिन उस पंडित ने कहा कि हम दोनों के जन्म-पत्र में संतान का जोग है और उपाय करने से संतान हो सकती है। उसने उपाय भी बताए थे, पर तुमने उनमें से एक भी उपाय करके न देखा। बस, तुम तो इन्हीं दोनों में मगन हो। तुम्हारी इस बात से रात-दिन मेरा कलेजा सुलगता रहता है। आदमी उपाय तो करके देखता है। फिर होना न होना भगवान के अधीन है।' बाबू साहब हँसकर बोले–'तुम्हारी जैसी सीधी स्त्री भी क्या कहूँ? तुम इन ज्योतिषियों की बातों पर विश्वास करती हो, जो दुनिया भर के झूठे और धूर्त हैं। झूठ बोलने ही की रोटियाँ खाते हैं।'

Contact: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in

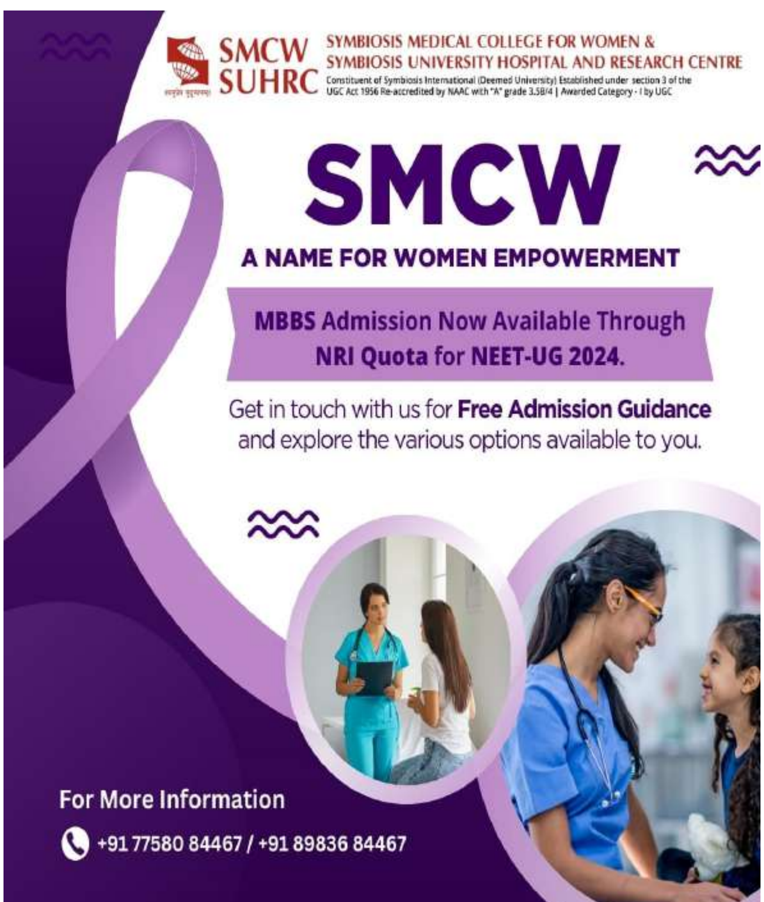

Contact: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in

रामेश्वरी–'हूँ, सब झूठे ही हैं, तुम्हीं एक बड़े सच्चे हो। अच्छा, एक बात पूछती हूँ। भला तुम्हारे जी में संतान का मुख देखने की इच्छा क्या कभी नहीं होती?'

इस बार रामेश्वरी ने बाबू साहब के हृदय का कोमल स्थान पकड़ा। वह कुछ देर चुप रहे। तत्पश्चात एक लंबी साँस लेकर बोले–'भला ऐसा कौन मनुष्य होगा, जिसके हृदय में संतान का मुख देखने की इच्छा न हो? परंतु क्या किया जाए? जब नहीं है, और न होने की कोई आशा ही है, तब उसके लिए व्यर्थ चिंता करने से क्या लाभ? इसके सिवा जो बात अपनी संतान से होती, वही भाई की संतान से हो भी रही है। जितना स्नेह अपनी पर होता, उतना ही इन पर भी है जो आनंद उसकी बाल क्रीड़ा से आता, वही इनकी क्रीड़ा से भी आ रहा है। फिर नहीं समझता कि चिंता क्यों की जाए।'

रामेश्वरी कुढ़कर बोलीं–'तुम्हारी समझ को मैं क्या कहूँ? इसी से तो रात-दिन जला करती हूँ, भला तो यह बताओ कि तुम्हारे पीछे क्या इन्हीं से तुम्हारा नाम चलेगा?''

बाबू साहब हँसकर बोले–'अरे, तुम भी कहाँ की क्षुद्र बातें लाईं। नाम संतान से नहीं चलता। नाम अपनी सुकृति से चलता है। तुलसीदास को देश का बच्चा-बच्चा जानता है। सूरदास को मरे कितने दिन हो चुके। इसी प्रकार जितने महात्मा हो गए हैं, उन सबका नाम क्या उनकी संतान की बदौलत चल रहा है? सच पूछो, तो संतान से जितनी नाम चलने की आशा रहती है, उतनी ही नाम डूब जाने की संभावना रहती है। परंतु सुकृति एक ऐसी वस्तु है, जिसमें नाम बढ़ने के सिवा घटने की आशंका रहती ही नहीं। हमारे शहर में राय गिरधारीलाल कितने नामी थे। उनके संतान कहाँ है। पर उनकी धर्मशाला और अनाथालय से उनका नाम अब तक चला आ रहा है, अभी न जाने कितने दिनों तक चला जाएगा।

रामेश्वरी–'शास्त्र में लिखा है जिसके पुत्र नहीं होता, उनकी मुक्ति नहीं होती ?'

बाबू–'मुक्ति पर मुझे विश्वास नहीं। मुक्ति है किस चिड़िया का नाम? यदि मुक्ति होना भी मान लिया जाए, वो यह कैसे माना जा सकता है कि सब पुत्रवालों की मुक्ति हो ही जाती है! मुक्ति का भी क्या सहज उपाय है? ये जितने पुत्रवाले हैं, सभी को तो मुक्ति हो जाती होगी ?'

रामेश्वरी निरूत्तर होकर बोलीं–'अब तुमसे कौन बकवास करे! तुम तो अपने सामने किसी को मानते ही नहीं।'

मनुष्य का हृदय बड़ा ममत्व-प्रेमी है। कैसी ही उपयोगी और कितनी ही सुंदर वस्तु क्यों न हो, जब तक मनुष्य उसको पराई समझता है, तब तक उससे प्रेम नहीं करता। किंतु भद्दी से भद्दी और बिलकुल काम में न आने वाली वस्तु को यदि मनुष्य अपनी समझता है, तो उससे प्रेम करता है। पराई वस्तु कितनी ही मूल्यवान क्यों न हो, कितनी ही उपयोगी क्यों न हो, कितनी ही सुंदर क्यों न हो, उसके नष्ट होने पर मनुष्य कुछ भी दुःख का अनुभव नहीं करता, इसलिए कि वह वस्तु उसकी नहीं, पराई है। अपनी वस्तु कितनी ही भद्दी हो, काम में न आने वाली हो, नष्ट होने पर मनुष्य को दुःख होता है, इसलिए कि वह अपनी चीज़ है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि मनुष्य पराई चीज़ से प्रेम करने लगता है। ऐसी दशा में भी जब तक मनुष्य उस वस्तु को अपना बनाकर नहीं छोड़ता, अथवा हृदय में यह विचार नहीं कर लेता कि वह वस्तु मेरी है, तब तक उसे संतोष नहीं होता। ममत्व से प्रेम उत्पन्न होता है, और प्रेम से ममत्व। इन दोनों का साथ चोली-दामन का सा है। ये कभी पृथक नहीं किए जा सकते।

यद्यपि रामेश्वरी को माता बनने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ था, तथापि उनका हृदय एक माता का हृदय बनने की पूरी योग्यता रखता था। उनके हृदय में वे गुण विद्यमान तथा अंतर्निहित थे, जो एक माता के हृदय में होते हैं, परंतु उसका विकास नहीं हुआ था। उनका हृदय उस भूमि की तरह था, जिसमें बीज तो पड़ा हुआ है, पर उसको सींचकर और इस प्रकार बीज को प्रस्फुटित करके भूमि के ऊपर लाने वाला कोई नहीं। इसीलिए उनका हृदय उन बच्चों की और खिंचता तो था, परंतु जब उन्हें ध्यान आता था कि ये बच्चे मेरे नहीं, दूसरे के है, तब उनके हृदय में उनके प्रति द्वेष उत्पन्न होता था, घृणा पैदा होती थी। विशेषकर उस समय उनके द्वेष की मात्रा और भी बढ़ जाती थी, जब वह यह देखती थीं कि उनके पतिदेव उन बच्चों पर प्राण देते हैं, जो उनके (रामेश्वरी के) नहीं हैं।

शाम का समय था। रामेश्वरी खुली छत पर बैठी हवा खा रही थीं। पास उनकी देवरानी भी बैठी थी। दोनों बच्चे छत पर दौड़-दौड़कर खेल रहे थे। रामेश्वरी उनके खेल को देख रही थीं। इस समय रामेश्वरी को उन बच्चों का खेलना-कूदना बड़ा भला मालूम हो रहा था। हवा में उड़ते हुए उनके बाल, कमल की तरह खिले उनके नन्हें-नन्हें मुख, उनकी प्यारी-प्यारी तोतली बातें, उनका चिल्लाना, भागना, लौट जाना इत्यादि क्रीड़ाएँ उसके हृदय को शीतल कर रहीं थीं। सहसा मनोहर अपनी बहन को मारने दौड़ा। वह खिलखिलाती हुई दौड़कर रामेश्वरी की गोद में जा गिरी। उसके पीछे-पीछे मनोहर भी दौड़ता हुआ आया और वह भी उन्हीं की गोद में जा गिरा। रामेश्वरी उस समय सारा द्वेष भूल गई। उन्होंने दोनों बच्चों को उसी प्रकार हृदय से लगा लिया, जिस प्रकार वह मनुष्य लगाता है, जो कि बच्चों के लिए तरस रहा हो। उन्होंने बड़ी सतृष्णता से दोनों को प्यार किया। उस समय यदि कोई अपरिचित मनुष्य उन्हें देखता, तो उसे यह विश्वास होता कि रामेश्वरी उन बच्चों की माता है।

दोनों बच्चे बड़ी देर तक उनकी गोद में खेलते रहे। सहसा उसी समय किसी के आने की आहट पाकर बच्चों की माता वहाँ से उठकर चली गई।

'मनोहर, ले रेलगाड़ी।' कहते हुए बाबू रामजीदास छत पर आए। उनका स्वर सुनते ही दोनों बच्चे रामेश्वरी की गोद से तड़पकर निकल भागे। रामजीदास ने पहले दोनों को खूब प्यार किया, फिर बैठकर रेलगाड़ी दिखाने लगे।

इधर रामेश्वरी की नींद टूटी। पति को बच्चों में मगन होते देखकर उनकी भौंहें तन गईं। बच्चों के प्रति हृदय में फिर वही घृणा और द्वेष भाव जाग उठा।

बच्चों को रेलगाड़ी देकर बाबू साहब रामेश्वरी के पास आए और मुस्कराकर बोले–'आज तो तुम बच्चों को बड़ा प्यार कर रही थीं। इससे मालूम होता है कि तुम्हारे हृदय में भी उनके प्रति कुछ प्रेम अवश्य है।'

रामेश्वरी को पति की यह बात बहुत बुरी लगी। उन्हें अपनी कमज़ोरी पर बड़ा दुःख हुआ। केवल दुःख ही नहीं, अपने उपर क्रोध भी आया। वह दुःख और क्रोध पति के उक्त वाक्य से और भी बढ़ गया। उनकी कमज़ोरी पति पर प्रकट हो गई, यह बात उनके लिए असह्य हो उठी।

रामजीदास बोले–'इसीलिए मैं कहता हूँ कि अपनी संतान के लिए सोच करना वृथा है। यदि तुम इनसे प्रेम करने लगो, तो तुम्हें ये ही अपनी संतान प्रतीत होने लगेंगे। मुझे इस बात से प्रसन्नता है कि तुम इनसे स्नेह करना सीख रही हो।'

यह बात बाबू साहब ने नितांत हृदय से कही थी, परंतु रामेश्वरी को इसमें व्यंग की तीक्ष्ण गंध मालूम हुई। उन्होंने कुढ़कर मन में कहा–'इन्हें मौत भी नहीं आती। मर जाएँ, पाप कटे! आठों पहर आँखों के सामने रहने से प्यार को जी ललचा ही उठता है। इनके मारे कलेजा और भी जला करता है।'

बाबू साहब ने पत्नी को मौन देखकर कहा–'अब झेंपने से क्या लाभ। अपने प्रेम को छिपाने की चेष्टा

करना व्यर्थ है। छिपाने की आवश्यकता भी नहीं।'

रामेश्वरी जल-भुनकर बोलीं–'मुझे क्या पड़ी है, जो मैं प्रेम करूँगी? तुम्हीं को मुबारक रहे। निगोड़े आप ही आ-आ के घुसते हैं। एक घर में रहने में कभी-कभी हँसना बोलना पड़ता ही है। अभी परसों ज़रा यूँ ही ढकेल दिया, उस पर तुमने सैकड़ों बातें सुनाईं। संकट में प्राण हैं, न यों चैन, न वों चैन।'

बाबू साहब को पत्नी के वाक्य सुनकर बड़ा क्रोध आया। उन्होंने कर्कश स्वर में कहा–'न जाने कैसे हृदय की स्त्री है! अभी अच्छी-ख़ासी बैठी बच्चों से प्यार कर रही थी। मेरे आते ही गिरगिट की तरह रंग बदलने ल गी। अपनी इच्छा से चाहे जो करे, पर मेरे कहने से बल्लियों उछलती है। न जाने मेरी बातों में कौन-सा विष घुला रहता है। यदि मेरा कहना ही बुरा मालूम होता है, तो न कहा करूँगा। पर इतना याद रखो कि अब कभी इनके विषय में निगोड़े-सिगोड़े इत्यादि अपशब्द निकाले, तो अच्छा न होगा। तुमसे मुझे ये बच्चे कहीं अधिक प्यारे हैं।'

रामेश्वरी ने इसका कोई उत्तर न दिया। अपने क्षोभ तथा क्रोध को वे आँखों द्वारा निकालने लगीं।

जैसे-ही-जैसे बाबू रामजीदास का स्नेह दोनों बच्चों पर बढ़ता जाता था, वैसे-ही-वैसे रामेश्वरी के द्वेष और घृणा की मात्रा भी बढ़ती जाती थी। प्रायः बच्चों के पीछे पति-पत्नी में कहा सुनी हो जाती थी, और रामेश्वरी को पति के कटु वचन सुनने पड़ते थे। जब रामेश्वरी ने यह देखा कि बच्चों के कारण ही वह पति की नज़र से गिरती जा रही हैं, तब उनके हृदय में बड़ा तूफ़ान उठा। उन्होंने यह सोचा-पराए बच्चों के पीछे यह मुझसे प्रेम कम करते जाते हैं, हर समय बुरा-भला कहा करते हैं, इनके लिए ये बच्चे ही सब कुछ हैं, मैं कुछ भी नहीं। दुनिया मरती जाती है, पर दोनों को मौत नहीं। ये पैदा होते ही क्यों न मर गए। न ये होते, न मुझे ये दिन देखने पड़ते। जिस दिन ये मरेंगे, उस दिन घी के दिये जलाउँगी। इन्होंने ही मेरे घर का सत्यानाश कर रक्खा है।

इसी प्रकार कुछ दिन व्यतीत हुए। एक दिन नियमानुसार रामेश्वरी छत पर अकेली बैठी हुई थीं उनके हृदय में अनेक प्रकार के विचार आ रहे थे। विचार और कुछ नहीं, अपनी निज की संतान का अभाव, पति का भाई की संतान के प्रति अनुराग इत्यादि। कुछ देर बाद जब उनके विचार स्वयं उन्हीं को कष्टदायक प्रतीत होने लगे, तब वह अपना ध्यान दूसरी और लगाने के लिए टहलने लगीं।

वह टहल ही रही थीं कि मनोहर दौड़ता हुआ आया। मनोहर को देखकर उनकी भृकुटी चढ़ गई। और वह छत की चहारदीवारी पर हाथ रखकर खड़ी हो गईं।

संध्या का समय था। आकाश में रंग-बिरंगी पतंगें उड़ रही थीं। मनोहर कुछ देर तक खड़ा पतंगों को देखता और सोचता रहा कि कोई पतंग कटकर उसकी छत पर गिरे, क्या आनंद आवे! देर तक गिरने की आशा करने के बाद दौड़कर रामेश्वरी के पास आया, और उनकी टाँगों में लिपटकर बोला–'ताई, हमें पतंग मँगा दो।' रामेश्वरी ने झिड़ककर कहा–'चल हट, अपने ताऊ से माँग जाकर।'

मनोहर कुछ अप्रतिभ-सा होकर फिर आकाश की ओर ताकने लगा। थोड़ी देर बाद उससे फिर रहा न गया। इस बार उसने बड़े लाड़ में आकर अत्यंत करूण स्वर में कहा–'ताई मँगा दो, हम भी उड़ाएँगे।'

इस बार उसकी भोली प्रार्थना से रामेश्वरी का कल `जा कुछ पसीज गया। वह कुछ देर तक उसकी ओर स्थिर दृष्टि से देखती रही। फिर उन्होंने एक लंबी साँस लेकर मन ही मन कहा-यह मेरा पुत्र होता तो आज मुझसे बढ़कर भाग्यवान स्त्री संसार में दूसरी न होती। निगोड़ा-मरा कितना सुंदर है, और कैसी प्यारी-प्यारी बातें करता है। यही जी चाहता है कि उठाकर छाती से लगा लें।

यह सोचकर वह उसके सिर पर हाथ फेरने वाली थीं कि इतने में उन्हें मौन देखकर बोला–'तुम हमें पतंग नहीं मँगवा दोगी, तो ताऊजी से कहकर तुम्हें पिटवाएँगे।'

यद्यपि बच्चे की इस भोली बात में भी मधुरता थी, तथापि रामेश्वरी का मुँह क्रोध के मारे लाल हो गया। वह उसे झिड़ककर बोलीं–'जा कह दे अपने ताऊजी से। देखें, वह मेरा क्या कर लेंगे।'

मनोहर भयभीत होकर उनके पास से हट आया, और फिर सतृष्ण नेत्रों से आकाश में उड़ती हुई पतंगों को देखने लगा।

इधर रामेश्वरी ने सोचा–यह सब ताऊजी के दुलार का फल है कि बालिश्त भर का लड़का मुझे धमकाता है। ईश्वर करे, इस दुलार पर बिजली टूटे।

उसी समय आकाश से एक पतंग कटकर उसी छत की ओर आई और रामेश्वरी के ऊपर से होती हुई छज्जे की ओर गई। छत के चारों ओर चहार-दीवारी थी। जहाँ रामेश्वरी खड़ी हुई थीं, केवल वहाँ पर एक द्वार था, जिससे छज्जे पर आ-जा सकते थे। रामेश्वरी उस द्वार से सटी हुई खड़ी थीं। मनोहर ने पतंग को छज्जे पर जाते देखा। पतंग पकड़ने के लि ए वह दौड़कर छज्जे की ओर चला। रामेश्वरी खड़ी देखती रहीं। मनोहर उसके पास से होकर छज्जे पर चला गया, और उससे दो फीट की दूरी पर खड़ा होकर पतंग को देखने लगा। पतंग छज्जे पर से होती हुई नीचे घर के आँगन में जा गिरी। एक पैर छज्जे की मुँड़ेर पर रखकर मनोहर ने नीचे आँगन में झाँका और पतंग को आँगन में गिरते देख, वह प्रसन्नता के मारे फूला न समाया। वह नीचे जाने के लिए शीघ्रता से घूमा, परंतु घूमते समय मुँड़ेर पर से उसका पैर फिसल गया। वह नीचे की ओर चला। नीचे जाते-जाते उसके दोनों हाथों में मुँड़ेर आ गई। वह उसे पकड़कर लटक गया और रामेश्वरी की ओर देखकर चिल्लाया 'ताई!'

रामेश्वरी ने धड़कते हुए हृदय से इस घटना को देखा। उनके मन में आया कि अच्छा है, मरने दो, सदा का पाप कट जाएगा। यही सोचकर वह एक क्षण रूकीं। इधर मनोहर के हाथ मुँड़ेर पर से फिसल ने लगे। वह अत्यंत भय तथा करुण नेत्रों से रामेश्वरी की ओर देखकर चिल्लाया–'अरी ताई!' रामेश्वरी की आँखें मनोहर की आँखों से जा मिलीं। मनोहर की वह करुण दृष्टि देखकर रामेश्वरी का कलेजा मुँह में आ गया। उन्होंने व्याकुल होकर मनोहर को पकड़ने के लिए अपना हाथ बढ़ाया। उनका हाथ मनोहर के हाथ तक पहुँचा ही कि मनोहर के हाथ से मुँड़ेर छूट गई। वह नीचे आ गिरा। रामेश्वरी चीख़ मारकर छज्जे पर गिर पड़ीं।

रामेश्वरी एक सप्ताह तक बुखा़र से बेहोश पड़ी रहीं। कभी-कभी ज़ोर से चिल्ला उठतीं, और कहतीं–'देखो-देखो, वह गिरा जा रहा है–उसे बचाओ, दौड़ो–मेरे मनोहर को बचा लो।' कभी वह कहतीं–'बेटा मनोहर, मैंने तुझे नहीं बचाया। हाँ, हाँ, मैं चाहती तो बचा सकती थी–देर कर दी।' इसी प्रकार के प्रलाप वह किया करतीं।

मनोहर की टाँग उखड़ गई थी, टाँग बिठा दी गई। वह क्रमशः फिर अपनी असली हालत पर आने लगा।

एक सप्ताह बाद रामेश्वरी का ज्वर कम हुआ। अच्छी तरह होश आने पर उन्होंने पूछा–'मनोहर कैसा है?' रामजीदास ने उत्तर दिया–'अच्छा है।'

रामेश्वरी–'उसे पास लाओ।'

मनोहर रामेश्वरी के पास लाया गया। रामेश्वरी ने उसे बड़े प्यार से हृदय से लगाया। आँखों से आँसुओं की झड़ी लग गई, हिचकियों से गला रुँध गया। रामेश्वरी कुछ दिनों बाद पूर्ण स्वस्थ हो गईं। अब वह मनोहर और उसकी बहन चुन्नी से द्वेष नहीं करतीं। और मनोहर तो अब उसका प्राणाधार हो गया। उसके बिना उन्हें एक क्षण भी कल नहीं पड़ती।

- विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक'

साभारः हिंदवी

Good Vibes Onion Hairfall Control Oil I Strengthening I Hair Growth I No Parabens, No Sulphates, No Mineral Oil, No Animal Testing (100 ml)

Good Vibes Argan Oil Hairfall Control Vitalizing Serum I Frizz Control, Shine, Stregthening I No Parabens, No Sulphates, No Animal Testing (50 ml)

परछाइयाँ

कार के भीतर आते ही अनिकेत ने अपनी आँखें बंद कर राहत की दो छोटी छोटी साँस ली। खुशी से उसकी मुट्ठी भिंच गई थी। आँखे खोल सामने देखा तो पाया - सामने जो आईना (रियर व्यू मिरर) था उसमें से दो जोड़ी आँखे उसे देखे जा रह थीं। अपलक। जब अनिकेत की निगाह आईने की उन नजरों से मिली तब तक कार चल पड़ी थी। बठिंडा छूट रहा था और अगली सुबह उसे दिल्ली होना था। अनिकेत की नजर फिर फिर सामने उई तो पाया कि आईने से वो दो जोड़ी आँखे अब भी उसे देखे जा रही हैं। उनकी आँखों में गंभीरता और अपरिचय का गहरा भाव दिख रहा था। निगूढ़। अनिकेत को भारी बेचैनी होने लगी पर...

जून की कोई शाम थी जो चौतरफा घिर चुकी थी पर अगली सुबह अनिकेत को दिल्ली होना था। बठिंडा के होटल से निकलते हुए उसे बीते दिन की तपिश का एहसास हुआ। होटल का मीटिंग हॉल पाबंद था इस वजह से वहाँ लू और समाचार पूरे दिन नहीं पहुँच सके थे। अब सूर्य इस तरह डूब रहे थे कि अनिकेत की परछाईं बहुत लंबी हो कर होटल की दीवाल के सहारे टँगी हुई थी। दंगे के सबब मर्द मानुष कहीं नहीं थे वरना शाम के इस वक्त परछाइयाँ भरपूर कुचली जाती हैं। ऑफिस से खुश खुश निकले तो अनिकेत यह खेल अक्सर खेलता है। किसी की परछाईं पर खड़ा हो जाता है। खासपसंद, शाम पर पड़ती रितु का परछाइयाँ।

पंजाब हरियाणा की सेल्स रिव्यू मीटिंग खत्म ही हुई थी। हिंदू होने की बिना पर होटल बिल जमा करते हुए भी वो दंगे की नहीं, दिन की गर्मी के बारे में सोचता रहा। दिखने सुनने में वह, सबकी तरह, दंगे के खिलाफ नजर आता था। जो सड़कों पर घट रहा था उसका उसे रंज था पर दंगाई गतिविधियों से ज्यादा हैरान गर्मी कर रही थी। ऐसे मौसमों का आविष्कार अभी बाकी था जो आबादी देख और नारे सुन कर आया करें।

शाम का रंग कुछ ऐसा था कि रिक्शे कहीं नहीं थे। सड़क के मुहाने पर काँच के टुकड़े बिखरे हुए थे। सूरज जबकि छिप चुका था फिर भी हवा में बची हुई रोशनी और धरती से परावर्तित किरणें काँच के इन टुकड़ों से कई सारी रंगीनियाँ बिखेर रही थीं। रोशनी की तेज चकाचोधं से आँखें चुराते हुए अनिकेत ने पश्चिम की ओर देखा; जली हुई बस खड़ी थी। बस देखने के बाद उसे चिरायँध महसूस हुई। जली हुई बस उसके लिए पुरानी पहेली सुलझा रही थी। हरदम से वह यह जानना चाहता था कि बसों का ढाँचा कैसे आखिर तैयार होता होगा? दो कुत्ते जली हुई बस के साए में आराम फरमा रहे थे।

अनिकेत को सड़क तक छोड़ने सुखपाल आया था जिसकी औपचारिकताएँ भी सहज लगती थी। उसने आज रात रुकने की बात सुझाई। कहा : आगरा और जयपुर टीम की मीटिंग बाद में भी हो लेगी। अनिकेत को 'सेल्स मीट' के बहाने रितु से मिलने के लिए जाना ही जाना था, इसलिए तय यह हुआ : यहाँ से किसी निजी वाहन पर टँग कर पटियाला जाना होगा, वहाँ से रात के दस बजे हरियाणा रोडवेज की एक बस पेहवा, इस्माइलाबाद होते हुए दिल्ली जाती है।

यह जगह शहर के बाहर थी। कैंचिया मोड़ पर पुलिस वाले जरूर थे पर शाम के नाते जरा सी आवाजाही बढ़ गई थी। दूध का एक टैंकर और खुली हुई एक जीप आई जिसमें कुछ औरतें और बहुत सारी बकरियाँ थी। अनिकेत को ऐसी सवारियाँ साधने से परहेज न था पर दोनों संगरूर तक ही जा रही थीं। शाम चढ़ रही थी और इनका इंतजार बढ़ता जा रहा था। सुखपाल ने दिल्लगी की : सर क्यों मुश्किल में पड़ते हो? कुछ उल्टा सीधा हो गया तो? होनेवाली भाभी को हम क्या मुह दिखाएँगे? जैसा कि होता है, सेल्स टीम जल्द ही द्विअर्थी बातों पर उतर आती है, यहाँ भी अट्ठाईस वर्षीय अनिकेत को लेकर 'डबल' चलने लगा। तब तक एक कार आती हुई दिखी। हाथ दिया। कार चालक ने ऐसी तेज ब्रेक लगाई कि सड़क की चीख निकल गई। यह बूझते ही कि कार उनके ही हाथ देने से रुकी, दोनों दौड़ पड़े।

कार में दो जने थे। एक ड्राइवर साइड और दूसरा कंडक्टर साइड। सुखपाल ने उनसे बात की। उन्हो ने सुखपाल से पूछा; जाना कहाँ है? और क्या दोनों जा रहे हैं? जबाव में पटियाला सुन कर उन दोनों ने एक दूसरे को देखा और बताया कि वो भी पटियाले ही

Festive Collection
WELCOME THE FESTIVITIES WITH A BURST OF
GLAMOUROUS COLOUR
SHOP NOW
www.festivacollection.com

जा रहे हैं।

कार के भीतर आते ही अनिकेत ने अपनी आँखें बंद कर राहत की दो छोटी छोटी साँस ली। खुशी से उसकी मुट्ठी भिंच गई थी। आँखे खोल सामने देखा तो पाया - सामने जो आईना (रियर व्यू मिरर) था उसमें से दो जोड़ी आँखे उसे देखे जा रह थीं। अपलक। जब अनिकेत की निगाह आईने की उन नजरों से मिली तब तक कार चल पड़ी थी। बठिंडा छूट रहा था और अगली सुबह उसे दिल्ली होना था।

अनिकेत की नजर फिर फिर सामने उई तो पाया कि आईने से वो दो जोड़ी आँखे अब भी उसे देखे जा रही हैं। उनकी आँखों में गंभीरता और अपरिचय का गहरा भाव दिख रहा था। निगूढ़। अनिकेत को भारी बेचैनी होने लगी पर उसने आँखों ही से मुस्कुरा कर टाल दिया और खिड़की से बाहर देखने लगा। बाहर जो लाइलाज अँधेरा था वो सुबह की रोशनी के इंतजार में पसरा हुआ था।

सामने बैठे लोगों ने अपना परिचय दिया। मुझे लकी कह सकते हैं और इसे (कार चला रहे शख्स की ओर इशारा कर) मेजर कहा जाता है। और सर, आपका परिचय?

अनिकेत : अनिकेत दीक्षित, रहने वाला गाँव बौली, जिला देवरिया का हूँ, रहता चंडीगढ़ हूँ।

लकी : काम क्या करते हैं? यह लैपटॉप है?

अनिकेत : जी हाँ। साथ में इंटरनेट भी।

लकी : फोन भी होगा?

अनिकेत : वह भी है।

लकी : काम नहीं बताया?

यह सवाल अनिकेत को खटका पर उसने जबाव में अपनी कंपनी का नाम बताया और अपना पद भी, जो हर छः सात महीने में तबादलों के साथ बदलता रहता था।

मेजर : सर, आपका पहचान पत्र भी होगा? अनिकेत : हाँ। कई सारे हैं।

मेजर : सर, बुरा ना माने तो आपका पहचान पत्र देख सकता हूँ?

अनिकेत भला क्यों बुरा मानता। कार चल रही थी। सड़क पर शाम की गर्म हवा के बाद अब वातानुकूल से अनिकेत सुस्त हो रहा था। कार्ड निकाल ही रहा था कि उसका फोन बजा - सुखपाल था। कह रहा था, दिल्ली पहुँच कर खबर कर देना, बॉस। अनिकेत ने हँसी में लपेट कर कहा, पहले दिल्ली पहुँचने तो दो। फोन से ध्यान हटा तो पाया कि लकी उसकी ओर देख रहा है। अनिकेत ने विजिटिंग कार्ड थमा दिया। कार्ड निरखते हुए लकी ने पूछा : सर, आप दिल्ली जा रहे हैं?

अनिकेत : जी। लकी (अनिकेत को प्रश्नवाची निगाह से देखते हुए): पर आपने तो हमें पटियाला बताया था?

अनिकेत : मतलब?

लकी : अरे! मतलब तो आप मुझे बताएँगे। अनिकेत अचंभे में पड़ गया। हँसने की अधूरी कोशिश करते हुए बताया : दरअसल पटियाला से दिल्ली के लिए रात के ग्यारह बजे की बस है। दंगे के कारण बठिंडा में कर्फ्यू था और वहाँ से बस सेवा आज ठप्प थी।

लकी : सर, इसमें हँसने की बात कहाँ थी? आप हमारी गाड़ी में बैठ हम पर ही हँसेंगे? अगर आपको दिल्ली जाना था तो हमें पूरी बात बतानी थी।

अनिकेत (परेशान होते हुए) : जी।

लकी : जी, क्या? बताना चाहिए था या नहीं? अनिकेत : हाँ।

लकी : तो बताया क्यों नहीं?

अनिकेत : हमें लगा पटियाला बताने से काम हो जाएगा।

लकी : काम? कौन सा काम?

आप हैं कौन? ये काम, दिल्ली, झूठझू ... ये सब क्या लगा रखा है आपने, मिस्टर अनिकेत? यह आपका वास्तविक नाम है या नहीं?

अनिकेत (सँभाल कर बोलते हुए) : आप मेरा कार्ड देख लीजिए। अनिकेत (हँसते हुए) : आप तो पुलिसवालों सी हरकत करने लगे हैं। फोन फिर बजने लगा। बॉस थे। यस सर, कल पहुँच रहा हूँ... हाँ... हाँ। एक कमरा मेरी खातिर बुक करा दीजिएगा। रात के दो ढाई बज ही जाएँगे।

थैंक यू सर।

फोन से ध्यान हटा तो पाया कि लकी की गर्दन उसकी तरफ घूमी हुई है।

अनिकेत ने आँखों से पूछा : क्या?

लकी : सर, एक बात कहूँ? क्या आप

सिस्टम में यकीन नहीं रखते? आप हमारे आगे फोन को तरजीह देंगे - यह हमारा अपमान नहीं है? या आपको नाफरमानी की आदत है? आप मुझे अपना

पहचान पत्र नहीं देंगे?

अनिकेत : अभी मैंने अपना विजिटिंग कार्ड दिया तो था।

लकी : कब? कब दिया, साहब? इसके मानी तो ये हुए कि मैं झूठझू बोल रहा हूँ? मेजर, क्या मैं झूठा हूँ? अनिकेत उसे दुबारा अपना कार्ड देता है और जाने क्यों उसके मन मे ख्याल आता है कि रितु से बात हो ही जानी चाहिए। बेबात की उसकी नाराजगी अलग ही मुश्किल का सबब है।

लकी कार के भीतर बल्ब जलाता है पर उसकी हरकतों से अनिकेत समझता है कि उसे कुछ भी साफ दिखाई नही दे रहा है। लकी खिड़की का शीशा नीचे करता है, कहता है : मुझे रोशनी के बजाय अँधेरे में पढ़ना आसान लगता है। पर उसके हाथ से कार्ड छूट जाता है। लकी अपना हाथ अनिकेत की तरफ बढ़ा देता है। अनिकेत दिग्भ्रम की हालत में उस चौड़ी हथेली पर तीसरा कार्ड रख देता है।

लकी : मेजर, यह बिजनेस कार्ड है। यह तो कहीं भी छप सकता है। अनिकेत साहब, अगर यही आपका नाम है तो, हमें क्षमा करिएगा पर क्या आप हमें कोई ऐसा पहचान पत्र नहीं दिखा पाए जो सरकार की ओर से दिया हुआ हो। सरकार पर आप को यकीन तो होगा? हमें है।

अनिकेत की थकी समझ दगा दे रही है। ये क्या हो रहा है? वो लकी से कहता है : आप मुझ पर भरोसा रखें।

लकी : भरोसा? उसे ही कायम रखने के लिए तो हम आपका कार्ड माँग रहे है, वीर जी। क्या आपको हम पर भरोसा नहीं है? देखने में आप हिंदू ही जान पड़ते हैं पर यह शर्तिया साबित हो जाए तो सफर सुहावना रहेगा। है ना ! और हाँ, जहाँ तक भरोसे का सवाल है, आपके लंबे जीवन की कामना करते हुए मैं आपको मूलमंत्र देता हूँ - भरोसा सिर्फ प्रेम में ही नहीं, हीं व्यवसाय में भी घातक होता है। अनिकेत कोई जबाव दिए बिना, अपना ड्राइविंग लाइसेंस निकाल कर दे देता है। हैंड ब्रेक के पास जो चबूतरेनुमा जगह है वहाँ काँच की दो ग्लास, रेड वाइन की बोतल और चिप्स पैकेट रखा हुआ है। अनिकेत के डी.एल. को अपनी जेब के हवाले करते हुए लकी तीसरा ग्लास निकालता है। क्या लेंगे, अनिकेत साहब? वाइन, व्हिस्की या दम? दम के लिए लकी उसे चिलम दिखाता है जो सामने रखी हुई है। बुझी हुई।

अनिकेत इंकार करता है। वो जिद करते हैं। अनिकेत दूनी जिद से मना करता है : मैं, दरअसल पीता ही नहीं हूँ। इस पर लकी ग्लास पीछे खींच लेता है।

सामने के आईने से अनिकेत को देखते हुए पूछता है : अच्छा अनिकेत साहब, अगर यही आपका नाम है तो, क्योंकि अभी तक आप साबित नही कर पाए, व्यवस्था में आपका कितना यकीन है?

स्पेशल ऑफर के साथ

क़ाजल फुट वेयर

हमारे यहां सभी प्रकार के फुटवेयर उपलब्ध है

कर्जत स्टेशन के पास (वेस्ट)

आशापुरा ज्वैलर्स

सोने-चांदी के गहनों के व्यापारी

शिवाजी रोड, शहाड़ फाटक, उल्हासनहर-४
फोन: ०२५१-२७०९९६२

खिड़की का शीशा उतारते हुए देख कर ही वो समझ गया था पर कुछ कह नहीं पाया। पर जैसे ही उसने काड्र्स फेकने का यह दुर्भाग्यपूर्ण दृश्य देखा, लगभग उछलते हुए पीछे से उसने लकी की गर्दन पकड़ ली। उसका हाथ लकी की गर्दन पर कसता जा रहा था पर भूल गया कि वे दो थे। मेजर ने गाड़ी रोक दी। अपना जूता निकाला और उससे, अनिकेत के सर पर मारने लगा। दोनों ने उसे इस तरह खींच लिया था कि अनिकेत का पैर पिछली सीट और सर हैंड ब्रेक के पास था। मेजर अनिकेत को तब तक जूते से पीटता रहा जब तक कि ल की सँभल नही गया। उन दोनों ने पुनः अनिकेत को पिछली सीट पर बिठाया पर अब अनिकेत के दोनों पैर मजबूत रस्से से बँधे हुए थे। अनिकेत की खातिर इस सृष्टि की देह पर जो दृश्य बच रहा था वो यह कि अनिकेत का दायाँ हाथ मेजर के हाथ में था और बायाँ लकी के हाथ में। अनिकेत का चेहरा दुःख के चिह्न में बदल चुका था और लकी अफसोस जता रहा था कि अनिकेत को काड्र्स की बात दिल पर नहीं लेनी चाहिए थी।

अनिकेत को इस नामाकूल प्रश्न का जवाब नहीं जँचता है। वजह कि सीधे सीधे वो किसी व्यवस्था में यकीन नहीं रखता है। जो है, वह इतना बुरा है कि

यकीन संभव नही है, गुजर भर हो रही है। जो नहीं है, उसमें यकीन क्या, वो तो है ही नहीं और उसके स्वप्न मात्र बिकते हैं। लकी पहली बार इससे कड़ाई से पेश आते हुए पूछता है :

देश में यकीन तो होगा, बिरादर?

अनिकेत को इस प्रश्न का जबाव नहीं सूझता। छोटी सी हुँकारी से काम चल सकता है।

अनिकेत : हाँ।

लकी : वाह रे खिलाड़ी!

देश में यकीन है, और हमारी व्यवस्था में नहीं? लकी वाचाल मशीन में तब्दील होता जा रहा था। हमारा सिस्टम देखिए, हमने आपको टॉप क्लास गाड़ी मुहैया कराई, एअर कंडीशन, महँगी शराब, जो आप पी नहीं रहे। अब आप यह न कहना कि इसे पीना आपके बूते में नहीं। यह कहना दरअसल हमारा अपमान है। और इस देश की शिक्षा व्यवस्था का भी।

अनिकेत की समझ खुल नही पा रही थी और उसने मान लिया कि शराब ने इनका सर पकड़ लिया है। उसने अपनी आवाज नीचे की :

लकी जी, बुरा ना माने तो एक बात कहूँ ? आपका सवाल इक्कीस आने सही है पर क्या हम थोड़ी देर बाद इस विषय पर बात करें?

लकी : शौक से, मिस्टर।

अगले दस मिनट फैसलाकुन बीते।

लकी ने एक पंजाबी गाना बजा दिया :

इक खबर सुनी है वो सच्ची है या झूठी ... पा के यारा दी झाँझरा गैरा दी डेरे नच्ची। अनिकेत को लगा कि कोई सुनसान है जो बज रहा है। उनके बीच जो यह तनाव बन आया था उस पर स्टीरियो की आवाज लोरीनुमा लगी थी। इस बीच अनिकेत के दो फोन आए। पहला फोन माँ का था। उसने कहा, माँ मैं थोड़ी देर में लगाता हूँ। हुआ यह कि अनिकेत के फोन बजते ही लकी ने स्टीरियो की आवाज तेज कर दी थी। बहुत तेज। जैसे शादियों के फूहड़ उत्सवों में होता है। लकी ने अनिकेत के फोन रखते ही आवाज मद्धिम कर दिया और ऊपर लगे आईने के रास्ते अनिकेत की तरफ एक तिरछी मुस्कान उछाली।

अगला फोन बॉस का था। लकी ने आवाज फिर ऊँची कर दी। इस बार अनिकेत से रहा नहीं गया। जब तक वो आवाज कम करने की दुहाई देता, फोन कट चुका था। लकी ने आवाज नीचे कर दी। अनिकेत ने दुबारा फोन मिलाया और जैसे ही बात का मिसरा उठाया कि लकी ने इस बार आवाज बेहद बेहद तेज कर दी। आजिज आकर अनिकेत ने लकी को कंधे से पकड़ कर हिलाया, कहा :

आप जानबूझ कर मुझे परेशान कर रहे हैं, मिस्टर। लकी के आदेश पर मेजर ने काले सुनसान में गाड़ी रोक दी। दोनो चुपचाप अनिकेत को देखते रहे। सामने के आईने से नहीं, बाकायदा पीछे घूम कर। दो जोड़ी आँखों से लगातार घूरे जाना अनिकेत झेल नहीं पाया और वो खिड़की से बाहर झाँकने लगा। बाहर अँधेरा था, जो उसे बेबस कर रहा था।

औचक ही बोल पड़ा : लकी साहब,

लिफ्ट देने के लिए शुक्रिया।

आप मुझे यहीं छोड़ दीजिए।

लकी कुछ कहे बिना गाड़ी से उतर गया। मेजर अलबत्ता इसे घूरता रहा। अनिकेत अपना सामान सहेजने लगा और लकी ने पीछे का दरवाजा खोल दिया। अनिकेत उतरने की तैयारी करने लगा। लैपटॉप बैग को आगे जैसे ही बढ़ाया लकी ने गाड़ी का दरवाजा जोर से बंद कर दिया। यह सब इतनी तेजी और कारीगरी से हुआ कि अनिकेत सारा कुछ समझ गया। फाटक बंद होते ही मेजर ने सेंट्रल लॉक डाल दिया और उछलते हुए अनिकेत को गर्दन से जकड़ लिया। उन दोनों का संघर्ष तब तक चला जब तक कि लकी ने अनिकेत को पीछे की सीट में दबा कर तीन चार थप्पड़ नहीं लगा दिए। इस अपमान की वजह से वह निरा चुप हो कर इन दोनों को देखने लगा।

लकी : अनिकेत साहब, आपने खामखा मुद्दा बना दिया। चोट तो नहीं आई? मैने आपको गाड़ी से उतर जाने दिया होता पर आपका ड्राइविंग लाइसेंस मेरे पास था और उसे दिए बिना आपको जाने देना मुझे अच्छा नहीं लगता।

फिर वह मेजर से मुखातिब हो गयाः उन्होने मुझे कंधे से छुआ भर था और तुमने अनिकेत उसी कैफियत में गिरा पड़ा था। उसके चेहरे पर हजारो हजार भावों की आवाजाही मची थी। अगर वो आईना देख पाता तो एक नई पहेली सुलझा देता : उसका अपना चेहरे तब कैसा दिखता है जब वो डरा हुआ हो। मस्तिष्क के उस हिस्से से, जहाँ प्रेम के सुनहले फूल मुर्झा रहे थे और टूट टूट कर गिर रहे थे, यह आभास उसे मिल रहा था कि एक आखिरी बार रितु से बात हो ही जाए। उसी मस्तिष्क का एक बड़ा हिस्सा जो माँ के फोन से अभी उबरा नहीं था, कह रहा था कि दरअसल लकी सही है, उससे ही कोई चूक हो गई और लकी ने वाकई डी.एल. देने के लिए ही दरवाजा बंद किया था। वो सँभलने लगा। गीत गजल बंद हो चुके थे। कार की गति नहीं से नहीं थी तो ११० या १२० कि.मी. प्रति घंटे की थी। आस्ट्रिया में मारे गए संत के कारण जो दंगे हिन्दुस्तानी पंजाब में दुर्गंध की तरह फैले थे उसका सीधा असर इस कार की गति पर दिख रहा था कि यह कार सूटासूट भागे जा रही थी। प्रभाव का ऐसा नियम अनिकेत ने आज तक नहीं देखा था। संत की हत्या से कार की गति प्रभावित। वो खुद को दूसरे तीसरे ख्यालों में ले जाना चाहता था। इन दिनों सुखद

3 Austrian Diamond
Jewellery Sets
(3AUD2)
M.R.P. : ₹1,099
Only At
₹499

जीवन का एक सूत्र यह भी था कि बार बार आप खुद ही में कोई गलती ढूँढ़ ताकि उसका निवारण भी अपने हाथ में हो। लकी ने चिप्स का पैकेट पीछे बढ़ाया। अनिकेत ने चिप्स मुँह से लगाया ही था कि लकी हँस पड़ा : अनिकेत साहब, आपने हमारा नमक खा लिया है। अनिकेत भी हँसने लगा। अभी गाड़ी संगरूर से गुजर रही थी, हद से हद घंटे भर का सफर और था। लकी ने कुछ याद आने जैसी मुद्रा बनाई और कहा :

चलिए, आपकी पहचान का सवाल भी हल कर लेते हैं। सच सच बताइए, आप हिंदू हैं या मुसलमान या ईसाई या कुछ और?

अनिकेत : हिंदू हूँ, सर।

लकी : सर कह कर शर्मिंदा ना करें। फिर भी, हिंदू हैं तो दंगे के दिन बाहर सड़क पर क्या कर रहे थे?

अनिकेत : मैं हिंदू होने के साथ निजी ही सही पर एक संस्था का मुलाजिम भी हूँ। आज हमारे पंजाब टीम की मासिक बैठक थी और कल दिल्ली होना मेरे लिए अनिवार्य है।

लकी : ऐसा!! कोई सबूत? कल की मीटिंग का? दिल्ली को तुम सबने आसान टार्गेट समझ रखा है और इस देश की जनता को मूर्ख। कहीं तुम बठिंडा इस खातिर तो नहीं आए थे कि पावर प्लांट उड़ाने की योजना बना सको। इतना कह कर लकी ने एक मझोल ी मुस्की मार दी। जस्ट किडिंग। डोंटडों माइंड। पर आप खुद बताइए, क्या मेरे सवाल गलत हैं? या गैर जरूरी हैं? अनिकेत ने सहमति जताई तो लकी खुश हुआ और राहत की साँस ली।

कहा : प्रश्न स्थापित करना सर्वाधिक कठिन और महत्वपूर्ण होता है, मिस्टर और अब जब मेरा सवाल आपके अनुसार सही है तो कृपया जबाव दें। जल्द से भी जल्द।

अनिकेत बार बार खीझ रहा था और हर बार कठिन प्रयत्नों से खुद को सँभाल रहा था। वो ऐसी चूक नहीं करना चाह रहा था जिससे सामनेवाले नाराज हो जाएँ।

फिर भी बोल पड़ा : कैसा सवाल?

लकी : आपकी पहचान का। संकट तो बस पहचान का ही होता है।

अनिकेत : आपके पास मेरा ड्राइविंग लाइसेंस है, आप जाँच सकते हैं।

लकी : पहचान की खातिर और क्या है आपके पास?

अनिकेत : मतदाता पहचान पत्र है, पैन कार्ड है।

लकी (मेजर से) : मेजर, यार वो बांग्लादेशी तुझे याद है जिसकी लँगोट से दो मतदाता पहचान पत्र बरामद हुए थे? मेजर कोई जबाव नहीं देता, गाड़ी की रफ्तार जरूर बढ़ा देता है।

लकी (अनिकेत से) : साहब, दिल पर मत लेना, आपने मतदाता पहचान पत्र का जिक्र किया तो बांग्लादेशी याद आ गए। वैसे

आप कुछ और बताइए, कैसे साबित करेंगे कि आप अनिकेत हैं। कि आप हिंदू हैं। कि आप किसी प्राइवेट फर्म में मैनेजर हैं। कि आप दिल्ली किसी मीटिंग में जा रहे हैं जो, अगर आप का कहा मानें तो, आतंकवादी संगठन की मीटिंग नहीं है। कैसे?

अनिकेत की साँस उखड़ चुकी थी।

पूछा : आप लोग मुझसे क्या चाहते हैं?

लकी : एक मामूली सवाल का जबाव।

अनिकेत : सर, आपको इन कागजातों पर भरोसा करना चाहिए। यहाँ अनिकेत जरा ठहरा, आफत की साँस ले कर बोल पड़ा : आखिर यही सवाल आपसे हो तो आप क्या जबाव देंगे, आप बताइए, मैं भी वैसे ही साबित करने की कोशिश करूँ।

लकी : पहली और आखिरी बात मिस्टर अनिकेत कि हमसे यह सवाल पूछा नहीं जा सकता।

क्योंकि यह सिस्टम हमारा है। हमने इसे तैयार किया है। इतनी लंबी गाड़ी, शराब, संगीत, गति, मुफ्त का सफर... ये सब हमने आपको दिया है इसलिए हमसे कोई प्रश्न नहीं बनता

ये सब अनिकेत के सामने हो रहा है।

खिड़की का शीशा उतारते हुए देख कर ही वो समझ गया था पर कुछ कह नहीं पाया। पर जैसे ही उसने काड्र्स फेकने का यह दुर्भाग्यपूर्ण दृश्य देखा,

लगभग उछलते हुए पीछे से उसने लकी की गर्दन पकड़ ली। उसका हाथ लकी की गर्दन पर कसता जा रहा था पर भूल गया कि वे दो थे। मेजर ने गाड़ी रोक दी। अपना जूता निकाला और उससे, अनिकेत के सर पर मारने लगा। दोनों ने उसे इस तरह खींच लिया था कि अनिकेत का पैर पिछली सीट और सर हैंड ब्रेक के पास था। मेजर अनिकेत को तब तक जूते से पीटता रहा जब तक कि लकी सँभल नही गया। उन दोनों ने पुनः अनिकेत को पिछली सीट पर बिठाया पर अब अनिकेत के दोनों पैर मजबूत रस्से से बँधे हुए थे। अनिकेत की खातिर इस सृष्टि की देह पर जो दृश्य बच रहा था वो यह कि अनिकेत का दायाँ हाथ मेजर के हाथ में था और बायाँ लकी के हाथ में। अनिकेत का चेहरा दुःख के चिह्न में बदल चुका था और लकी अफसोस जता रहा था कि अनिकेत को काड्र्स की बात दिल पर नहीं लेनी चाहिए थी।

लकी ने थोड़ा समय लिया और लहजे को नर्म करते हुए कहा : अनिकेत साहब, हम आपके किसी एक हाथ का अँगूठा तोड़नेवाले हैं। यह सुनना था कि अनिकेत ने पूरे जोर से अपना हाथ छुड़ाना चाहा। पर उन दोनों की पकड़ मजबूत थी। इतने कम समय में यह सब हो रहा था फिर भी अनिकेत ने सारी कोशिश कर ली : नाकाम जोर आजमाइश, सब कुछ न्योछावर कर देने की विनती। उसे लग रहा था कि शोर उसे बचा सकता है। पर लकी ऐंड कंपनी भी लामकसद नहीं थी :

मेरी बात सुनो, अनिकेत। प्लीज। शांत बैठिए वरना हम आपके दोनो हाथ तोड़ देंगे। अनिकेत पर शायद लकी की बात का असर हुआ या क्या हुआ कि वो स्थिर हो गया। उसके शरीर का नस नस किसी रस्सी की तरह तन चुका था और समय किसी अकुशल नट की तरह उस पर खड़ा था। अंग टूटने के अनुभव से वह सर्वथा अनजान था। लकी और मेजर आपसी बहस में उलझे थे कि कौन से अँगूठे पर जोर लगाया जाए। मेजर ने कहा कि आज उसका मंगल वार व्रत है। यह सुनना भर था कि लकी ने अनिकेत दीक्षित के बाएँ हाथ का अँगूठा मोड़ कर तोड़ दिया। फिर तो जो हुआ वो यह कि लगा, उसकी चीख से कार की छत फट जाएगी। उन दोनों ने अनिकेत का हाथ छोड़ दिया था और वो बीच की जगह में, बेहोश, गिरा हुआ था।

बाँस की खपच्चियाँ और क्रेप बैंडेज से अनिकेत का अँगूठा बाँधने के बाद लकी ने उसके सर पर धार फोड़ कर पानी गिराया। रोशनी इतनी नहीं थी कि कूल्हे की कोई नीली नस ढूँढ़ कर इंजेक्शन लगाया जाए इसलिए लकी ने न्यूरोवियान ५०० एम.जी. से भरा पूरा एक इंजेक्शन अनिकेत की दाहिनीं बाँह में उड़ेल दिया।

आखिरशः अनिकेत को होश आया। दर्द इतना था कि हथेली से कंधे तक की सारे नसें फटी जा रही थीं पर उसकी कराह दर्द और अपमान दोनों के लि ए थी। लकी ने अपने तईं अनिकेत का इलाज किया था। हालाँकि दाहिनी बाँह की सूजन बाईं के मुकाबिल कम थी फिर भी अनिकेत दाहिनी बाँह तक उठा नहीं पा रहा था। दाहिनी बाँह के खयाल से यह अफसोस उसे उठा, कि काश, लकी के बजाय मेजर की गर्दन पकड़ी होती। ऐसा करने पर संभावना यह थी कि कार

किसी पेड़ से टकरा गई होती या सड़क के किनारे गड्ढे में चली गई होती। वो पीछे बैठा था जिस कारण उसे चोट आने की संभावना कम कम ही थी।....

Faces Canada Magneteyes Kajal Duo Pack

Faces Canada Magneteyes Kajal Duo Pack

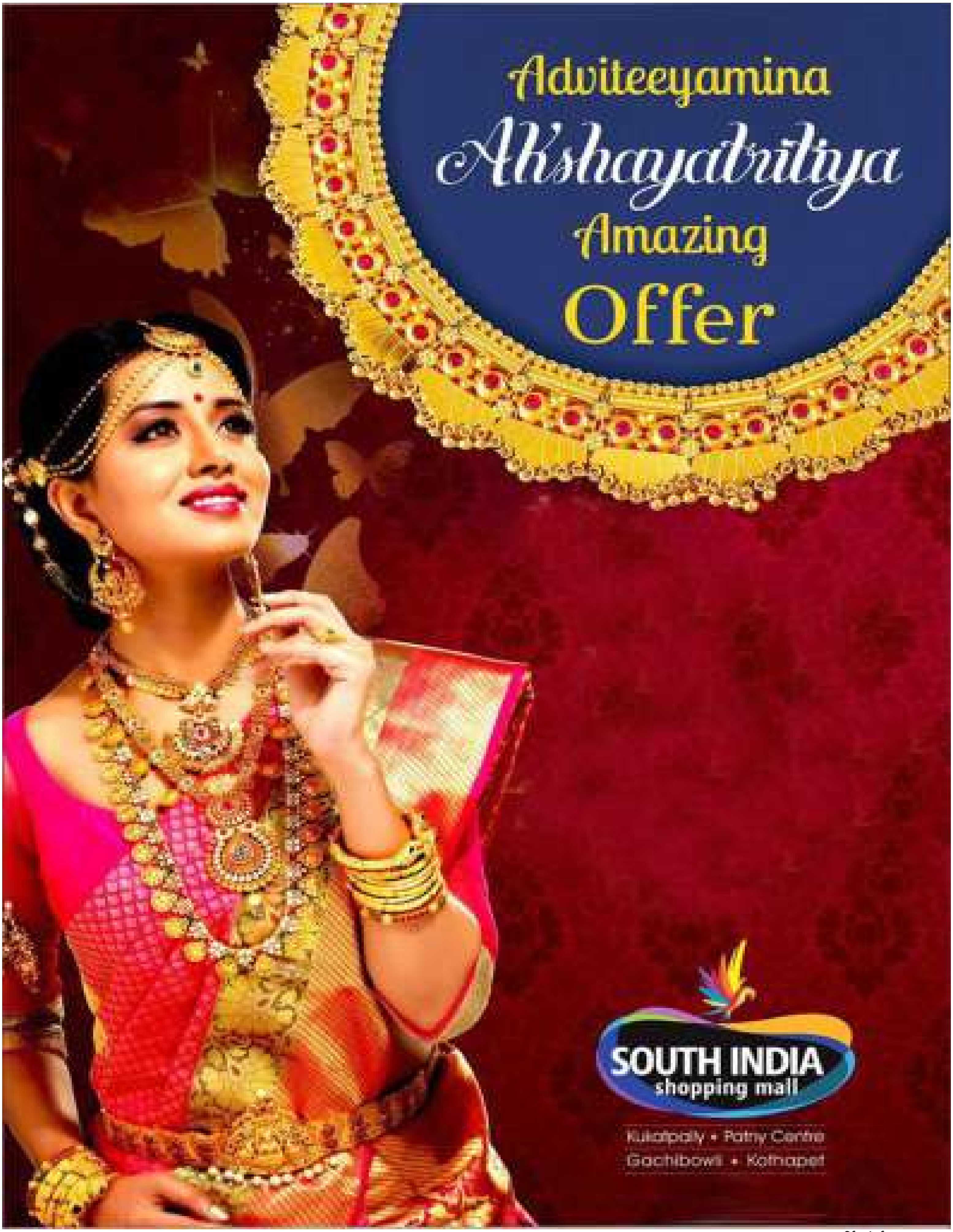

Adviteeyamina
Akshayatritiya
Amazing
Offer
SOUTH INDIA
shopping mall
Kukatpally • Patny Centre
Gachibowli • Kothapet

SCOTTISH CLUB
PACK OF 5 V NECK T-SHIRT
M.R.P. : ₹2,495/-
OFFER PRICE ₹599

10 BEDSHEET SETS
+ 15 PILLOW COVERS
MEGA COMBO
SHOP NOW
₹1,999/-

NIRLON
12 CAVITY
NON- STICK APPAM PATRA
WITH LONG HANDLE & LID
MRP ₹999/-
SHOP NOW
₹399/-

Easy Go Stylish
LEATHERITE TROLLY BAG
SHOP NOW
₹1,499/-

खेत-खलियान

ककड़ी की खेती

ककड़ी की खेती से होगा डबल मुनाफा, बस रखना होगा इन बातों का ध्यान

ऍर्पि इेद्ल्ू प्रकाशित - २० व्ह २०२२ ट्रैक्टर जंक्शन द्वारा

साझा करना साझा करना

ककड़ी की खेती से होगा डबल मुनाफा, बस रखना होगा इन बातों का ध्यान

जानें ककड़ी की खेती से संबंधित संपूर्ण जानकारी

ककड़ी एक कद्दू वर्गीय फसल हैं, जो खीरे के बाद दूसरे नंबर पर सबसे अधिक लोकप्रिय हैं। भारत में इसकी खेती किसान नगदी फसल के रूप में करते हैं। इसकी खेती कम लागत में अच्छा मुनाफा भी दे सकता है। भारत में लगभग सभी क्षेत्रों में इसकी खेती की जाती है। यह भारतीय मूल की फसल है, जिसे जायद की फसल के साथ उगाया जाता है। इसके फल एक फीट तक लम्बे होते हैं। ककड़ी को मुख्य रूप से सलाद और सब्जी के लिए इस्तेमाल किया जाता है। गर्मियों के मौसम में ककड़ी का सेवन अधिक मात्रा में किया जाता है। जैसा की हम सभी जानते हैं कि गर्मियों का मौसम अभी चरम पर पहुंच रहा है। ऐसे में बाजार में इसकी मांग भी बढ़ती जा रही है। किसान भाई इसकी खेती कर अच्छी कमाई भी करते हैं। यदि वैज्ञानिक विधि से आप इसकी खेती करें तो इसकी खेती से मुनाफा डबल भी हो सकता है। यदि आप भी ककड़ी की खेती करने का मन बना रहे हैं, तो ट्रैक्टर जंक्शन की आज की पोस्ट में ककड़ी की खेती कैसे करें तथा ककड़ी की खेती का समय, पैदावार के बारे में विस्तृत जानकारी दी जा रही हैं, जिसके माध्यम से आप इसकी अच्छी खेती कर इस मौसम में भी अपने खेत से एक अच्छी आमदनी कर पाएंगे।

जॉन डियर ५३१०

जॉन डियर ५३१०

इंजन की शक्ति

५५ एच.पी

अधिकतम टौर्क

उपलब्ध नहीं

इऊध

ककड़ी के पौधे लता के रूप में फैलकर विकास करते है । भारत में ककड़ी की खेती लगभग सभी जगहों पर की जाती है । किसान इसकी खेती कर अच्छी कमाई भी करते है। सामान्य तौर पर ककड़ी की खेती किसी भी उपजाऊ मिट्टी में की जा सकती है। सामान्य बारिश के मौसम में इसके पौधे ठीक से विकास करते है । किन्तु गर्मियों का मौसम पैदावार के लिए सबसे उपयुक्त माना जाता है। ठंड जलवायु फसल के लिए अच्छी नहीं होती है। बगीचों के लिये भी यह फसल उपयोगी है जोकि आसानी से बुआई की जा सकती है।

४६.७ एच.पी

गियर बॉक्स

९ फॉरवर्ड ३ रिवर्स

एक्स-शोरूम कीमत

☐११.१५-१२.८४ लाखङ

ट्रैक्टर की प्राइस चेक करें
ॅल्ब ळे् ऊॅंदूदे

ककड़ी की खेती कैसे करें (र्ख्ि व व्यूर ग्रै र्वेह) ?

ककड़ी वैज्ञानिक नाम कुकुमिस मेलो वैराइटी यूटिलिसिमय हैं। यह मूल रूप से भारत की कद्दू वर्गीय जायद की एक प्रमुख फसल हैं। इसको संस्कृत में कर्कटी तथा मारवाडी भाषा में वालम काकरी कहा जाता है। यह कुकुरबिटेसी वंश के अंतर्गत आती है। इसकी खेती का तरीका बिलकुल तोरई के समान हैं, केवल उसके बोने के समय में अंतर हैं। जहाँ शीत ऋतु अधिक कड़ी नहीं होती, वहां अक्टूबर के मध्य में इसके बीज बोए जा सकते हैं, नहीं तो इसे जनवरी में बोना चाहिए। ऐसे स्थानों जहां सर्दी अधिक पड़ती हैं, वहां इसे फरवरी और मार्च के महीनों में लगाना चाहिए। इसकी फसल बलुई दुमट भूमियों से अच्छी होती है। इस फसल की सिंचाई सप्ताह में दो बार करनी चाहिए। ककड़ी में सबसे अच्छी सुगंध गरम शुष्क जलवायु में आती है। इसमें दो मुख्य जातियाँ होती हैं- एक में हलके हरे रंग के फल होते हैं तथा दूसरी में गहरे हरे रंग के। इनमें पहली को ही लोग पसंद करते हैं। ग्राहकों की पसंद के अनुसार फलों की तुड़ाई कच्ची अवस्था में करनी चाहिए। इसकी माध्य उपज लगभग २०० क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती हैं।

उपयुक्त जलवायु

ककड़ी की खेती (एल्म्ल्स्ी ईस्गहु) के लिए गर्म और शुष्क जलवायु सबसे बेहतर हैं। बारिश के मौसम में इसके पौधे ठीक से विकास करते हैं, किन्तु गर्मियों का मौसम पैदावार के लिए सबसे उपयुक्त माना जाता हैं। ठंडी जलवायु फसल के लिए अच्छी नहीं होती हैं। क्योंकि यह मुख्यतः गर्मी की फसल हैं, इसके पौधे पूर्ण रूप से २५-३५ डिग्री सेल्सियस के बीच ही विकसित हो सकते हैं। इसके साथ ही बीजों का जमाव लगभग २० डिग्री सेल्सियस से कम के तापमान पर संभव नहीं हैं। लेकिन अधिक तापमान इसके लिए अच्छा नहीं होता हैं।

पुराने ट्रैक्टर पर लोन प्राप्त करें

अपना नाम दर्ज करें
मोबाइल नंबर दर्ज करें
I
अपना स्थान चुनें
प्रस्ताव देखें

खेती के लिए भूमि

सामान्य तौर पर ककड़ी की खेती भारत के सभी क्षेत्रों में सफलता पूर्वक की जाती हैं, तो जाहिर सी बात हैं। इसकी खेती किसी भी उपजाऊ प्रकार की मिट्टी में आसानी से की जा सकती हैं। किन्तु इसकी अच्छी पैदावार के लिए कार्बनिक पदार्थो से युक्त बलुई दोमट मिट्टी को काफी बेहतर माना गया हैं। इसकी खेती में भूमि जल निकासी वाली होनी चाहिए, जल भराव वाली भूमि में ककड़ी की खेती करनें से बचे। ककड़ी की खेती में सामान्य पी.एच ६.५ से ७.५ मान वाली मिट्टी की आवश्यकता होती हैं।

खेत की तैयारी

ककड़ी की अधिक मात्रा में पैदावार प्राप्त करने के लिए इसके खेत को अच्छी तरह से तैयार करना होता है। इसके खेत को अच्छे से तैयार करने के लिए शुरुआत में खेत में मौजूद सभी तरह के घास फूस को नष्ट कर खेत की मिट्टी पलटने वाले हलों से जुताई करें। जुताई के बाद खेत में पानी चलाकर उसका पलेव कर दें। पलेव करने के तीन से चार दिन बाद जब सतह की मिट्टी हल्की सूखने लगे तब खेत में रोटावेटर चलाकर खेत की अच्छे से जुताई कर मिट्टी भुरभुरी बना लें। ककड़ी की बीजों की बुवाई समतल भूमि और मेड़ बनाकर की जाती हैं। इसकी बुवाई कार्य से पहले तैयार खेत में नाली बनानी चाहिए और मिट्टी में जब नमी हो तो बुवाई कार्य शुरू कर देना चाहिए। नमी वाली मिट्टी में ही ककड़ी के बीजों का अंकुरण और विकास अच्छा हो सकता हैं।

उन्नत किस्में

ककड़ी कद्दू वर्गीय व्यापारिक नकदी फसल है। ककड़ी की खेती मुख्यतः बाड़ी के रूप में किया जाता हैं। इसकी खेती पारंपरिक फसल की खेती की भाँति नहीं हैं, इसकी खेती किसान भाई गर्मी के मौसम में खेत से कुछ नगदी कमाने के लिए कर लेते हैं। इस वजह से इसकी बहुत कम उन्नत किस्में विकसित हुई हैं। लेकिन इसकी कुछ संकर किस्म हैं, जिन्हे किसान भाई अधिक पैदावार के लिए उगाते हैं।

संकर किस्में

प्रिया, हाइब्रिड- १, पंत संकर खीरा- १ और हाइब्रिड- २ आदि प्रमुख हैं। इसके अलावा कुछ अन्य किस्म जैसे - जैनपुरी ककड़ी, पंजाब स्पेशल, दुर्गापुरी ककड़ी, लखनऊ अर्ली और अर्का शीतल आदि ककड़ी

की कुछ प्रजातियां हैं। जिनका उपयोग किसान भाई इसकी खेती के लिए कर सकतें हैं।

बीज की मात्रा एवं बुवाई विधि

ककड़ी के बीजों की रोपाई बीज और पौध दोनों ही तरीको से की जाती हैं। बीज के द्वारा रोपाई करने के लिए एक हेक्टेयर के खेत में तकरीबन २ से ३ किलोग्राम बीज पर्याप्त होते हैं। इसके बीजों की खेत में बुवाई से पहले मिट्टी से होने वाली बीमारियों से बचाने के लिए बैनलेट या बविस्टिन २.५ ग्राम से प्रति किलो बीजों का उपचार करें। ककड़ी के खेत की रोपाई के लिए पौधों को २० से २५ दिन पूर्व नर्सरी में तैयार कर लेना होता है। इसके अलावा यदि आप चाहे तो इन पौधों को किसी रजिस्टर्ड नर्सरी से भी खरीद सकते हैं। ककड़ी की फसल से उत्तम उत्पादन के लिए कतार से कतार १.५ से २.० मीटर के अन्तर पर ३० सेंटीमीटर चौड़ी नालियाँ बना लेते हैं। नाली के दोनों किनारों (मेड़ों) पर ३० से ४५ सेंटीमीटर की दूरी पर बीज की बुआई करते हैंद्य एक जगह पर २ बीज की बुआई करते हैंद्य बीज जमने के बाद एक स्वस्थ पौधा छोड़कर दूसरा पौधा निकाल देते हैं।

खाद एवं उर्वरक की मात्रा

ककड़ी के बीज बोने से एक महीने पहले खेत को तैयार करते समय कम्पोस्ट या गोबर की सड़ी खाद २०० से २५० क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से ककड़ी की खेती से अच्छी उपज के लिए मिट्टी में अच्छी तरह मिला देते हैं। इसके साथ ही रासायनिक खाद के रूप में ८० किलोग्राम नाइट्रोजन, ६० किलोग्राम फास्फोरस तथा ६० किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से उपयोग करें। फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा और एक तिहाई नाइट्रोजन की मात्रा आपस में मिला कर बोने वाली नालियों के स्थान पर डाल कर मिट्टी में मिला दें तथा मेंड़ बनाएं। शेष नाइट्रोजन दो बराबर भागों में बाँटकर बुआई के लगभग २५ से ३० दिन बाद नालियों में डालें और गुड़ाई करके मिट्टी चढ़ायें तथा दूसरी मात्रा पौधों की बढ़वार के समय ३५ से ४० दिन बाद लगभग फूल निकलने के पहले छिड़काव के रूप में दें। यूरिया का तरल छिड़काव (५ ग्राम यूरिया प्रति लीटर पानी) करना लाभदायक हैं।

खेत की सिंचाई

आमतोर पर ककड़ी की फसल को अन्य फसलों की तुलना अधिक सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि इसकी खेती की बुवाई फरवरी से मार्च महीने में की जाती हैं। इन महीनों में खेती की नमी के अनुसार इसकी सिंचाई करना चाहिए। इसकी पहली सिंचाई बुवाई के तुरंत बाद करें। ककड़ी की फसल में ग्रीष्म ऋतु में पांच से सात दिन के अन्तराल पर सिंचाई करते रहना चाहिए और बारिश के मौसम में सिंचाई की आवश्यकता के अनुसार सिंचाई करते रहना चाहिए। साथ ही यह ध्यान रखना चाहिए, कि जब फल की तुड़ाई करनी हो उसके दो दिन पहले सिंचाई अवश्य कर दें। इससे फल चमकीला, चिकना तथा आकर्षक बना रहता हैं।

निराई-गुडाई

ककड़ी के खेत को खरपतावार मुक्त रखने के लिए समय-समय पर निराई गुड़ाई करते रहना चाहिए। ककड़ी के पौधे लताओं के रूप में विकास करते हैं। इसलिए ककड़ी की फसल में खरपतवार नियंत्रण करना बहुत जरूरी होता हैं। इसके पौधे भूमि की सतह पर ही फैलते है, जिससे उन्हें रोग लगने का खतरा बढ़ जाता हैं। खरपतवार नियंत्रण के लिए निराइ-गुड़ाई विधि का इस्तेमाल किया जाता हैं। ककड़ी की फसल में पहली निराइ-गुड़ाई का कार्य पौध रोपाई के २० से २५ दिन बाद करना चाहिए तथा बाद की निराई-गुड़ाई को १५ से २० दिन के अंतराल में करना चाहिए। इसकी फसल को २ से ३ निराई-गुड़ाई की आवश्यकता होती है।

कीट एवं रोकथाम

फल मक्खी : फल मक्खी का प्रकोप ककड़ी की फसल में मुख्य रूप से देखने को मिलता है। यह ककड़ी को अधिक नुकसान पहुंचाती हैं। ककड़ी की फसल में इस मक्खी की रोकथाम हेतु मैलाथियान ५० ई सी या डाईमिथोएट ३० ई सी एक मिलीलीटर प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

लेखकों से निवेदन

मौलिक तथा अप्रकाशित-अप्रसारित रचनाएँ ही भेजें।

रचना फुलस्केप कागज पर साफ लिखी हुई अथवा शुद्ध टंकित की हुई मूल प्रति भेजें।

ज्यादा लंबी रचना न भेजें।

सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, साहित्यक, स्वास्थ्य, बैंक व व्यवसायिक से संबंधित रचनाएँ आप भेज सकते हैं।

प्रत्येक रचना पर शीर्षक, लेखक का नाम, पता एवं दूरभाष संख्या अवश्य लिखें ; साथ ही लेखक परिचय एवं फोटो भी भेजें।

आप अपनी रचना ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं।

रचना यदि डाक द्वारा भेज रहे हैं तो डाक टिकट लगा लिफाफा साथ होने पर ही अस्वीकृत रचनाएँ वापस भेजी जा सकती हैं। अतः रचना की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें। स्वीकृत व प्रकाशित रचना का ही उचित भुगतान किया जायेगा।

किसी विशेष अवसर पर आधारित आलेख को कृपया उस अवसर से कम-से-कम एक या दो माह पूर्व भेजें, ताकि समय रहते उसे प्रकाशन-योजना में शामिल किया जा सके।

रचना भेजने के बाद कृपया दूरभाष द्वारा जानकारी न लें। रचनाओं का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय होगा।

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. ,
Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
mangsom@rediffmail.com

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका
स्वर्णिम मुंबई
SM
RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

ADVERTISEMENT TARRIF

No.	Page	Colour	Rate
1.	Last Cover full page	Colour	50,000/-
2.	Back inside full page	Colour	40,000/-
3.	Inside full page	Colour	25,000/-
4.	Inside Half page	Colour	15,000/-
5.	Inside Quater page	Colour	07,000/-
6.	Complimenty Adv.	Colour	03,000/-
7.	Bottam Patti	Colour	2500/-

6 Months Adv. 20% Discount
1 Year Adv. 50% Discount

Mechanical Data: **Size of page:** **290mm x 230mm**

PLEASE SEND YOUR RELEASE ORDER ALONG WITH ART WORK IN PDF & CDR FORMAT

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532